आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 जनवरी, 2021
डाक प्रेषण तिथि 10 जनवरी, 2021

वर्ष : 79 अंक : 01
पौष कृष्णा, 2077 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

जनवरी, 2021

आचार्य हस्ती
दीक्षा-शती वर्ष

75th
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

Website : www.jinwani.in

मनुष्य को मधुमक्खी की तरह बनना चाहिए न कि
मल ग्रहण करने वाली मक्खी के समान।

– आचार्य श्री हस्ती

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा जय गुरु मान

श्रद्धेय (स्व.) श्री राजेन्द्र कुमार जी पटवा

24 जून 1950 - 08 दिसम्बर 2020

आपके आचार - विचार व शिक्षाएँ, हमें सदैव प्रेरित करते रहेंगे...

पटवा परिवार

अंक सौजन्य

धर्म वहाँ टिकता है, जहाँ मन में सरलता हो, शांति हो।
मनुष्य का अहं उसकी सबसे बड़ी विकृति है, जो सारे विकारों को जन्म देती है।
– आचार्य श्री हीरा

संघ सेवी, सन्त-सतीसेवी, तपसाधिका गुरुभक्त
श्राविकारत्न श्रीमती मैनादेवी डूंगरवाल

जन्म - 30.12.1953 स्वर्गवास - 04.11.2020

परिवार को धर्म संस्कार प्रदात्री श्राविकारत्न को
शत शत नमन

श्रद्धावनत

पति – उम्मेदराज डूंगरवाल
पुत्र-पुत्रवधू – एवन्त कुमार – मीनू, राजेश कुमार – अनिता
पौत्र-पौत्री – यश, पुलकित, कृतिका, तनिशा, भव्या जैन
थांवला, नागौर (राजस्थान)

'जिनवाणी भवन' पांच्यावाला, सिरसी रोड, जयपुर (राज.)

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी-मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 सह-सम्पादक
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 सम्पादकीय कार्यालय
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

धम्मंऽपि हु सद्दहंतया,
दुल्लहया काएण फासया।
इह काम-गुणेहिं मुच्छिया,
समयं गोयम! मा पमायए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.20

धार्मिक श्रद्धा होने पर भी,
आचरण धर्म का अतिदुष्कर।
हो जाते कामगुणमूर्च्छित कई,
गौतम! प्रमाद न क्षण का कर।।

जनवरी, 2021
वीर निर्वाण सम्वत्, 2547
पौष कृष्णा, 2077

वर्ष 79 अंक 1

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि ``JINWANI'' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	जयतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल	–डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	–डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	जीवन-निर्माण के सूत्र	–आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	धर्म-संघ से जुड़ें और जोड़ें भी	–आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	ऋजुता के प्रतिमान उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी	–मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी	15
	आत्म विकास का साधन है पुण्य	–तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी	17
दीक्षा-शताब्दी-	व्यक्तित्व विकास एवं समस्याओं के समाधान में स्वाध्याय तथा सामायिक की भूमिका	–पूर्वन्यायाधिपति श्री जसराज चौपड़ा	23
चिन्तन-	साधना में तनाव बाधक	–डॉ. चंचलमल चोरड़िया	29
English-section	**Jain History, Philosophy, Beliefs and Practice**	–*Dr. H. Kushal Chand*	35
नारी-स्तम्भ-	एक आदर्श माँ	–डॉ. मंजुला बम्ब	40
स्वास्थ्य-विज्ञान-	रेलम पेल.... कोरोना का खेल!!	–श्री निपुण डागा	44
श्रद्धार्पण-	बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी श्री आर.सी.बाफना	–श्री प्रकाशचन्द जैन (प्राचार्य)	48
	संघसेवी, समाजसेवी श्री रतनलाल सी. बाफना	–डॉ. दिलीप धींग	50
	जैनविद्या एवं भारतीय दर्शन के तलस्पर्शी मनीषी प्रो. सागरमल जैन	–प्रो. प्रेमसुमन जैन	53
	मूर्धन्यमनीषी एवं आत्मसाधक प्रो. सागरमलजी	–प्रो. धर्मचन्द जैन	55
जीवन-व्यवहार-	व्यावहारिक जीवन के नीत वाक्य	–श्री पी. शिखरमल सुराणा	58
तत्त्व चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें (9)	–श्री धर्मचन्द जैन	59
युवा-स्तम्भ-	आग्रहवृत्ति से बचें	–श्री वीरेन्द्र कांकरिया	62
	विषम परिस्थिति में अपनाने योग्य सूत्र	–डॉ. समणी शशिप्रज्ञा	62
गीत/कविता-	ऐसे करें नूतन वर्ष का अभिनन्दन	–श्रीमती अंशु संजय सुराणा	14
	तुम चिन्तन करो और मनन भी करो	–श्री मोहन कोठारी 'विनर'	14
	साता का सुख	–श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	16
	जैन जीवनशैली : एक कला	–श्रीमती अभिलाषा हीरावत	39
विचार/चिन्तन-	**Do all the Good**	–*Sh. Bhavya Dinesh Jain*	61
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	–श्री गौतमचन्द जैन	63
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	65
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	87
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	–विभिन्न लेखक	91

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 7
ISSN 2249-2011

सम्पादकीय

जयतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल का 75 वर्ष की हीरक यात्रा पूर्ण करने पर हार्दिक अभिनन्दन। जैनधर्म-दर्शन, इतिहास एवं संस्कृति से सम्बद्ध साहित्य के प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में यह एक प्राचीन संस्था है। इसकी स्थापना पूज्य आचार्यप्रवर श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. के स्वर्गारोहण की शताब्दी के अवसर पर ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी विक्रम सम्वत् 2002 (ईस्वी सन् 1945) में हुई थी।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. विक्रम सम्वत् 2001 का जयपुर चातुर्मास पूर्णकर ब्यावर, जोधपुर होते हुए भोपालगढ़ पधारे थे, तब इस संस्था की स्थापना हेतु घोषणा हुई तथा इसका प्रारम्भिक कार्यालय जोधपुर में रहा और अगस्त 1954 में राजस्थान की राजधानी जयपुर में इसका कार्यालय स्थानान्तरित हो गया। तब से जयपुर के श्रावकों की देखरेख एवं पदाधिकारियों के नेतृत्व में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल निरन्तर गतिशील है। यह रत्नसंघ की स्थापना के पूर्व की संस्था है।

आचार्यहस्ती के द्वारा इसका सम्प्रदाय निरपेक्ष नामकरण **'सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल'** किया गया था। जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका जनवरी, 1943 विक्रम सम्वत् 1999 के पौष माह की पूर्णिमा को श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़ से प्रारम्भ हुई थी, जो सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की स्थापना के पश्चात् इस संस्था के अन्तर्गत प्रकाशित होने लगी। आज भी यह मासिक पत्रिका जयपुर से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में नियमित प्रकाशित की जा रही है। इसकी सुदीर्घ यात्रा में अनेक उपयोगी विशेषाङ्क प्रकाशित हुए हैं तथा डॉ. नरेन्द्रजी भानावत जैसे समर्थ सम्पादकों से यह पत्रिका आगे बढ़ती रही है। यह भी उल्लेखनीय है कि अध्यात्मयोगी आचार्यश्री हस्ती के पूर्व रत्नसंघ में किसी संस्था की स्थापना नहीं हुई थी। पूज्य आचार्यश्री हस्ती की दूरदृष्टि एवं युगमनीषा का ही सुफल है कि उनके जीवनकाल में ज्ञानाराधन, साधना-आराधना, संघ उन्नयन एवं समाजसेवा की दृष्टि से लगभग 36 संस्थाएँ विभिन्न नगरों में स्थापित हुईं। उनमें सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल प्राचीन एवं विशिष्ट है तथा यह व्यापक दृष्टिकोण को लेकर चल रहा है।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान आदि संस्थाएँ सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अन्तर्गत स्थापित हुईं जो आज स्वतन्त्र रूप से कार्य कर रही हैं। सम्प्रति 'श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर', गजेन्द्रनिधि ट्रस्ट के अन्तर्गत सञ्चालित हो रहा है तथा श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान नये नामकरण **'आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान'** के रूप में जयपुर में स्वतन्त्र रूप से गजेन्द्रनिधि के अन्तर्गत कार्य कर रहा है।

स्वाध्याय की प्रवृत्ति का शुभारम्भ भी विक्रम सम्वत् 2002 में हो गया था, अतः स्वाध्याय संघ जोधपुर द्वारा भी सम्प्रति अपना हीरक वर्ष मनाया जा रहा है। उसका भी अभिनन्दन है। स्वाध्याय संघ वह संस्था है जिससे देश के अनेक स्वाध्यायी जुड़े एवं अनेक नए तैयार हुए। इनके माध्यम से पर्युषण पर्व के आठ दिनों में साधु-साध्वियों के चातुर्मास से वञ्चित क्षेत्रों में स्वाध्यायी बन्धु-भगिनी निःशुल्क सेवा प्रदान करते हैं तथा स्वयं की धर्माराधना करते हैं। स्वाध्याय संघ, जोधपुर के पश्चात् मध्यप्रदेश स्वाध्याय संघ, कर्नाटक स्वाध्याय संघ, दक्षिण भारत स्वाध्याय संघ आदि अनेक स्वाध्याय संघों की स्थापना हुई, किन्तु स्वाध्याय संघ, जोधपुर की विशिष्टता आज भी कायम है। महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ भी इसी की एक शाखा के रूप में कार्य

करता है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की यह एक विशेष गतिविधि है जो संघ को ज्ञान एवं क्रिया के संगम के रूप में अनेक स्वाध्यायियों को संजोए हुए है।

श्रावक संघ के कोई भी कार्य हों, पहले व्यापक स्तर पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अन्तर्गत ही सम्पन्न होते थे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा शताब्दी एवं पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती के कार्यक्रम भी सन् 1971 में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अन्तर्गत सम्पन्न हुए।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को नये दायित्व भी मिलते रहे हैं। गत दशक में इस संस्थान द्वारा **'वीतराग ध्यान-साधना केन्द्र'** का सञ्चालन हुआ, तो अखिल भारतीय जैन विद्वत् संगोष्ठियों का सञ्चालन भी दश वर्षों से इस संस्था के द्वारा किया जा रहा है। मानसरोवर-जयपुर में महिला (बालिका) छात्रावास के रूप में **'श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान'** का सञ्चालन भी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा किया जा रहा है। अनेक भवनों एवं स्थानकों के निर्माण में भी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की भूमिका रही है। यह संस्था धर्महित एवं समाजहित में कार्यरत है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की औपचारिक रूप से स्थापना ब्यावर में विक्रम सम्वत् 2032 (सन् 1975) में हुई, किन्तु विक्रम सम्वत् 2053 में पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के अजमेर चातुर्मास एवं संघ के पूर्व अध्यक्ष माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत के कार्यकाल में रत्नसंघ का विस्तृत संविधान निर्मित हुआ, उस समय सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को संघ की प्रमुख संस्था के रूप में मान्य किया गया तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल का भी संविधान निर्मित हुआ। इसके पूर्व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल ही संघ की एकमात्र संस्था थी, जिसके माध्यम से स्वाध्याय शिविरों एवं विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होता था एवं सत्साहित्य का प्रकाशन होता था। आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान, विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान, युवाप्रतिभा-शोध-साधना-सेवा-सम्मान, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा ही प्रारम्भ किए गए। निर्णायक समिति का नेतृत्व (स्व.) प्रो. कल्याणमलजी लोढ़ा ने किया।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के विकास में न्यायमूर्ति स्व. श्री इन्द्रनाथजी मोदी, स्व. श्री सिरहमलजी बम्ब, न्यायमूर्ति स्व. श्री सोहननाथजी मोदी, स्व. श्री श्रीचन्दजी गोलेच्छा, स्व. श्री उमरावमलजी ढढ्ढा, श्री नथमलजी हीरावत, पद्म विभूषण श्री डी. आर. मेहता, स्व. श्री सम्पतसिंहजी भाण्डावत, श्री मोफतराजजी मुणोत, स्व. श्री सिरेहमलजी नवलखा, श्री कनकमलजी चोरड़िया, स्व. श्री पूनमचन्दजी बड़ेर, स्व. श्री इन्दरचन्दजी हीरावत, स्व. श्री चन्द्रराजजी सिंघवी, स्व. श्री टीकमचन्दजी हीरावत, स्व. श्री मोतीचन्दजी कर्णावट, स्व. श्री सज्जननाथजी मोदी, स्व. श्री चैतन्यमलजी ढढ्ढा, श्री चेतनप्रकाशजी डूँगरवाल, श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, श्री विमलचन्दजी डागा, श्री ईश्वरलालजी ललवाणी, स्व. श्री पदमचन्दजी कोठारी, स्व. श्री प्रकाशचन्दजी डागा, श्रीमती सुशीलाजी बोहरा, श्री प्रकाशचन्दजी कोठारी, श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, श्री आनन्दजी चौपड़ा, श्री पदमचन्दजी कोठारी-अहमदाबाद, श्री गौतमराजजी सुराणा, श्री नवरत्नजी भंसाली, श्री सम्पतराजजी चौधरी, श्री कैलाशमलजी दूगड़, श्री पारसचन्दजी हीरावत, श्री प्रमोदजी महनोत, श्री प्रेमचन्दजी जैन, श्री विरदराजजी सुराणा, श्री विनयचन्दजी डागा आदि की सेवाएँ उल्लेखनीय रहीं। सम्प्रति श्री चंचलमलजी बच्छावत की अध्यक्षता, श्री विनयचन्दजी डागा एवं डॉ. धर्मचन्दजी जैन की कार्याध्यक्षता तथा श्री अशोक कुमारजी सेठ के मन्त्रित्व में मण्डल अपने कार्य में अग्रसर है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा आगम, थोकड़े, प्रवचन, इतिहास, काव्य, कथा, स्तवन आदि से सम्बद्ध सत्साहित्य प्रकाशित किया जाता है। इतिहास ग्रन्थों का प्रकाशन करने के लिए यद्यपि प्रारम्भ में 'जैन इतिहास समिति' का गठन हुआ, किन्तु उसकी समाप्ति के

पश्चात् इतिहास से सम्बद्ध साहित्य का प्रकाशन भी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से होने लगा है। जब सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल अस्तित्व में नहीं आया था तब सन् 1939 में दशवैकालिकसूत्र (अवचूरि एवं भाषा टीका सहित), सन् 1942 में नन्दीसूत्र सातारा से प्रकाशित हुए थे। प्रश्नव्याकरणसूत्र का प्रकाशन पाली-मारवाड़ से हुआ था, किन्तु बृहत्कल्पसूत्र का अज्ञात संस्कृत टीका के साथ सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के जोधपुर कार्यालय से प्रकाशन हुआ था।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा सम्प्रति सत्साहित्य के प्रकाशन का कार्य प्रगतिपथ पर है एवं मण्डल से अब तक 231 प्रकाशन हो चुके हैं। आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी के अवसर पर मण्डल द्वारा 'आचार्य हस्ती-स्मृति-व्याख्यान माला' का प्रतिमाह आयोजन किया रहा है, जो कोरोना के कारण ऑनलाइन वेबिनार के रूप में सम्पन्न हो रहा है।

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार में स्व. श्री विजयमलजी कुम्भट, स्व. श्री माधोमलजी लोढ़ा, स्व. श्री देवराजजी भण्डारी का विशेष योगदान रहा। व्यवस्थापक के रूप में स्व. श्री कुन्दनमलजी नाहर, स्व. श्री प्रसन्नचन्दजी लोढ़ा, स्व. श्री प्रदीपजी बंसल आदि की सेवाएँ भी सराहनीय रहीं।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के प्रमुख प्रकाशन उल्लेखनीय हैं, यथा-

आगम-साहित्य-आवश्यकसूत्र, आचाराङ्ग-सूत्र, अंतगडदसासूत्र, उपासकदशाङ्गसूत्र, दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, नन्दीसूत्र, आवश्यकमलगिरि-वृत्ति, आचाराङ्गसूत्र की अनुप्रेक्षा, शास्त्रस्वाध्याय-माला, प्रतिक्रमणसूत्र, प्रश्नव्याकरणसूत्र, सुखविपाक-सूत्र, बृहत्कल्पसूत्र आदि।

प्रवचन-साहित्य-आहारसंयम और रात्रिभोजन-त्याग, आध्यात्मिक आलोक, गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-1 से 7, प्रार्थना प्रवचन, हीरा प्रवचन पीयूष भाग-1 से 5, मान व्याख्याना माला, जीवन अमृत की छाँव, पथ की रुकावटें, पर्युषण पर्वाराधन, सामायिक-साधना और स्वाध्याय, व्रत प्रवचन संग्रह आदि।

इतिहास-साहित्य-जैनधर्म का मौलिक इतिहास भाग-1 से 4, जैन इतिहास के प्रसङ्ग भाग-1 से 40, जैनधर्म का मौलिक इतिहास संक्षिप्त भाग-1 से 4 (हिन्दी एवं गुजराती में अलग-अलग), Jain Legend Vol. 1-4, रत्नसंघ के धर्माचार्य, पट्टावली प्रबन्ध संग्रह, ऐतिहासिक काल के तीन तीर्थङ्कर आदि।

स्तोक एवं कर्म साहित्य-गमा का थोकड़ा, जीवपज्जवा, कायस्थिति, जैनागम के स्तोकरत्न, लघुदण्डक, पच्चीबोल, कर्मग्रन्थ भाग-1 एवं 2, जिज्ञासा-समाधान, नवतत्त्व, समिति-गुप्ति, गति-आगति, देशबन्ध सर्वबन्ध, चौबीस ठाणा, अजीव पर्याय, गुणस्थान स्वरूप, 67 बोल, 47 बोल आदि।

स्तोत्र-स्तवन-भजन-निर्ग्रन्थ भजनावली, स्वाध्याय स्तवन माला, भक्तामर स्तोत्र, साधना संग्रह आदि।

काव्य-मुक्ति का राही, दुर्गादास पदावली, गौतम से प्रभु फरमाते हैं आदि।

विशिष्ट साहित्य-लोकाकाश : एक वैज्ञानिक अनुशीलन, सामायिक-दर्शन, अध्यात्म की ओर, चिन्तन के आयाम भाग 1-2, जैन प्रमाणशास्त्र, अहिंसा निउणा दिट्ठा, अचित्त जल का विज्ञान एवं जल, द्रव्यलोकप्रकाश, दुःख रहित सुख।

विचार, सूक्तियाँ-अमृतवाक्, गजेन्द्र सूक्ति सुधा।

कथा एवं चरित साहित्य-कुलक कथाएँ, महामुनि स्थूलभद्र चरित्र, आचार्य श्री हस्ती के विशिष्ट कीर्तिमान, धर्मकथा गीत, भगवान महावीर, दीक्षा कुमारी का प्रवास, गुण सौरभ गणिहीरा, नमो पुरिसवर-गन्धहत्थीणं (संघ से प्रकाशित)।

तात्त्विक-साहित्य-पुण्य-पाप तत्त्व, सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी, श्रावक के बारह व्रत, जीव-अजीव तत्त्व एवं द्रव्य।

जयतु सम्यग्ज्ञानप्रचारकमण्डलम् ■

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 10
ISSN 2249-2011

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

न तस्स दुक्खं विभयंति णाइओ, न मित्तवग्गा, न सुया, न बंधवा। एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं।।-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित उत्तराध्ययनसूत्र भाग-2, 13वाँ अध्ययन, गाथा 23

अर्थ–उस दुःख को न तो जाति के लोग बाँट सकते हैं, और न मित्र, पुत्र या बन्धु ही, जीव स्वयं अकेला ही प्राप्त दुःखों को भोगता है, क्योंकि कर्म, कर्त्ता का ही अनुसरण करते हैं।

विवेचन–उत्तराध्ययनसूत्र के तेरहवें अध्ययन की इस गाथा में कर्मसिद्धान्त का सत्य प्रकट किया गया है कि अपने द्वारा किए गए कर्मों का फल स्वयं को भोगना पड़ता है। दुःख रूप फल को कोई बाँट नहीं सकता। न रिश्तेदार उस दुःख को बाँट पाते हैं, न मित्रजन उस दुःख को कम कर सकते हैं, न पुत्र और न ही पत्नी, न ही माता-पिता आदि अन्य बन्धुजन उस दुःख को बाँट पाते हैं।

यह सत्य चित्तमुनि के द्वारा अपने पूर्व जन्म के भ्राता एवं अभी भोगों में आसक्त ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह कारण-कार्य का सिद्धान्त है कि हर कार्य के पीछे कोई कारण होता है। कुछ कारण हमें दृष्टिगोचर होने से ज्ञात हैं, यथा आग में हाथ रखने पर हाथ जलता है एवं हमें पीड़ा का अनुभव होता है, मिर्च खाने पर जिह्वा जलती है, क्रोध करने पर अशान्ति होती है एवं वातावरण विषम बनता है आदि। किन्तु कई बार हमें कारण-कार्य सिद्धान्त का बोध नहीं होता है, उसकी ओर यह गाथा हमारा ध्यान आकृष्ट कर रही है। हम जिन भावों के साथ कोई कार्य या कर्म करते हैं उनका भी फल हमें भोगना पड़ता है। हम हमारे सुखभोग के लिए हिंसा करते हैं, दूसरे प्राणियों को पीड़ा पहुँचाते हैं, तो उसका परिणाम दुःख रूप में भोगना पड़ता है, उस दुःख रूप फल से हमें कोई बचा नहीं पाता है। इसका तात्पर्य है कि बाहर से सुख रूप प्रतीत होने वाले कुछ कार्यों का फल हमें दुःख रूप में भोगना पड़ता है। यहीं हमें कर्मसिद्धान्त या कारण कार्य सिद्धान्त में भ्रम हो जाता है, क्योंकि उसका दुःख रूप फल तुरन्त भी मिल सकता है एवं कालान्तर में भी प्राप्त हो सकता है। विषाक्त आहार का सेवन करने पर बेचैनी एवं मृत्यु का होना हमारे अनुभव में आता है, किन्तु हमें पहले से ज्ञात नहीं होता कि यह आहार विषाक्त है। इसी प्रकार मीठे लगने वाले कामभोगों का कितना दुःखद फल है यह हमें पहले से ज्ञात नहीं होता। उन्हें भोगते समय हमें उसी प्रकार सुख की प्रतीति होती है, जिस प्रकार विषाक्त भोजन खाते समय भी वह स्वादिष्ट लगता है। यदि हमें यह ज्ञात हो जाए कि यह आहार विषाक्त है, तो हम उसके सेवन का त्याग कर सकते हैं। इसी प्रकार जिन कामभोगों का परिणाम दुःखद है, यह पहले से ज्ञात हो जाए तो उनके प्रति आकर्षण समाप्त हो सकता है।

उत्तराध्ययनसूत्र में कहा गया है-**खाणी अणत्थाण उ कामभोगा** (उत्तराध्ययनसूत्र 14.13) काम-भोग अनर्थ की खान हैं। उनमें क्षणमात्र का सुख प्रतीत होता है, किन्तु दुःख अधिक काल तक भोगना पड़ता है। कामभोग में सुख मानना मिथ्यात्व का सूचक है। यह मिथ्यात्व ही मनुष्य को सही ज्ञान या सत्य से अनभिज्ञ बनाए रखता है। कामभोगों में सुख की प्रतीति तो होती है, किन्तु वह हमारी चेतना को मलिन बनाती है, मूढ़ बनाती है जो दीर्घकाल तक हमें दुःखी बनाए रखती है। यही नहीं कामभोगों की प्रवृत्ति पराधीन बनाती है, अशान्त बनाती है, पूर्ति नहीं होने पर क्रोधित करती है, दूसरों की हिंसा में प्रवृत्त करती है, उन पर शासन कराती है, जिससे चेतना की संवेदनशीलता सुप्त हो जाती है। इस प्रकार यह भोगासक्ति एवं सुखलोलुपता की प्रवृत्ति हमें दुःख की ओर धकेलती है। इसीलिए चित्तमुनि

(शेषांश पृष्ठ 34 पर)

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 11
ISSN 2249-2011

विचार-वारिधि

जीवन-निर्माण के सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- बिना मर्यादित जीवन के मानव को शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। तृष्णा की प्यास अतृप्त ही रहती है, यह बड़वानल की तरह कभी शान्त नहीं हो पाती।
- जो मोह के कारण पाप में फँसे होते हैं उनमें त्याग की बुद्धि ही उत्पन्न नहीं होती।
- संसार की समस्त सम्पदा और भोग के साधन भी मनुष्य की इच्छा पूरी नहीं कर सकते हैं।
- जैसे घृत की आहुति से आग नहीं बुझती, वैसे ही धन की भूख धन से नहीं मिटती है। तन की भूख तो पाव भर अन्न से मिट जाती है, किन्तु मन की भूख असीम है। उसकी दवा त्याग और सन्तोष है, धनप्राप्ति या तृष्णापूर्ति नहीं।
- यदि मनुष्य इच्छा को सीमित कर ले तो संघर्ष के सब कारण स्वत: समाप्त हो जाएँगे, विषमता टल जायेगी, वर्गभेद मिटकर सब ओर शान्ति और आनन्द की लहर फैल कर यह पृथ्वी स्वर्ग के समान बन जाएगी।
- कुसंग में पड़ा तरुण तन बल, ज्ञान और आत्मगुण सभी का नाश करता है।
- उत्तेजक वस्तुओं के भोजन और शृङ्गार प्रधान वातावरण में रहने के कारण बच्चों में काम-वासना शीघ्र जागृत होती है।
- समाज यदि समय रहते बच्चों के सुसंस्कार के लिए तन, मन, धन नहीं लगाएगा तो उसके कटु फल उसे अवश्य भोगने पड़ेंगे।
- चिकित्सक रोग का दुश्मन, पर रोगी का मित्र होता है। यही दृष्टिकोण आत्म-सुधार की दिशा में रखा जाए तो शासन तेजस्वी रह सकता है।
- आज दूसरों को झगड़ते देख मनुष्य उपदेश देता है, किन्तु स्वयं सहनशीलता को जीवन में नहीं अपनाता, संयम और विवेक से काम नहीं लेता।
- साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है, जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।
- जिस साधक में श्रद्धा और धैर्य हो, वह अपने सुपथ से विचलित नहीं होता। संसार की भौतिक सामग्रियाँ उसे आकर्षित नहीं करतीं, बल्कि वे उसकी गुलाम होकर रहती हैं।
- यद्यपि शरीर चलाने के लिए साधक को भी कुछ भौतिक सामग्रियों की आवश्यकता होती है, किन्तु जहाँ साधारण मनुष्य का जीवन उनके हाथ बिका होता है, वहीं साधक की वे दास होती हैं।
- आम के पत्तों का बन्दनवार लगाकर जो आनन्द मानते हैं, वे लोग वृक्षों के अङ्ग-भङ्ग का दु:ख भूल जाते हैं।
- समाज के अधिकांश लोग अनुकरणशील होते हैं। वे अपने से बड़े लोगों की नकल करने में ही गौरव अनुभव करते हैं। इस प्रकार देखा-देखी से समाज में गलतियाँ फैलती रहती हैं।
- आज धर्म और कानून की उपेक्षा कर मनुष्य व्यर्थ की हिंसा बढ़ा रहा है। फलत: देश का पशुधन और शुद्ध भोजन नष्ट होता जा रहा है।
- मनुष्य को मधुमक्खी की तरह बनना चाहिए न कि मल ग्रहण करने वाली मक्खी के समान।
- पुत्र की अपेक्षा पुत्रियों में सुशिक्षा और सुसंस्कार इसलिए आवश्यक हैं कि उन्हें अपरिचित घरों में जाना तथा जीवन पर्यन्त वहीं रहना है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 12
ISSN 2249-2011

प्रवचन

धर्म-संघ से जुड़ें और जोड़ें भी

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा पाली चातुर्मास में 29 सितम्बर, 2019 को संघ के दो दिवसीय कार्यक्रम में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

आज संघ का गुणी अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह तो है ही, संघ की वार्षिक साधारण-सभा भी है, इसलिये कहना होगा आज संघ का दिवस है। कुछ बातें कल आपके समक्ष रखी गई, आज संघ के कार्यक्रम हैं इसलिए कहना होगा, व्यक्ति गुणी तभी बनेगा जबकि वह संघ की रीति-नीति, संघ की पद्धति, संघ की मर्यादा और संघ की समाचारी देखेगा तो देख-देखकर उसके मन में भी कुछ करने की बात आएगी। आपको सामायिक करते आपके बच्चे देखेंगे तो वे भी माला फेरेंगे। करने वालों को देखकर करने की मन में आएगी।

मैं किसी मत-मतान्तर या पन्थ-परम्परा की बात कहने के बजाय इतना ज़रूर कहना चाहूँगा कि आप गुण जहाँ भी देखें, गुणों को ग्रहण करने गुणों को अपनाने में तो कोताही नहीं करें। मैंने सुना है अजमेर की दरगाह शरीफ़ के चारों ओर फ़कीर-मौलवी घर-घर जाकर व्यक्ति-व्यक्ति को जगाते हैं, उठाते हैं और उन्हें मस्ज़िद में आकर नमाज़ पढ़ने की प्रेरणा करते हैं। वे मौलवी आपकी तरह पत्र-फोन या व्हाट्सअप से सूचना नहीं करते, बल्कि घर-घर जाकर सोने वालों को जगाते हैं और जो जगे हुए हैं उन्हें मस्ज़िद में जाकर नमाज़ अदा करने की प्रेरणा करते हैं। उनका यह क्रम नित्य-प्रति चलता है और तब तक चलता है जब तक कि व्यक्ति मस्ज़िद में आकर नमाज़ पढ़ना शुरू नहीं करता। उन फ़कीरों का हर दरवाजे पर प्रयास चलता है। वे एक-दो, चार-पाँच दिन ही नहीं, महीनों-महीनों घूम-घूमकर हर व्यक्ति को मस्ज़िद में लाते हैं। मैं आपसे पूछूँ-आप क्या करते हैं? आपकी स्थिति क्या है? आपकी सोच क्या है? मैं ऐसा तो नहीं कहता कि बच्चों को कहने वाले कोई नहीं हैं, पर इतना ज़रूर कह सकता हूँ कि आज के कई माता-पिता न तो अपने बच्चों को कहते हैं, न उन्हें स्थानक जाने की प्रेरणा करते हैं। सचमुच कइयों को तो समय तक नहीं है। संघ में जब तक घर-घर जाकर कहने वाले नहीं होंगे तब तक ये धर्म-स्थान खाली-खाली नज़र आएँगे, उपस्थिति बढ़ेगी तो कैसे? जब आप में से अधिकांश को समय नहीं, कहते नहीं, तो स्वधर्मी भाई कैसे प्रेरित होंगे?

यहाँ, मुझे माँ याद आती है। एक माँ अपने बेटे को बार-बार कहती है-बोल बेटा-'नमो।' वह एक-दो बार नहीं, कई-कई बार 'नमो' बोल-बोलकर बच्चे को बुलवाती है और तब तक बुलवाती है जब तक कि बच्चा 'नमो' नहीं बोलता। माँ बच्चे को बुलवाने में थकती नहीं-रुकती नहीं। माँ बच्चे को बोलने-बुलवाने में ही नहीं चलने और चलाने में भी इसी तरह मेहनत करती है। वह हाथ पकड़-पकड़ कर, सहारा दे-देकर बच्चे को चलाती है तब कहीं जाकर बच्चा चलना सीखता है।

माँ और बाप में अन्तर है। बाप माँ जितनी मेहनत नहीं करता। बाप थक जाता है, हैरान और परेशान हो जाता है, लेकिन माँ बच्चे को बुलवाती है, चलवाती है, खिलाती है। माँ थकती नहीं। जैसे माँ प्रयास करती है, क्या आपका प्रयास अपने स्वधर्मी भाई-बहिनों के लिए ऐसा होता है?

धर्म-संघ, मातृ-संघ है। आप जब तक माँ बनकर मेहनत नहीं करेंगे, तब तक आपका स्वधर्मी भाई देव-गुरु-धर्म से नहीं जुड़ेगा। आप स्वयं जुड़ें, दूसरों को

जोड़ें। क्यों तो धर्म से जुड़ने वाला गुणी बनेगा। गुणी बनेगा तभी तो सम्मान पाएगा।

आज धर्म संघ में दिनों-दिन कमज़ोरी आ रही है, धर्म करने वाले थक रहे हैं। आप न तो थकें और न ही रुकें। आप धैर्य और गम्भीरता बनाए रखकर अपने स्वधर्मी भाइयों को धर्म-संघ से जोड़ने का प्रयास करेंगे तो आपका पुरुषार्थ फलदायी होगा। धर्म-संघ से जुड़ने वाला ज्ञानी बनेगा, तपस्वी होगा और साधना करेगा।

आज आपको अपनी स्थिति देखनी है, समझनी है। आपको सोचना होगा क्यों आज के लोग धर्म संघ में आने से कतरा रहे हैं? आप विचार चिन्तन करेंगे तो समस्या के समाधान की ओर बढ़ेंगे। आज संघ के जो मुखिया हैं, पदाधिकारी हैं उनके पास समय नहीं। आप संघ के सदस्य तो हैं, संघ की समस्या का समाधान भी चाहते हैं तो धर्म-संघ के लिए समय का भोग देने वाले चाहिए। आप जितना-जितना समय का भोग देंगे, उतनी-उतनी मात्रा में धर्म-संघ से स्वधर्मी जुड़ते जाएँगे। जोड़ना आप-सबका काम है। आप जोड़ने का काम शुरू तो करें आपको सफलता मिलेनी, ज़रूर मिलेगी। आप यह तो सोचें कि इस्लाम समाज में मस्ज़िद ही नहीं, सड़कें तक क्यों भर जाती हैं? मुस्लिम मतावलम्बियों में ख़ुदा की इबादत का भाव हर किसी में देखने को मिलता है।

आप अपने बारे में सोचें, अपने धर्म-संघ के बारे में चिन्तन करें कि हमारे संघ का हर व्यक्ति क्यों नहीं धर्म-संघ से जुड़ता। आप व्यापार-व्यवसाय में, घर-परिवार के कामों में, अड़ौसी-पड़ौसी को देख-देखकर खाने-कमाने की सोचते हैं ठीक वैसे ही आप धर्म-संघ के लिए, अपने जीवन-निर्माण के लिए सोचें। सोचें ही नहीं, करें और करने की मानसिकता सबमें बने तो धर्म संघ की स्वत: दीप्ति बढ़ेगी।

आज आपकी मन:स्थिति क्या है? एक पिता अपने पुत्र को कहता है-तू दुकान जा, मैं व्याख्यान में जाता हूँ। ऐसे कहने वाले और करने वाले बहुत हैं तो फिर संघ समाज की प्रभावना कैसे होगी? जरूरत है-आप स्वयं धर्म-साधना करें और अपने बच्चों को, पड़ौसियों को और जान-पहचान वाले लोगों को धर्म संघ में लाने का, धर्म से जोड़ने का प्रयास करें तो वह आपके कर्मों की निर्जरा का कारण भी होगा और धर्म संघ की दीप्ति का निमित्त भी बनेगा।

आप सब सुन तो रहे हैं। सुनना अच्छा है। सुन-समझकर व्यक्ति-व्यक्ति के मन में यह भावना भी तो जगे कि, मैं स्वयं धर्म-संघ से जुड़ा रहूँगा और दूसरे-दूसरे लोगों को धर्म-संघ से जोड़ने का प्रयास करूँगा। आप मानकर चलिए, आप करेंगे तो आपके बच्चे देखा-देखी ही सही, वे भी कुछ-न-कुछ करने की जरूर सोचेंगे। आपके बच्चे सोचेंगे ही नहीं, करेंगे भी। धर्म-संघ में एक साथ सैकड़ों-हजारों को आते देखने वालों का मन भी बनेगा कि मैं भी सन्त-सतीवृन्द के यहाँ जाऊँ, उनके प्रवचन को सुनूँ, कुछ व्रत-नियम ग्रहण करूँ।

धर्म-संघ से जुड़ने और जोड़ने की शुरूआत घर से करें। एक दादा अपने तीन साल के पोते को गोद में लेकर मन्दिर जाए और कहे कि भगवान के टीकी लगा तो बच्चा दादा के कहे अनुसार करेगा या नहीं?

बच्चों में संस्कार ज़रूरी है। आज कई स्थानों पर संस्कार शालाएँ चलती हैं। कुछ बच्चे आते हैं। माँ-बाप उन बच्चों को कहे-समझाए कि तुम सामायिक-प्रतिक्रमण याद करो। आप प्रयास करेंगे तो आपके बच्चे ज्ञान सीख सकेंगे और आपके सहयोग से आपके बच्चे धर्म-संस्कारों से संस्कारित भी होंगे। बच्चों में रुचि जगने पर धर्म संघ की प्रभावना स्वत: बढ़ती जाएगी।

आप खुद धर्म-संघ से जुड़े रहेंगे और दूसरों को जोड़ेंगे तो मानकर चलिये आपका यह गौरवशाली धर्म-संघ ज्ञानाराधन, तपाराधन, धर्माराधन में तो बढ़ेगा ही, संघ के कार्यक्रम दिन-प्रतिदिन सबको प्रभावित करते जाएँगे। आपका बच्चा आज माला हाथ में लेगा तो कल सामायिक भी करेगा। धर्म-संघ की दीप्ति के लिए आप जो बनता है करें, जरूर करें और साधना-आराधना

करते न रुकें, न थकें। निरन्तर प्रेरणा और पुरुषार्थ से गुणियों की संख्या बढ़ती जाएगी और गुणियों का सम्मान होते देख-देखकर लोग जगेंगे, जगते जाएँगे।

आपने अपने बच्चे को स्कूल तो भेजा, पर जब तक रजिस्टर में उसका नाम नहीं आएगा तो बच्चा घर आकर कहेगा-सब बच्चों के तो नाम आते हैं, मेरा नाम तो मास्टरजी बोलते तक नहीं। वह बच्चा नाम लिखवाने की जिद करेगा तब ही उसको सन्तोष होगा। ठीक इसी तरह धर्म-संघ की सेवा में आप लगेंगे और दूसरों को जोड़ेंगे तो आपके कर्मों की निर्जरा तो होगी ही, संघ दीप्ति में भी आपका योगदान आपको सन्तुष्ट बनायेगा।

आज आपके कार्यक्रम हैं इसलिए लम्बा कहने के स्थान पर इतना संकेत करूँगा कि आप स्वयं धर्म संघ से जुड़े रहें, औरों को भी जोड़ें तभी संघ में आपकी भागीदारी सार्थक होगी।

ऐसे करें नूतन वर्ष का अभिनन्दन

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

प्रभु महावीर के चरणों में, मिलकर करें हम वन्दन,
सन्ताप सारे हर लेते, वे ऐसे हैं शीतल चन्दन।
उसी वीर की वाणी का, हृदय में बढ़ता जाए स्पन्दन,
ध्येय यही बस लेकर के, करें नूतन वर्ष का अभिनन्दन।।
चन्द साँसे मिली हैं हमको, जीवन मिला है अल्प
न जाने इस मानव भव में, कब खत्म हो जाएगा कल्प
धर्म ही है सच्चा सहारा,धर्म का न होता कोई विकल्प
सामायिक स्वाध्याय है करना, नववर्ष में करें संकल्प
मिथ्यात्व का अन्धकार हरे, गुरुवर होते हैं ऐसी भोर
करुणासिन्धु की करुणा का, नहीं होता कोई ओर-छोर
उनके प्रवचन की वर्षा से, हर्षित हो जाए मन का मोर
गुरु आज्ञा पालने हेतु, नये वर्ष में लगाना है परजोर।
स्वधर्मी वात्सल्य बढ़े, संघ सेवा कुछ खास हो
मलिन करते जो आत्मा को, उन कषायों का भी नाश हो
आत्मा का उत्थान करें सब, प्रतिक्षण यही प्रयास हो
नव-वर्ष में बढ़ता जाए, प्रभु वाणी पर, दृढ़ विश्वास हो।।
नव उमङ्ग, नव उल्लास से, करें प्रभु की भक्ति,
प्रभु आज्ञा पालने में, लगा दें अपनी सर्वशक्ति।
नये साल में बढ़ती जाए श्रद्धा, और जग से विरक्ति,
तप-संयम में बढ़े क़दम, तभी प्रशस्त होगी मुक्ति।।

-एस 149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302015 (राज.)

तुम चिन्तन करो और मनन भी करो

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

तुम चिन्तन करो और मनन भी करो,
अपने अनमोल जीवन की, कद्र करो।
बहुत खुशियाँ मनाई हैं, संसार की,
अब अपने आतम-धन की, सुरक्षा करो।।
नये वर्ष की खुशियाँ, मनाते हो तुम,
नाच-गानों की धूम, मचाते हो तुम।
सोचो, विचारो, क्या मिलता तुम्हें,
सिर्फ कर्मों का बोझा, बढ़ाते हो तुम।।
काम नेकी के करने में है फायदा,
शुभ भावों से होती है, पवित्र आत्मा।
दीन-दु:खियों की सेवा में, आगे बढ़ो,
नये वर्ष का स्वागत, कुछ इस तरह से करो।।
आत्मा है अकेली, है अकेला सफ़र,
सब छोड़ो, पहले लो, इसकी खबर।
आत्मा को भुलाना तो, अच्छा नहीं,
सिर्फ़ दुनिया को खुश रखना, सच्चा नहीं।।
नये वर्ष की अगवानी, गर करना है तुम्हें,
शुभ संकल्प लेकर, इसका सन्मान करो।
अपने जीवन को ऊँचा, उठाएँगे हम,
अपने अन्तर्मन से, ऐसा प्रयास करो।।

-जनता साड़ी सेन्टर, फरिश्ता कॉम्पलेक्स, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001(छ.ग.) 9424109109

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 15
ISSN 2249-2011

पुण्य-स्मरण

ऋजुता के प्रतिमान उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.

4 मई 2012 को उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा स्वर्णजयन्ती के अवसर पर मधुरव्याख्यानी कविरत्न श्री गौतममुनिजी म.सा. के प्रवचनांश का संकलन विधिजी कोठारी ने किया था। साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने सम्पादन किया है। यह प्रवचनांश श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के दिवंगत होने के पूर्व का होने से वर्तमान काल का प्रयोग स्वाभाविक है।

-सम्पादक

जैनधर्म में अनेक सन्तरत्न हुए हैं, जिनमें उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। आपकी सरलता, आत्मीयता, सहजता, निश्छलता एवं सादगी भरे जीवन पर जिसकी नज़र जाती है, वह श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता है। त्याग और वैराग्य की भावना, संसार की नश्वरता और वीतरागता का महत्त्व आपके दर्शन मात्र से समझ में आ जाता है।

बचपन से सन्तोषवृत्ति के कारण युवावस्था में आपने यह संकल्प कर लिया कि मेरे निमित्त जहाँ तक बन सके कोई क्रिया नहीं लगे, अत: नये वस्त्रों के बजाय बड़े भाई के उतरे वस्त्रों का उपयोग किया। आपने अपनी भोजन और दैनिक आवश्यकताएँ भी मर्यादित कर लीं। युवावस्था में आपने आजीवन ब्रह्मचारी रहने का दृढ़ संकल्प कर लिया। शीलव्रत धारण करने के बाद माँ ने जब जानकारी नहीं देने की बात कही तो आपने कहा- ''दीक्षा लेते वक्त जरूर अनुमति लूँगा।'' भोपालगढ़ में रहते हुए आपके वैराग्य को दृढ़ता मिली।

वीर माता-पिता एवं परिजनों से आज्ञा प्राप्त कर विक्रम सम्वत् 2020 की वैशाख सुदी त्रयोदशी को आप परम पूज्य गुरु हस्ती द्वारा दीक्षित हुए। गुरु चरणों में विनय पूर्वक सेवा करते हुए, संयम रखते हुए, तेजस्विता तथा दिव्यता प्राप्त करते हुए संघ को आलोकित करते हुए आप सबके श्रद्धास्पद बन गये। आप संघ के आधार एवं स्तम्भ की तरह हैं।

पण्डितरत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. के सान्निध्य में आपने आगम-शास्त्रों और थोकड़ों का तलस्पर्शी ज्ञान अर्जित कर सुयोग्य गुरु के सुयोग्य शिष्य के रूप में ख्याति अर्जित की। पूज्य गुरुदेव हस्ती ने श्री मानमुनिजी को श्री सुजानमलजी म.सा. की सेवा में रखा। आपने बिना प्रमाद और अग्लान भाव से मुनिश्री की सेवा की। पूज्य लक्ष्मीचन्दजी म. सा. की आराधना, साधना और धारणा अद्वितीय थी। शालिभद्रजी की माँ के ये शब्द आपके प्रेरणा स्रोत रहे कि अच्छी करणी करना, कोई प्रमाद मत करना और ऐसा पुरुषार्थ करना कि वापस किसी माँ के गर्भ में नहीं आना पड़े।

आपने अपना प्रथम चातुर्मास गुरुदेव के चरणों में करने की भावना व्यक्त की। दूसरे चातुर्मास में 'साधक की भावना' के रूप में आपने अपनी डायरी में निम्न संकल्प लिखे-

1. दिन में नहीं सोना,
2. आहार संयम रखना, और
3. दो घण्टे प्रतिदिन मौन रखना।

आपके संकल्प बल तथा तेजस्वी जीवन को देखकर गुरु हस्ती को भरोसेमन्द सन्त का आभास हुआ और कहा- ''जैसा सहयोग मुझे सुजानमलजी म.सा. ने दिया, वैसा सहयोग तुम हीरामुनिजी म.सा. को देना।'' गुरुदेव की भोलावण का उपाध्यायश्री पूरा पालन कर रहे हैं। आप संघ को पूरा सहयोग दे रहे हैं। लोगों की महिमा और जय-जयकार को पचाना बड़ा मुश्किल होता है।

आपने उससे परे रहकर हमेशा संघ की महिमा को बढ़ाया। रत्नसंघ की विशुद्ध अनुशासित परम्परा के गौरव संवर्धन में अपना सहयोग किया। पूज्य गुरु हीरा और मान के सान्निध्य में संघ धन्य है।

सरलता में आपका कोई सानी नहीं। आपके आचार में उज्ज्वलता, विचारों में विमलता, व्यवहार में सरसता एवं निश्छलता, वाणी में मधुरता एवं सत्यता है। आपका जीवन खुली किताब है। खुले में बैठते हैं। श्रद्धालुओं के लिए हर समय उपलब्ध रहते हैं। आपका व्यक्तित्व शान्त-दान्त और कान्त है। आपके मुख-मण्डल से तेजस्विता स्पष्ट झलकती है। चेहरे पर गुलाब जैसी स्मित मुस्कान रहती है। आप प्रखर वक्ता हैं। आपका जीवन लाजवाब है। आपका जीवन आडम्बर रहित, प्रदर्शन रहित और सबके लिए प्रेरणा का प्रदीप है। आपकी प्रेरणा प्रबल एवं वात्सल्य अद्वितीय है। युवा श्रद्धालु आपके सान्निध्य में आनन्द की अनुभूति करते हैं। आपका आशीर्वाद आनन्द से ओतप्रोत है। आपके विराट व्यक्तित्व का शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता।

■

साता का सुख

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

हे चेतन!
साता के सुख से निसंगत्व,
में प्रकट कर अपना सत्त्व।
अनादि कालीन है साता के सुख की रति,
इसे तो पकड़ पाएगी अतिसूक्ष्म मति।
साता जीव को सुहाती है,
परन्तु यही भवाटवी में रुलाती है।
साता की साख को छोड़ना है अति दुष्कर कार्य,
परन्तु जीव की मुक्ति हेतु है यह अति अनिवार्य।
सारा संसार साता के सुख में ही है लीन
यह नहीं मिले तो बन जाता दीन।
साता के सुख को छोड़ने का अभ्यास हो,
मुक्त होने की तीव्रतम प्यास हो।
आत्म सुख की श्रद्धा से साता की
आसक्ति टूटती है।
इसी से यह भवपरम्परा छूटती है।
साता-असाता उदयाधीन है,
उससे निसंगत्व स्वाधीन है।
साता-आत्मरमणता में नहीं है बाधक,
परन्तु उसकी लालसा नहीं रखता आत्मसाधक।
साता के सुख की रुचि हो समाप्त,
तो शीघ्र हो मुक्ति प्राप्त।
निसंगता ही जीव का स्वभाव है,
फिर तुझे क्यों साता के सुख से लगाव है।
सहज साता मिल जाये वह है अलग बात,
परन्तु उसकी चाहना से तो होती है
आत्मिक गुणों की घात।
साता-असाता तो अघाति कर्म है,
समत्व में रहना ही आत्मधर्म है।
कष्ट सहिष्णु बनने से टूटती है साता की आसक्ति,
और इसी से बढ़ती है आत्म अनुरक्ति।
स्वरूप में लय लगे,
तो साता की आसक्ति भगे।
साता का सुख परिणाम में दु:खदायी है,
इससे विरक्ति ही सुखदायी है,
साता के सुख का जुड़ाव,
वर्तमान में भी पैदा करता है तनाव।
साता की आसक्ति तोड़ने में ही सार है,
इसी से जीव होता भवपार है।

-संकलन : धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार

■

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 17
ISSN 2249-2011

प्रवचन

आत्मविकास का साधन है पुण्य

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में वर्ष 2019 के चातुर्मास में प्रदत्त प्रवचन का संकलन श्री नौरतनमलजी मेहता द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

नहीं करने योग्य को नहीं करके और करने योग्य को करके, करने कराने से छुटकारा पाने वाले कृतकृत्य अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और अकारण करुणाकर की करुणा से आप्लावित होते हुए नहीं करने की ओर अग्रसर आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्-

बन्धुओं! हम क्या करें? यह एक सजग मानव की माँग है। इस सम्बन्ध में गंभीरतापूर्वक विचार करने से यह स्पष्ट विदित होता है कि मिली हुई स्वाधीनता का दुरुपयोग न करें, अपितु पवित्र भाव से सदुपयोग करें अथवा यों कहो कि दुरुपयोग न करने पर सदुपयोग स्वत: होगा। यह एक प्राकृतिक विधान है। हाँ, विचारपूर्वक किए हुए सदुपयोग का अभिमान न करें और उसका अपने लिए फल न माँगें। केवल कर्तव्य बुद्धि से करने की बात है, जिससे विद्यमान राग की निवृत्ति हो जाय। राग-निवृत्ति से ही वीतरागता की प्राप्ति होती है।

यह सर्वमान्य सत्य है कि प्रत्येक मानव में करने, जानने और मानने की सामर्थ्य है। सामर्थ्य का दुरुपयोग न करना कर्त्तव्य विज्ञान है, इससे मानव जगत् के लिए उपयोगी होता है। जगत् में अपना कुछ नहीं है, अत: अपने को जगत् से कुछ नहीं चाहिए, यह अध्यात्म-विज्ञान ममता रहित तथा निष्काम होने से स्वाधीनता प्राप्त होती है। अध्यात्म-विज्ञान बुराई-रहित होने की प्रेरणा देता है। बुराई रहित होने पर स्वत: भलाई होने लगती है।

बुराई-भलाई का ज्ञान नहीं होने पर भी निगोद अवस्था में जीव का स्वभाव से, अक्षर का अनन्तवाँ भाग निरावृत रहता है। टिमटिमाते प्रकाश में भी कुछ कुछ चमक रहता है। आचाराङ्ग के पहले श्रुतस्कन्ध के द्वितीय अध्ययन के तृतीय उद्देशक में भगवान जिसके लिए फरमाते हैं-'**सव्वे पाणा पिआउया सुहसाया दुक्खपडिकूला, अप्पियवहा, पियजीविणो, जीवितुकामा सव्वेसिं जीवियं पियं।**' अर्थात् सभी प्राणियों को आयुष्य प्रिय है, सभी प्राणी सुख चाहते हैं, दु:ख से बचना चाहते हैं, वध उन्हें प्रिय नहीं है, जीवन उन्हें प्रिय है, वे जीवित रहना चाहते हैं। सबको जीवन प्रिय है। चार संज्ञा उनमें भी है, जीवन की प्रियता का अव्यक्त बोध है, किन्तु अविद्या या अज्ञान के कारण दु:ख पाते हैं।

जावंतऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्खसम्भवा।
लुप्पन्ति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणंतए।।

उत्तराध्ययनसूत्र, 6 अध्ययन, गाथा 1

संसार में जितने अविद्या सम्पन्न व्यक्ति हैं, वे सबके सब अपने लिए दु:ख पैदा करने वाले हैं। वे विवेकमूढ़ बने हुए इस अनन्त चतुर्गतिरूप संसार में बार बार लुप्त होते रहते हैं।

निगोद जीव के भी प्रत्येक अन्तर्मुहूर्त्त में असाता के बाद साता का, विकलेन्द्रिय के बाद पञ्चेन्द्रिय का, नीच गोत्र के बाद उच्च गोत्र का, इस प्रकार अशुभ प्रकृति बन्ध के उपरान्त तत्प्रायोग्य शुभ प्रकृतियों का बन्ध होता है। वह जीव देव, नरक आदि प्रायोग्य पुण्य की 8 और पाप की 3 कुल 11 प्रकृतियाँ छोड़कर पुण्य की 34 एवं पाप की 79 कुल 113 (वर्णादि शुभ व अशुभ में गिनने से) प्रकृतियाँ बान्धता है। तीसरा कर्मग्रन्थ कुल 109 प्रकृतियों का बन्ध कहता है। 256

आवलिका के क्षुद्र भव में भी इतना सामर्थ्य है कि वह अगले भव के लिए कर्मभूमि मनुष्य प्रायोग्य एक करोड़ पूर्व उत्कृष्ट आयु बाँध सकता है। अगले भव में साधु बन सकता है। जहाँ करोड़ पूर्व वाला क्षुद्र भव के उस जीवन में गिर सकता है वहाँ अनादि काल से रहा हुआ सीधा कर्मभूमि प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थिति में आ सकता है। इतना सामर्थ्य, चेतना के स्वभाव से अनावृत रहने के कारण उसमें होता है। भगवती सूत्र शतक 24 स्पष्ट कर रहा है, मनुष्यायु बाँधने वाले उस जघन्य स्थिति वाले जीव के पूरे जीवन में अध्यवसाय प्रशस्त ही होते हैं; लेश्याओं में तीन अप्रशस्त लेश्या होने पर भी उनकी तीव्रता में कमी होती है। उस जीव के प्रायोग्य विशुद्धता होती है। केवल काययोग, एक औदारिक शरीर पर अनन्त जीवों का स्वामित्व फिर भी तैजस शरीर अलग है, कार्मण शरीर अलग है, संज्ञा, लेश्या, कर्म भी व्यक्तिगत भिन्न-भिन्न हैं। वहाँ वीर्यान्तराय का क्षयोपशम भी है। स्याद्वाद मञ्जरी में आया-**'स्वज्ञानावरणवीर्यान्तरायक्षयोपशमविशेषवशादेवास्य नैयत्येन प्रवृत्ते:'**-ज्ञान की पदार्थों को जानने की जो प्रवृत्ति होती है, वह अपने अपने ज्ञानावरण और वीर्यान्तराय कर्मों के विशिष्ट क्षयोपशम के कारण होती है। योग आत्मा, उपयोग आत्मा में वीर्य से प्रवृत्ति होती है। यहाँ निगोद में केवल काययोग रहता है। कषाय (कषाय आत्मा) उस काययोग को अशुभ बनाता है। कषाय की वृद्धि रूपी संक्लेश उसे तिर्यञ्च गति में, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण अपर्याप्त आदि में ले जाने वाला बनता है। वहाँ अनाभोग अर्थात् विशेष जानकारी की अभिव्यक्ति का अभाव होने पर भी स्वभाव की टिमटिमाती ज्योति उस काय योग को कषाय उदय से पृथक् कर शुभयोग बना देती है और वह ज्योति ही मनुष्य भव का अधिकारी भी बना देती है। उत्तराध्ययनसूत्र 3/7 स्पष्ट कह रहा है-

कम्माणं तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ।
जीवा सोहिमणुपत्ता, आययंति मणुस्सयं।।

अर्थात् कदाचित् मनुष्य गति को रोकने वाले अशुभ कर्मों का क्षय हो जाने से क्रमश: आत्मशुद्धि को प्राप्त जीव शुभयोग से मनुष्यत्व (मनुष्य जन्म) को प्राप्त कर लेता है।

भगवती शतक 8 उद्देशक 9 में मनुष्यायु का बंध-प्रकृति की सरलता, प्रकृति की विनीतता, दया भाव, मद मत्सर रहितता से बताया गया है तो तत्त्वार्थसूत्र 6/18 में बताया-**'अल्पारम्भपरिग्रहत्वं स्वभाव-मार्दवार्जवं च मानुषस्य।।'** अल्प आरम्भ, अल्प परिग्रह, स्वभाव का मार्दव और आर्जव मनुष्य आयु बन्ध के कारण हैं। इस सूत्र में स्वभाव की मृदुता, ऋजुता का उल्लेख है। बुराई रहित होने पर भलाई स्वत: होती है। ऐसा शुभ योग पुण्य का आस्रव करा रहा है। इसलिए तत्त्वार्थ 6/3 में 'शुभ: पुण्यस्य' कहकर इसे आस्रव में रखा, किन्तु पुण्यास्रव पापास्रव के निरोध का कारण होने से शुभयोग को संवर भी कह दिया। हालांकि कायगुप्ति तो संरम्भ, समारम्भ, आरम्भ रुकने पर व्रती को होती है, पर उसका एक अंश यहाँ भी प्रकट होता है। उत्तराध्ययनसूत्र 29/55 से स्पष्ट है-**'संवरेणं कायगुत्तो पुणो पावासवणिरोहं करेइ।'** पापास्रव का निरोध होना संवर है। पुण्यास्रव से पापास्रव का निरोध होता है। पुण्यास्रव को तत्त्वार्थ में आस्रव कहा, वहीं नवतत्त्वों में संवर के भेद में शुभयोग को पापास्रव रोकने की अपेक्षा संवर माना गया। पूरा योग-निरोध तो चौदहवें गुणस्थान में ही होगा। अयोग तो पूर्ण संवर है ही, पर अशुभ योग का निरोध विवेकपूर्वक छठे गुणस्थान से प्रारम्भ हो जाता है और अनाभोग से शुभयोग समस्त अमनस्क जीवों में भी होता है।

उत्थान की प्रक्रिया में सर्वप्रथम सहायक है शुभयोग, पुण्य तत्त्व। यह पुण्य, सामान्य पुण्य है, पर हेय नहीं कहला सकता, अनादिकालीन भव-परम्परा का छेदन करने में सर्वप्रथम सहकारी है। अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में प्रवेश यही दिलाता है। (दिगम्बर जिसे नित्य निगोद से बाहर निकलना मानते हैं।) निगोद के

अनन्तकाल के भ्रमण को समाप्त कर प्राथमिक योग्यता का सम्पादन उपादेय ही तो रहेगा। क्या उच्चशिक्षित की प्रथम कक्षा की पढ़ाई हेय कही जा सकती है? कभी नहीं।

श्रद्धा परम दुर्लभ है–'**सद्धा परमदुल्लहा।**' कोई कोई जीव प्रथम बार समकित पाने के पश्चात् नीचे गिरे बिना ऊपर उठते ही गये, उठते ही गये। 'अपडिवाई सिद्ध' बिना नीचे गिरे, एक बार मिथ्यात्व छूटने के पश्चात् पुन: मिथ्यात्व में नहीं जाकर सिद्ध बनने वाले अनन्त जीव इस पुण्य से संवर-निर्जरा कर, सम्यक्त्व संयम के आराधक बनकर दु:खों का अन्त कर चुके हैं, णमो सिद्धाणं–उन सिद्ध भगवन्तों को नमस्कार है।

कषाय रहित शुभयोग, पूर्ण शुभयोग, केवल शुभयोग यथाख्यात चारित्र, 11, 12, 13 गुणस्थानवर्ती के आस्रव (आगम में बन्ध भी) ईयापथिक आस्रव या बन्ध मात्र 2 समय का और उसमें भी सातावेदनीय की प्रकृति मात्र बन्धती है। दो समय से लेकर क्षुद्र भव प्रमाण 256 आवलिका पर्यन्त बन्ध किसी भी कर्म का नहीं होता है। आयु को छोड़कर शेष 7 कर्मो में से 4 घातिकर्मों का जघन्य बन्ध अन्तर्मुहूर्त्त, नाम गोत्र का जघन्य बन्ध 8 मुहूर्त्त और साता वेदनीय का जघन्य बन्ध 12 मुहूर्त्त का होता है। इनमें मोहनीय कर्म को छोड़कर शेष 6 कर्मों का जघन्य स्थिति बन्ध संज्वलन लोभ की सूक्ष्म किट्टी का वेदन करते हुए दसवें गुणस्थान के अन्तिम समय में होता है। आयु को छोड़ शेष 116 प्रकृतियों का स्थिति बन्ध मात्र कषाय से होता है। साम्परायिक बन्ध में 24 क्रियाएँ कारण हैं। तत्त्वार्थ 6.6 के साम्परायिक आस्रव के भेद में '**इन्द्रियकषायाव्रत-क्रिया: पञ्चचतु: पञ्च-पञ्चविंशतिसंख्या: पूर्वस्य भेदा:**' अर्थात् साम्परायिक कर्मास्रव के इन्द्रिय, कषाय, अव्रत, क्रिया रूप भेद हैं जो अनुक्रम से संख्या में 5, 4, 5, 25 हैं। यह सब पापास्रव के हेतु हैं। नवतत्त्व में 5, 20 एवं 42 भेद आस्रव के कहे। प्रश्नव्याकरण सूत्र में हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह रूपी अव्रत को आस्रव कहा। ये सभी आस्रव के भेद पाप का ही आस्रव करने वाले हैं। इनमें एक भी शुभयोग नहीं है। दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन की प्रारम्भिक छह गाथाएँ अयतना से चलना, उठना, बैठना, शयन करना, खाना, बोलना इन सबमें पापकर्म की ही बात रही है। योग से तो केवल पुण्य का ही आस्रव होता है। अकेला योग कभी अशुभ होता ही नहीं। कषाय का इञ्जेक्शन लगने पर ही योग अशुभ होता है। इसीलिए आस्रव के भेदों में मन, वचन, काया की अशुभ प्रवृत्ति को लिया है और मन, वचन, काया को वश में रखने को संवर कहा है।

आत्मा के वे पुद्गल सापेक्ष परिणाम जो आने वाले पुद्गलों को साधना में सहकारी बनाते जाते हैं, पुण्य कहलाते हैं। अच्छे भाव ही तो पुण्य हैं।

विभीषण राम के लिए हितकारी है, अहितकारी है या उपकारी है? सभा से उत्तर आया ये तो हितकारी ही है, उनके बिना लंका की जानकारी कैसे मिल सकती थी? कवि ने तो यहाँ इस पर ऐसा भी कह दिया–

रहिमन असुवा नैन ढरी, हियदु:ख प्रकट करेही।
जाही निकालो गेह ते, कस न भेद कही देही।।

विभीषण को घर से निकाल दिया। रावण ने उसकी हितकारी बात मानने के स्थान पर लंका से निकाल दिया, परिणाम यह हुआ कि लंका का भेद बाहर चला गया। और भी कहा गया–'घर का भेदी लंका ढाये।' विभीषण भी राक्षस वंश के ही थे। रावण के सगे भाई थे। उनके बताए बिना अहि रावण की पाताल लंका से अपहृत राम-लक्ष्मण को कौन छुड़ा लाता? लक्ष्मण की मूर्च्छा को दूर करने के लिए सुषेण वैद्य स्वामी द्रोह के कारण तैयार नहीं हो रहे थे। मर्यादा पालक श्री राम ने उन्हें मर्यादा नहीं तोड़ने की दृढ़ता प्रदान कर दी थी, पर विभीषण की उपस्थिति से ही तो स्वामी द्रोह से बचकर लक्ष्मण जी के लिए संजीवनी का उपाय सुझाया गया। क्या ये विभीषण राम के लिए हेय हैं? राक्षस कुल है, फिर भी हेय नहीं है, अपितु उपादेय है, उपकारी है ऐसे ही पुद्गल होने पर भी पुण्य जीव के लिए सहकारी है,

उपकारी है, उपादेय है। विभीषण के बिना लंका जीती नहीं जा सकती, सीता की मुक्ति नहीं होती। पुण्य के सहकार के बिना सम्यग्दर्शन नहीं, संवर-निर्जरा नहीं होती, मुक्ति नहीं होती।

क्रियात्मक सेवा ससीम होती है। भावात्मक सेवा असीम होती है। क्रियात्मक सेवा से भावात्मक सेवा सजीव बनती है। भावात्मक सेवा से क्रियात्मक सेवा शुद्ध बनती है।

क्रियात्मक सेवा द्रव्य पुण्य है, भावात्मक सेवा भाव पुण्य के साथ संवर और निर्जरा भी है। भावात्मक सेवा रहित क्रियात्मक सेवा अनन्त बार होने पर भी जीव का समुचित उत्थान नहीं हो पाया।

अस्तु कल्याण मन्दिर का 38वाँ श्लोक कह रहा है-

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव! दुःखपात्रं,
यस्मात् क्रिया: प्रतिफलन्ति न भावशून्या:।।38।।

हे जनबान्धव! मेरे द्वारा आपको सुना गया, महिमा की गयी, आपका निरीक्षण किया गया, पर चित्त में भक्ति से धारण नहीं किया गया। इसलिए मैं दुःख का पात्र बना हूँ। भावशून्य होकर की गई क्रिया फल नहीं देती है। उत्तराध्ययनसूत्र 28/15 कह रहा है-

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं,
भावेण सद्धहंतस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं।।

अर्थात् इन तथ्यस्वरूप भावों के सद्भाव (अस्तित्व) के निरूपण में जो भावपूर्वक श्रद्धा है, उसे सम्यक्त्व कहते हैं। इसी प्रकार उत्तराध्ययनसूत्र की 36वें अध्ययन की 261वीं गाथा कह रही है-

'जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेंति भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी।।'

अर्थात् जो जिनवचन में अनुरक्त हैं और जिनवचनों का भावपूर्वक आचरण करते हैं वे निर्मल और रागादि से असंक्लिष्ट होकर परीत संसारी होते हैं।

अनुयोगद्वार सूत्र में 'नो आगमत: भाव प्रतिक्रमण' में आया-**से किं तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं जे णं इमे-समणे वा, समणी वा, सावओ वा, साविआ वा, तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेसे, तदज्झवसिए, तत्तिव्वज्झवसाणे, तदट्ठोवउत्ते, तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं आवस्सयं करेइ।** लोकोत्तरिक भाव आवश्यक क्या है? दत्तचित्त और मन की एकाग्रता के साथ, शुभ लेश्या एवं अध्यवसाय से संपन्न, यथाविधि क्रिया करने के लिए तत्पर अध्यवसायों से सम्पन्न होकर तीव्र आत्मोत्साहपूर्वक उसके अर्थ में उपयोग युक्त होकर एवं उपयोगी करणों-शरीरादि को नियोजित कर, उसकी भावना से भावित होकर श्रमण, श्रमणी, श्रावक, श्राविकायें अन्यत्र मन, (वचन, काया) को दोलायमान किये बिना उभयकाल प्रतिक्रमणादि करते हैं, वह लोकोत्तरिक भावावश्यक है। 'तच्चिते' से प्रारम्भ कर 'तब्भावणाभाविए' तक बता दिया, कि यह नहीं हो पाया, इसलिए अनन्त बार संयम ग्रहण कर लिया, बाना दोषी नहीं है। बाने की उपयोगिता लोक में है, जैसे भावों के गिरने पर प्रसन्नचन्द्र राजर्षि को पुन: भावों में ऊर्ध्वगामी बनाने में सहयोगी बना। उत्तराध्ययनसूत्र 23/32 कह रहा है-

पच्चयत्थं च लोगस्स, णाणाविहविगप्पणं।
जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगपओयणं।।

अर्थात् नाना प्रकार के उपकरणों का विकल्पन (विधान) लोगों की प्रतीति के लिए है। संयम-यात्रा के निर्वाह के लिए है और 'मैं साधु हूँ' यथा प्रसङ्ग इस प्रकार का बोध रहने के लिए ही लोक में लिङ्ग का प्रयोजन है।

पुण्य का दोष नहीं, पर पाप के कारण, कषाय के कारण, स्वार्थ के कारण, साता की आसक्ति रूप पाप के कारण भावात्मक सेवा नहीं हो पाई, जिससे संवर निर्जरा में आगे नहीं बढ़ पाये। यदि कहो कि संयम से

देवायु प्राप्त होती है, संसार बढ़ता है तो भइया चतुर्थ गुणस्थानवर्ती मनुष्य प्रतिसमय कौनसी गति बाँध रहा है? चतुर्थ गुणस्थान में मनुष्य के आयु किसकी बँधेगी? फिर तो सम्यक्त्व का होना भी महान् दोष हो जायेगा। सम्यग्दृष्टि मनुष्य पहले देवलोक से 12 देवलोक तक जा सकते हैं। चतुर्थ गुणस्थानवर्ती अविरत है। यह दोष कषाय के घटने का नहीं है, बचे हुए कषाय का है, जो पाप है। कषाय से, अशुभ योग से भवभ्रमण बढ़ता है। कषाय की कमी से, शुभयोग से भवभ्रमण में दुर्गति से छुटकारा मिलता है। ठाणांग सूत्र के चौथे ठाणे में चौभङ्गी बताई-

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-उदियोदिए णाममेगे, उदियत्थमिए णाममेगे, अत्थमियोदिए णाममेगे, अत्थमियत्थमिए णाममेगे।

अर्थात् चार प्रकार के पुरुष प्रतिपादित किए गए हैं, जैसे एक उदितोदित, एक उदित-अस्तमित, एक अस्तमित-उदित और एक अस्तमित-अस्तमित।

1. **उदित उदित**-पहले पुण्य किया, शुभयोग से अच्छे कार्य किये। आज उदित है और वर्तमान में पुनः सदुपयोग कर रहे हैं। पुण्य, संवर, निर्जरा से दोष मुक्त हो रहे हैं-जैसे भरत चक्रवर्ती।
2. **उदित अस्त**-पूर्व में शुभ किया होने से आज तो उदित है, किन्तु वर्तमान के दुरुपयोग के कारण पाप, आस्रव, बन्ध से दोष बढ़ा रहे हैं। घोरातिघोर नरक में जा रहे हैं जैसे-ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती।
3. **अस्त उदित**-पहले समुचित शुभयोग नहीं किया। मनुष्य गति, पञ्चेन्द्रिय जाति, वज्रऋषभनाराच योग्य पुण्य किया। आयु बन्ध के समय पूर्व भव में सरलता, विनम्रता थी। अस्तु, गति, जाति, अवगाहना, स्थिति, अनुभाग, प्रदेश ये छह अच्छे बन्धे, किन्तु अन्य समय में हिंसादि पाप का सेवन करने से प्रचुर पुण्य नहीं बाँधा। जाति, कुल, रूप, लाभ आदि अच्छे नहीं बँधे, सामग्री का भी अभाव रहा, पर आज उस दुःख को समाप्त करने में त्याग, विनय, समर्पण में मन, वचन, काया को लगा रहे हैं, शुभयोग, प्रशस्त अध्यवसाय, वर्धमान परिणाम में पूर्वकृत दोषों को मिटा रहे हैं, सम्पूर्ण कर्म-मुक्त हो रहे हैं, जैसे हरिकेशी मुनि।
4. **अस्त अस्त**-पहले मनुष्य भव का पुण्य तो किया, शेष भीषण पाप से अस्त और आगे भी दोष बढ़ा रहे हैं, हिंसादि पाप कर रहे हैं, जैसे कालसौकरिक कसाई।

कोई अपने आग्रह पर डटा रहे और इन तथ्यों से प्राचीन पुष्ट सैद्धान्तिक, कार्मग्रन्थिक साहित्य को ही मानने से मना कर दे और पुण्य केवल हेय है, सामग्री बन्धन है, परिग्रह पाप का मूल है, परिग्रह भोग कराता है, अतः पुण्य को संसार बढ़ाने वाला ही कहे। क्या उसे 'जिणवयणे अणुरत्ता' कहा जा सकता है? क्या भगवान के नाम पर वह अपना हित कर रहा है? अत्यन्त विनम्र अनुरोध है भइया! गहराई से चिन्तन करो। जिनेन्द्र भगवान ने इससे बचने का राजमार्ग बतलाया-

वचन का दुरुपयोग है-उत्सूत्र एवं उन्मार्ग का कथन, काया का दुरुपयोग-अकल्प्य एवं अकरणीय कार्य करना तथा मन का दुरुपयोग है-दुर्ध्यान, दुश्चिन्तन। दुरुपयोग का यह कथन इच्छामि ठामि के पाठ में आया।

उत्तराध्ययनसूत्र में वचन के सदुपयोग के लिए कहा-जिणवयणे अणुरत्ता, काया के सदुपयोग के लिए कहा-जिणवयणं जे करेन्ति तथा मन के सदुपयोग के लिए गहा-भावेणं अमला असंकिलिट्ठा।

दर्शन सम्यक्त्व का पाठ भी वचन के सदुपयोग के लिए परमार्थ के परिचय की बात कहता है। दशवैकालिकसूत्र में-जयं चरे जयं चिट्ठे आदि गाथा काया के सदुपयोग की प्रेरणा करती है तथा मन के सदुपयोग के लिए उत्तराध्ययनसूत्र के पहले अध्ययन में कहा गया है-तओ झाइज्ज एगओ।

पुण्य तत्त्व के 9 भेद हैं। प्रथम के 5 पुण्य-अन्न पुण्य, पान पुण्य, लयन पुण्य, शयन पुण्य, वस्त्र पुण्य हैं।

इन पुण्यों को बढ़ाने में पराधीनता है, लेनेवाला चाहिए, देनेवाला चाहिए, क्षेत्र, काल सभी योग्य चाहिए, पर पीछे के 4 पुण्य-मन पुण्य, वचन पुण्य, काय पुण्य, नमस्कार पुण्य स्वाधीन हैं एवं सभी क्षेत्र में, सभी काल में (अर्थात् सार्वभौमिक, सार्वकालिक) इस पुण्य को सञ्चित कर सकते हैं। अत: इससे ध्वनित होता है कि पुण्य का उपार्जन स्वाधीनतापूर्वक कर सकते हैं। बीच बीच में व्यवधान तो पड़ता है, किन्तु अशुभ का समय सीमित होता जाए, शुभ का समय बढ़ता जाए, पर इस पुण्य के उपार्जन से प्राप्त सामग्री को पुण्य तत्त्व नहीं कहा है। **प्राप्त सामग्री के सदुपयोग को ही पुण्य तत्त्व कहा है।** कटोरदान में रोटियाँ भरी हैं, यह पहले के पुण्य का फल है। कटोरदान में पड़ी रोटी को अन्न पुण्य कहा जा सकता है क्या? कभी नहीं। पुण्य तत्त्व यह है कि उन रोटियों का सदुपयोग हो और सदुपयोग करते समय जैसे भाव होंगे उतने स्तर का पुण्य बँधेगा। उन रोटियों का सदुपयोग कोई सुपात्रदान में कर रहा है, साधु के पात्र में, त्यागी, वैरागी, सम्यग्दृष्टि के पात्र में हो रहा है, या किसी भूखे को रोटी दे रहा है और देते समय हमारे भाव कैसे हैं, इस पर पुण्य तत्त्व निर्भर करता है। सामग्री मिलना पुण्य का फल है। उस पुण्य के फलस्वरूप घर में पानी विपुल मात्रा में भरा पड़ा है, टंकियाँ भरी हैं, स्वीमिंग पूल में पानी लबालब भरा है। यह फल भले ही पुण्य का हो, पर सञ्चय की ममता रही, उस कारण किसी की प्यास बुझाने में हिचकिचाहट रही तो पाप तत्त्व है। उसका सदुपयोग करना पुण्य तत्त्व है। पुण्य के फलस्वरूप घर आलीशान है, कमरे बहुत अधिक हैं, सारी साधन सामग्री है, पर घर में रहने के लिए किसी को स्थान देने से लयन पुण्य, शयन पुण्य हो सकता है। घर में वस्त्र बेशुमार हैं, वस्त्रों की कोई गिनती नहीं है। पुण्य के फलस्वरूप कपाट भरे पड़े हैं और ज़रूरतमन्द को दिया जा रहा है, उस समय वस्त्र पुण्य है। शालिभद्र जी के 33 पेटियाँ उतरना पहले के पुण्य का फल है। 50 कोड़े लगना पहले के पाप का फल है, पर कोड़े लगने पर समता रख रहा है तो उस समय मन का पुण्य बढ़ ही रहा है। अर्जुन अनगार को कोई चाँटे मार रहा तो कोई भाटे मार रहा, तो कोई गाली सुना रहा है, यह सब पहले के पाप का ही फल है, पर वर्तमान में वे पुण्य को उपार्जित कर रहे हैं, संवर और निर्जरा कर रहे हैं। 'मणसा वि अप्पदुस्समाणे' उनके मन में जरा भी किसी के प्रति (तिलतुष भी) द्वेष नहीं है और वे उस समय अदीणे, अविमणे, अकलुसे-दीनता रहित, अमन होकर, कलुषितता से हटकर अपने में लीन हैं। अदीन अर्थात् अरे! हमने ऐसे ही कर्म किए थे, ऐसे दीन होकर कर्म नहीं भोग रहे हैं। समता के साथ भोग रहे हैं। ये दु:ख स्वयं कृत है। भगवतीसूत्र जिसके लिए कह रहा-'सयं कडं दुक्खं' और किसी का दोष नहीं है, स्वयं के किए हुए कर्मों का वेदन स्वयं को ही करना पड़ता है-इन शुभ भावों के साथ पुण्य को वर्धापित करते हुए संवर-निर्जरा की कमाई कर रहे हैं।

देखिये, साता की आसक्ति पाप है, साता की गुलामी पाप है, पर साता मिलना, सामग्री मिलना पुण्य है। पुण्य क्षय होता है सामग्री के दुरुपयोग से, सामग्री की ममता से अत: पुण्य को खुटाओ मत। पुण्य को बढ़ाओ-धर्म-ध्यान से, सामायिक, प्रतिक्रमण, संवर, पौषध से, शुभयोग से, सामग्री के सदुपयोग से....

सबसे अधिक संसार सुख, सर्वार्थ सिद्ध देव लहे।
निर्दोषता, निर्काक्षता, निर्मल मुनि इक वर्ष लँघे।
अमृत प्रपा, गुरु की कृपा, मुदिता अनुपम और कहाँ।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार की ओर से सभी पाठकों को नूतन वर्ष 2021 हेतु हार्दिक मङ्गल कामनाएँ।

-सम्पादक

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 23
ISSN 2249-2011

आचार्य हस्ती दीक्षाशती

व्यक्तित्व-विकास एवं समस्याओं के समाधान में स्वाध्याय तथा सामायिक की भूमिका

पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज चौपड़ा

परमपूज्य परमश्रद्धेय युगमनीषी आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज साहब के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल उनकी विचारधारा एवं चिन्तन को जन-जन तक पहुँचाने हेतु कोविड-19 के संकट के कारण वेबिनार आयोजित कर रहा है। इस वर्ष के तीसरे वेबिनार का मुख्य वक्ता मुझे नियोजित कर मुझे विषय दिया गया-''व्यक्तित्व-विकास एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान में स्वाध्याय एवं सामायिक की भूमिका।''

इसके पूर्व कि हम व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक समस्याओं पर बल दें, पहले यह समझना जरूरी है कि स्वाध्याय और सामायिक क्या हैं, इनका अर्थ और प्रयोजन क्या है तथा इनका आपसी सम्बन्ध एवं महत्त्व क्या है? इसी विवेचन में प्रसङ्गवश व्यक्तित्व-विकास एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान पर भी विचार कर लिया जायेगा। वस्तुतः स्वाध्याय और सामायिक उनके जीवन के मूल मन्त्र एवं उनकी आध्यात्मिक पहचान भी थें।

स्वाध्याय-अध्यात्म योगी युगमनीषी पूज्य आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. ने ज्ञान-चेतना जागृत करने तथा भीतर की ज्ञान ज्योति प्रज्वलित कर जीवन को सदाचार एवं सद्-संस्कारों के उज्ज्वल प्रकाश से आलोकित करने हेतु स्वाध्याय करने का सन्देश जन-जन के हितार्थ प्रचारित किया। उनका यह घोष था कि ''हम करके नित स्वाध्याय ज्ञान की ज्योति जगायेंगे। अज्ञान हृदय को धोकर के उज्ज्वल हो जायेंगे।'' उनके कथनानुसार स्वाध्याय से जीवन के समस्त कलह-क्लेश, दुःख-द्वन्द्व, वैर-विरोध, राग-द्वेष, विषय-विकार आदि का ज्ञान पूर्वक शमन होता है। उनके अनुसार 'अध्याय' जीवन-निर्वाह की शिक्षा है तो स्वाध्याय जीवन-निर्माण की शिक्षा एवं साधन है। तभी वे सदैव इस बात पर अत्यधिक बल देते थे कि-'सज्झायम्मि रओ सया।' अर्थात् सदैव स्वाध्याय में रत रहें।

स्वाध्याय के दो प्रकार हैं। प्रथम है बाह्य (द्रव्य) स्वाध्याय एवं द्वितीय है आभ्यन्तर (भाव) स्वाध्याय। बाह्य (द्रव्य) स्वाध्याय के भी दो प्रकार हैं-प्रथम है सत्समागम यानी सत् (ज्ञानी पुरूषों) का समागम और दूसरा है सन्त-समागम। सत् पुरुषों के समागम से ज्ञानार्जन भी होता है एवं संशयों का निराकरण भी यथासम्भव होता है। जहाँ तक सन्त-समागम का प्रश्न है, उनके प्रवचनों से आत्मसाधना एवं आत्मकल्याण तो होता ही है, साथ ही संशयों का सम्पूर्ण समाधान प्राप्त होता है एवं व्यक्तित्व निर्माण तथा समस्यामुक्त बनने का मार्ग भी प्रशस्त बनता है। दूसरा है श्रेष्ठ धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन। स्वाध्याय शब्द का परिच्छेद है-सु-आङ्-अध्याय। सु का अर्थ है सुष्ठु यानी श्रेष्ठ, उत्तम आङ् का अर्थ है मर्यादापूर्वक एवं अध्याय है अध्ययन अर्थात् श्रेष्ठ एवं उत्तम धार्मिक पुस्तकों का मर्यादापूर्वक अध्ययन। इसका फलित आत्मसुधार एवं आत्मकल्याण है।

दूसरा है आभ्यन्तर (भाव) स्वाध्याय। इसमें अन्तरावलोकन, आत्मनिरीक्षण और आत्मपरीक्षण

कर आन्तरिक ज्ञान-ज्योति को जगाना होता है। यह आत्मनिरीक्षण एवं तदनुसार आत्मसंशोधन का भाव ही आन्तरिक स्वाध्याय है। इसके भी दो रूप हैं- स्वस्य अध्ययनम् (2) **स्वेन अध्ययनम्।** स्वस्य अध्ययनम् का अर्थ है-'**स्वस्य आत्मन: अध्ययनं स्वाध्याय:।**' स्वयं ही स्वयं की आत्मा का अध्ययन करना। स्वेन अध्ययन का अर्थ है स्वयं द्वारा स्वयं का अध्ययन करना। ये दोनों आन्तरिक अनुभूति के ज्ञान हैं जिनका पुस्तकीय ज्ञान से कोई लेना-देना नहीं है। इसका सम्बन्ध अन्तर की ज्ञान ज्योति से है जो अनुभूति यानी अनुभूत ज्ञान का क्षेत्र है।

वैसे भी स्वाध्याय 'छह' आभ्यन्तर तपों में चौथे स्थान पर है। इसकी महिमा का बखान आगमों कुछ इस प्रकार हुआ है-'**नवि अत्थि नवि य होइ मेसज्झाएणं समं तवो कम्मं।**' अर्थात् स्वाध्याय के समान उत्तम तप न हुआ है न होगा। '**सज्झाए वा निउत्तेणं सव्वदुक्खविमोक्खणे।**' सर्व दु:खों का विनाश स्वाध्याय से सम्भव है। '**तवसा धुणइ पुराणपावगं।**' तप करने से सारे पुराने बँधे कर्मों की निर्जरा हो जाती है। '**तवेण परिसुज्झई।**' तप आत्मा के शोधन का साधन है। '**भवकोडिसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ।**' करोड़ों जन्मों के सञ्चित कर्म तप द्वारा निर्जरित हो जाते हैं। स्वयं स्वाध्याय को लक्षित कर आगम कहते हैं कि '**बहु भवे संचियं खलु, सज्झाएणं खणे खवेइ।**' स्वाध्याय से अनेक जन्मों के सञ्चित कर्म क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं।

स्वाध्याय के माध्यम से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है, उसे आचाराङ्गसूत्र के माध्यम से इस प्रकार उद्घोषित किया गया है-'**जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ**' जो एक आत्मा को जान लेता है, वह सब कुछ जान लेता है। फिर उसके लिए कुछ भी जानना शेष नहीं रहता है। यह है स्वाध्याय का शास्त्रोक्त प्रभाव एवं महत्ता। मित्रों! जिस अध्ययन से आत्म-ज्ञान और आत्म-कल्याण सम्भव हो, ऐसे सत् शास्त्रों का अध्ययन या स्वस्य-अध्ययन ही वास्तविक स्वाध्याय है। स्वाध्याय से अन्तस में छिपे ज्ञान को प्रकाशित करके अज्ञानजन्य सारे संशय एवं विपर्यास मन से दूर हो जाते हैं। संशय दूर होते ही कर्म-बँध रुकता है एवं स्वाध्यायी की सारी तृष्णा, लालसा तथा कामना मिट जाती है। वह परमानन्द में निमग्न बन प्राणिजगत् के प्रति मैत्रीभाव से आप्लावित हो जाता है। ऐसा व्यक्ति सबको अपने में और अपने को सबमें समाया हुआ पाता है। वह सब द्वन्द्वों से परे निर्द्वन्द्व बन जाता है। निर्द्वन्द्व व्यक्ति का व्यक्तित्व उज्ज्वल एवं धवल बन जाता है और ऐसा व्यक्ति समस्त वैयक्तिक तथा सांसारिक समस्याओं से मुक्त बन जाता है।

सामायिक-श्रेष्ठ महामनीषी आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. ने मानव जो कि अपरिमित इच्छाओं, कामनाओं, वासनाओं, राग-द्वेष, विषय-विकार, माया-ममता, लोभ-अहंकार आदि के तनावों से ग्रस्त है, उसे समभाव का अमृतपान या रसास्वादन का आनन्द प्राप्त कराने हेतु सामायिक का उपदेश दिया। वस्तुत: '**समभावो सामाइए**' यानी समभाव में रमण करने का नाम ही सामायिक है। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव से आत्मस्वरूप में स्थित होने पर ही सम्यक् भाव सामायिक सम्पन्न होती है। समभाव का साधक ही गुणानुरागी बन सकता है। सामायिक समता-प्राप्ति, राग-द्वेष-मोह-विमुक्ति, आत्म-स्थिरता, सावद्ययोग-त्याग, आर्त्त-रौद्र ध्यान-परिहार और सर्व जीवों से मैत्री-भाव रखने का अमोघ साधन है। इसमें चित्त-शोधन के साथ, सुख-दु:ख, जीवन-मरण, निन्दा-प्रशंसा, मान-अपमान में सम रहकर मोक्ष-प्राप्ति का प्रबल पुरुषार्थ छिपा है। दु:ख का मुख्य कारण आर्थिक-विषमता से अधिक मानसिक विषमता है जिसका निराकरण एकमात्र समत्व की साधना से ही सम्भव

है। वस्तुत: सामायिक दो शब्दों का योग है-सम + आय। सम-राग-द्वेष मोहरहित स्थिति है और आय का अर्थ है लाभ। अर्थात् जिस क्रिया से राग-द्वेष-मोह समाप्त हो समभाव की आय होती है, उस क्रिया को ही सामायिक कहते हैं। कहा भी है, **जो समो सव्व भूएसु तसेसु थावरेसु य। तस्स सामाइयं होइ, इइ केवलिभासियं।** यानी निश्चय दृष्टि से त्रस-स्थावर जीव मात्र पर समभाव रखने वाले के सामायिक होती है। ऐसा जिनेन्द्र भगवन्तों का कथन है। जब सावद्य योग का मुहूर्त्तभर के लिए त्याग किया जाता है, मन, वचन एवं काया से अर्थात् कोई भी पाप प्रवृत्ति नहीं की जाती है तो उसके सामायिक होती है। सावद्य योग है-हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील-सेवन और परिग्रह-ममत्व का त्याग। मित्रों! आप सहज कल्पना कर सकते हैं कि जिसने हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील एवं परिग्रह ममत्व का त्याग कर दिया है, वह व्यक्तित्व कितना निर्मल, सात्त्विक और कलुषरहित होगा, ऐसे व्यक्तित्व के विकास की मात्र कल्पना ही की जा सकती है एवं जिस जीवन में न हिंसा है, न झूठ है, न चोरी है, न कुशील है और न ही परिग्रह का ममत्व है, उस जीवन में कोई समस्या नज़दीक भी फटक जाये इसकी सम्भावना नगण्य है।

वस्तुत: संसार के समस्त दु:ख-द्वन्द्व, कष्ट-क्लेश और विषय-विकार चित्त के विषम भावों की उपज हैं जिनका विनाश समभाव से ही सम्भव है। वैसे सामायिक का धन-वैभव तथा शारीरिक सुख सुविधा से कोई लेना-देना नहीं है। यदि यह हो तो समत्व भाव आना अति कठिन है। समता तो आन्तरिक विषमता को दूर करने पर ही प्राप्त होती है। व्यक्ति जब कामना-मुक्त होता है, तब समता का अवतरण होता है। कहा भी है-'**कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं।**' अर्थात् कामना-मुक्ति से ही दु:ख मुक्ति सम्भव है। समत्व के सेवन से समस्त आन्तरिक व्याधियाँ एवं वैभाविक परिणतियों से मुक्ति प्राप्त होती है। व्यक्ति के भीतर में जब सामायिक उतरती है तो वह समत्व के दिव्य आलोक से भावित हो जाता है एवं तब उसे न नाम की भूख रह पाती है न ही मत-पन्थ और सम्प्रदाय के मोह-ममत्व का आग्रह रह पाता है। वह फिर नि:सङ्ग, निस्पृह और निरासक्त बन गुणग्राहकता के क्षेत्र में प्रवेश पा लेता है एवं तब उसके हृदय से प्रार्थना का यह स्वर फूट उठता है-''जिसने राग-द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया। सब जीवों को मोक्ष-मार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया। बुद्ध, वीर, जिन हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो। भक्ति-भाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो।'' उसके लिए राग-द्वेष, मोह और काम की समाप्ति तथा मुक्ति-मार्ग के उपदेश ही महत्त्वपूर्ण रह जाते हैं। सारे नाम, मत सम्प्रदाय पन्थ आदि गौण हो जाते हैं। फिर तेरे-मेरे का चक्कर ही समाप्त हो जाता है। ऐसा व्यक्ति राग-द्वेष, विषय-कषाय, मोह-ममत्व विजेता को ही अपना आराध्य मानता है। ऐसे दिव्य एवं भव्य व्यक्तित्व के आलोक में व्यक्ति का जीवन न सिर्फ समस्या-मुक्त बन जाता है वरन् वह किसी व्यक्तित्व या सामाजिक समस्या का निमित्त भी नहीं बन पाता है। जीवन की एवं व्यक्तित्व की यह उज्ज्वलता एवं सात्त्विकता समत्व का ही सद्प्रभाव है।

सामायिक तन और मन दोनों की साधना है। तन से इन्द्रिय नियन्त्रण किया जाता है एवं मन से उद्वेग एवं चाञ्चल्य का निरोध तथा नियन्त्रण किया जाता है। चाञ्चल्य-निरोध का अर्थ है समस्त संकल्प-विकल्पों एवं राग-द्वेष मोह जन्य प्रवृत्तियों का निरोध। आचार्य हेमचन्द्र योगशास्त्र के माध्यम से सामायिक के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए फरमाते हैं-''निरवद्य सामायिक का आलम्बन लेकर मनुष्य आधे क्षण में जितने कर्म क्षय कर डालता है

उतने कर्मों की निर्जरा वह करोड़ों वर्षों के उग्र तप से भी नहीं कर पाता।'' मित्रों! सामायिक इतनी महत्त्वपूर्ण है।

यह निश्चित है कि जिनके जीवन में सामायिक और स्वाध्याय की साधना फलीभूत होती है, उन व्यक्तियों का जीवन उन्नत और शान्त, सरल, सात्त्विक, निर्मल एवं निर्द्वन्द्व बन जाता है। यह व्यक्तित्व विकास की पराकाष्ठा है। ऐसा उज्ज्वल, दिव्य एवं भव्य व्यक्तित्व समस्त वैयक्तिक एवं सामाजिक समस्याओं से मुक्त बन जाता है। इसी में समाज की शान्ति और समस्या मुक्ति का राज भी छिपा है। वैसे मित्रों! सामायिक-स्वाध्याय व्यक्तित्व-विकास, समस्या-मुक्ति का अमोघ साधन है पर सामायिक का सामाजिक समस्याओं के निराकरण से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है।

प्रभु महावीर फरमाते हैं कि, '**आया खलु सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे।**' अर्थात् आत्मा ही सामायिक है एवं आत्म-स्वरूप की प्राप्ति या साक्षात्कार ही सामायिक का लक्ष्य है। अतएव सामायिक पूर्णतया वैयक्तिक, आत्मिक साधना है। अलबत्ता समाज व्यक्तियों से तथा राष्ट्र समाजों से बनता है। अतएव जिस हद तक व्यक्ति सुधरता है, समाज और राष्ट्र भी परोक्ष में उस हद तक सुधरता है। तभी आचार्य तुलसीजी फरमाते हैं कि-**सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।** आचार्य हस्तीमलजी का घोष है कि ''**सामायिक से जीवन सुधरे, जो अपनावेला। निज सुधार से देश जाति सुधरी हो जावेला।**'' यह सुधार परोक्ष है। स्वाध्याय चिन्तन और विचार-वारिधि का क्षेत्र है। अत: वह सीधा भी सामाजिक समस्याओं के निराकरण का मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम है।

मित्रों! सामायिक-स्वाध्याय एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। शास्त्रों का उद्घोष है, ''ज्ञान-क्रियाभ्यां मोक्ष:।'' अर्थात् ज्ञान और क्रिया का समन्वित स्वरूप ही मोक्ष का साधन है। आचार्य हस्ती का घोष है कि, '**सामायिकस्वाध्यायाभ्यां मोक्ष:।**' अर्थात् सामायिक एवं स्वाध्याय का समन्वित स्वरूप ही मोक्ष-प्राप्ति का साधन है। वस्तुत: स्वाध्याय एवं सामायिक में चोली-दामन, माखन-मिश्री तथा दुग्ध-शक्कर का न बिछुड़ने वाला सम्बन्ध है। स्वाध्याय मार्ग है तो समता मञ्ज़िल है। स्वाध्याय साधन है तो समता साध्य है। स्वाध्याय निमित्त है तो समता निष्पत्ति है। स्वाध्याय जीवन का निष्कर्ष है तो समता जीवन का उत्कर्ष है। स्वाध्याय दु:ख और पाप-मुक्ति का साधन है तो समता कर्मों की निर्जरा एवं मोक्ष-प्राप्ति का साधन है। स्वाध्याय आगाज है तो समता पूर्णाहुति है। स्वाध्याय विचार-वारिधि के परिष्कार और परिशोधन का माध्यम है तो समता उस परिष्कार तथा परिशोधन की सार्थक एवं सर्व समर्थ, क्रियात्मक उपलब्धि और निर्मल निधि है। स्वाध्याय विचार-शुद्धि है तो समता जीवन-सिद्धि है। स्वाध्याय से दु:ख-द्वन्द्व, क्लेश-कलह, वैर-विरोध और विषय-विकार का ज्ञानपूर्वक शमन होता है तो सामायिक तनावग्रस्त मानव को विभाव से स्वभाव में स्थापित करने की प्रक्रिया एवं सद्प्रयास है।

आचार्य हस्ती का एक भजन है, ''सामायिक साधन कर लो।'' मैं ऊपर कह आया हूँ कि स्वाध्याय साधन है और समता सिद्धि है। अतएव सामायिक-स्वाध्याय के समन्वित स्वरूप को प्रभावी रूप से प्रस्तुति हेतु मैं उन्हें इस प्रकार प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जीवन उज्ज्वल करना चाहो तो,
सामायिक स्वाध्याय करो।
आकुलता से बचना चाहो तो,
सामायिक स्वाध्याय करो।1।
तन-धन परिजन सब सपने हैं,
नश्वर जग में नहीं अपने हैं।

अविनाशी सद्गुण पाना चाहो तो,
सामायिक स्वाध्याय करो।2।
सब जग जीवों से बंधु भाव,
अपनालो तज के वैर भाव।
सब जन के हित में सुख मानो तो,
सामायिक-स्वाध्याय करो।3।
मत खेल कूद निंदा विकथा में,
जीवन-धन बर्बाद करो।
सद्ग्रन्थ पढ़ो, सत्संग करो,
सामायिक-स्वाध्याय करो।4।

यह प्रयत्न स्वाध्याय एवं सामायिक के समन्वित प्रयास से जीवन को उज्ज्वल एवं परिष्कृत कैसे किया जावे, इस उद्देश्य से किया गया है। इसमें व्यक्तित्व विकास एवं समस्या मुक्ति के प्रयास भी अन्तर्निहित हैं।

स्वाध्याय के नवनीत से समत्व, व्यक्तित्व विकास एवं समस्यामुक्ति के सूत्र कैसे उद्घाटित होते हैं, उसके कुछ आयाम आपके सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहा हूँ जिन पर कृपया ध्यान दें और गौर करें।

(1) **मैं कौन मेरा कौन?**–जब अन्तर में गहरे में प्रवेश करते हैं तो पहला यक्ष प्रश्न हमारे सामने उपस्थित होता है कि मैं कौन? मेरा कौन? स्वाध्याय के सागर में जब गहरे में डुबकी लगाते हैं तो जो पहला मोती हाथ लगता है वह समाधान प्रस्तुत करता है कि हे जीव! तुम, शुद्ध, निरञ्जन, निराकार, अजर, अमर, अविनाशी आत्मा हो। न कोई तुम्हारा है एवं न ही तुम किसी के हो। जब जिस शरीर को लेकर तुम पैदा हुए हो वह भी तुम्हारा नहीं है तो माता-पिता, पत्नी-पुत्र-पुत्री परिवार, प्रियजन व परिजन तुम्हारे हो भी कैसे सकते हैं। यह सारे संयोग सम्बन्ध हैं जिनका वियोग निश्चित एवं अवश्यम्भावी है। तब आगम वाणी का स्वाध्याय प्रभु वचनों की याद दिलाता है कि **''एगोहं नत्थि मे कोई नाहमन्नस्स कस्सइ। एवं अदीणमणसो अप्पाणमणुसासइ।।''** साधक प्रसन्न भाव से समझे कि मैं अकेला हूँ, मेरा कोई नहीं है और मैं भी किसी दूसरे का नहीं हूँ। फिर प्रभु फरमाते हैं-**'एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसण-संजुओ। सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग-लक्खणा।।'** अर्थात् ज्ञान-दर्शन स्वरूप मेरा आत्मा अकेला है और शाश्वत है। आत्मा के अलावा सब देहादि पदार्थ बाह्य (आत्मा से भिन्न) यानी पर हैं। वे सब केवल संयोग मात्र हैं। इससे यह धारणा दृढ़ होती है कि केवल मेरी आत्मा मेरी है शेष सब पर है। कहा भी है-**अकेळो आयो रे बंदा, एकळो ही जायेळा, भाई बंधु व कुटुंब-कबीळो अठे ही रह जावेळा।।** इस भाव से व्यक्ति नि:सङ्ग एवं निरासक्त बन जाता है एवं उसके हृदय से प्रार्थना के ये स्वर फूटते हैं कि हे प्रभो! मुझे यह शक्ति दें कि मेरा किसी से न वैर हो, न विरोध हो, न ईर्ष्या हो न द्वेष हो, न किसी से छल, कपट या मायाचार करूँ न काम, क्रोध कर किसी का अहित करूँ और न ही किसी से मोह करूँ। ये एवं इससे मिलते-जुलते भाव किसी के प्रति करूँ नहीं कराऊँ नहीं और करते को भला जानूँ नहीं। फिर भी ऐसा कृत्य हो जाये या ऐसा विचार भी मन में आ जाये तो मैं छह काय चौरासी लाख योनि से बारम्बार क्षमायाचना करता हूँ। वे मुझे क्षमा करें, मैं उनको क्षमा करता हूँ।

जब न किसी से वैर है न विरोध है, न ईर्ष्या है न द्वेष या छल कपट है और जब सबसे क्षमा माँगने एवं सबको क्षमा करने का भाव हो, तो ऐसा व्यक्तित्व कितना निर्मल, स्वच्छ होगा, इसकी सहज कल्पना की जा सकती है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में कोई समस्या आवे इसकी सम्भावना नगण्य है। जब वैर, विरोध, ईर्ष्या, द्वेष नहीं है तो समत्व को सधते कितनी देर लगती है। इन बातों को एक

उदाहरण से समझें। प्रसन्नचन्द राजर्षि प्रभु महावीर के दीक्षित राजराजेश्वर हैं। ध्यानमग्न खड़े हैं। महाराज श्रेणिक की सवारी पास में निकलती है। महाराज श्रेणिक मन ही मन बडे. प्रमुदित और प्रभावित होते हैं एवं राजर्षि को महान् योगी बता उनकी प्रशंसा करते हैं। पीछे महाराज श्रेणिक के दो वाचाल सैनिक आते हैं और कहते हैं कि काहे का योगी, ढोंगी है ढोंगी। छोटे से बच्चे के भरोसे राज्य छोड़ कर दीक्षित हो गया है। अब पड़ौसी राजा ने इसके राज्य पर आक्रमण कर दिया है। बच्चे और परिवार की जान तो जायेगी ही, राज भी जाने ही वाला है। इतना सुनना था कि प्रसन्नचन्द राजर्षि का ध्यान पलटा एवं वे मन में सोचते हैं कि मेरे रहते कौन मेरे पुत्र तथा परिवार को मार सकता है और मेरे राज्य को छीन सकता है? वे पड़ौसी राजा से उस स्थिति में भी भयंकर युद्ध में रत हो जाते हैं। महाराज श्रेणिक प्रभु से पूछते हैं कि यदि अभी प्रसन्नचन्द राजर्षि काल करें तो कौनसी गति में जायेंगे तो प्रभु फरमाते हैं-''सातवीं नरक में।'' जब लड़ते-लड़ते सारे शस्त्र समाप्त हो जाते हैं और शत्रु-राजा से रूबरू (आमने-सामने) होते हैं तो उसका सिरच्छेद करने अपने तीक्ष्ण मुकुट से वार करने अपने सिर पर हाथ डालते हैं और जब वहाँ मुण्डित मस्तक को पाते हैं तो तुरन्त सम्भलते हैं कि मैं किस कीचड़ में फँस गया? मैं तो प्रभु का दीक्षित सन्त हूँ। मैं तो शुद्ध निरञ्जन निराकार आत्मा हूँ। मेरा कौन पुत्र, कौन परिवार, कौन राज्य? मैं कहाँ भटक गया। भावना का शुद्धीकरण कर पश्चात्ताप के माध्यम से वहीं खड़े-खड़े कैवल्य को प्राप्त कर लेते हैं। वे अपनी जगह से हिले-डुले भी नहीं पर मेरा पुत्र, परिवार और राज्य उन्हें सातवीं नरक का मेहमान बना देता है तो शुद्ध, निरञ्जन निराकार आत्मा का भाव उन्हें केवलज्ञान प्रदान कर जाता है। यह स्वाध्याय के नवनीत से सम्यक्त्व-प्राप्ति, व्यक्तित्व-विकास और समस्या मुक्ति का पहला सोपान या पायदान है।

(2) आत्म-एकत्व-स्वाध्याय के सागर में जब गहरे में डुबकी लगाते हैं तो जो दूसरा मोती हाथ लगता है, वह है ''आत्म एकत्व का भाव'' यानी हर आत्मा में परमात्मा का निवास है और हर आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है। तब महावीर का घोष याद आता है कि ''एगे आया'' यानी तत्त्वत: सारी आत्माएँ एक हैं। 'एगा मणुस्सजाई' आत्मदृष्टि से सारे मनुष्य एक हैं। '**अत्तसम मनिज्ज छप्पिकाये**' छह काय के जीवों की आत्मा को अपनी आत्मा के समान मानो। इस स्थिति में गैर कोई रह ही नहीं जाता। सब अपने हो जाते हैं। तब स्वाध्याय का नवनीत आचाराङ्गसूत्र के माध्यम से यह प्रेरणा प्रदान करता है कि-''**पुरिसा तुमंसि नाम तं चेव, जं हंतव्वं ति मन्नसि, जं अज्जावेयव्वं ति मन्नसि, जं परितावेयव्वं ति मन्नसि, जं परिघेतव्वं ति मन्नसि, जं उद्दवेयव्वं ति मन्नसि।**'' अर्थात् हे जीव! जिसे तू मारना चाहता है, सताना और परिताप देना चाहता है, गुलाम बना शासित करना चाहता है और जेल में डाल दण्डित करना या डराना-धमकाना चाहता है, वह और कोई नहीं तू स्वयं है। यह आत्म एकत्व का भाव समत्व की प्राप्ति, व्यक्तित्व-विकास तथा समस्या-मुक्ति का दूसरा पायदान या सोपान है। जब सब अपने हैं तो व्यक्तित्व निर्मल एवं निर्द्वन्द्व बन जाता है। समस्या रह ही नहीं जाती तथा समत्व का अमृत-पान हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने को सभी में और सभी को अपने में समाविष्ट पाता है।

(क्रमश:)

सिरेह सदन, 20/33, रेंनु पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 29
ISSN 2249-2011

चिन्तन

साधना में तनाव बाधक

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

साधक तनाव ग्रस्त क्यों?

आज अधिकांश साधकों, उपासकों, ऋषि, मुनियों की मन:स्थिति शान्त नहीं है। दीर्घकालीन साधना एवं क्रियाओं को करने के उपरान्त भी मनोवृत्तियों में परिवर्तन बहुत कम हो पा रहा है। बाह्य मुस्कुराहट एवं आचरण के पीछे तनाव स्पष्ट झलकता है, जिसको प्रमाद, आलस्य, अरुचि, अविश्वास, परदोष-दृष्टि, दुर्भावना, निन्दा, घृणा, राग, द्वेष, घमण्ड, असन्तोष, मायावी आचरण इत्यादि के रूप में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है।

गुण-ग्राहकता का अभाव होता जा रहा है एवं पूर्वाग्रहों के कारण अपनी मान्यताओं से ऊपर उठकर हम सोचने एवं अच्छाई देखने तक तैयार नहीं। प्राय: हमारा दृष्टिकोण एकान्तवादी एवं संकुचित होता जा रहा है। 'गुणिषु प्रमोदम्' एवं सुकृत अनुमोदना की भावना लुप्त होती जा रही है। आत्म-चिन्तन एवं स्व-निरीक्षण प्राय: गौण हो रहा है। अनेकान्त सिद्धान्त का महत्त्व समझने वाले भी विचारों का पूर्वाग्रह नहीं छोड़ पा रहे हैं। साधना की विभिन्न पद्धतियों के मतभेद हमारे मनभेद बढ़ाकर व्यर्थ ही हमारी शान्ति भङ्ग कर रहे हैं। हम नहीं समझ पा रहे हैं कि जो भी साधना जीवन में समभाव लाती है, वीतरागता की तरफ बढ़ाती है, करणीय है एवं इसके विपरीत जो राग-द्वेष बढ़ाती है, इन्द्रिय-विषय कषायों को प्रोत्साहन देती है अकरणीय है, भले ही किसी भी नाम, रूप एवं पद्धति से की जावे। आत्मावलोकन ही साधना का उद्देश्य होता है। जहाँ इन सिद्धान्तों की उपेक्षा होती है, वहाँ साधक मन ही मन तनाव ग्रस्त रहता है। सम्यक् श्रद्धा, चिन्तन, तर्क एवं आचरण ही तनावमुक्त करने में सहयोगी बन सकते हैं।

साधना के बदलते मापदण्ड

कहीं पर बाह्य अनुशासन, नियन्त्रण, एकरूपता एवं अच्छा व्याख्यान ही समाज के लिए साधना की योग्यता के मापदण्ड बनते जा रहे हैं, भले ही साधना के क्षेत्र में शिथिलाचार, स्वच्छन्दता, प्रदर्शन का दोहरा आचरण हो रहा हो। प्रचार-प्रसार को प्राथमिकता देने की आड़ में शिथिलाचार, स्वच्छन्द मनोवृत्ति एवं मूल सिद्धान्तों की अवहेलना दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। धार्मिक क्षेत्र में प्राय: चिन्तनशील जानकार श्रावकों के स्थान पर पद एवं पैसे वालों का वर्चस्व एवं हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा है। प्रमुख पदाधिकारियों के चयन में भी धार्मिक सिद्धान्तों की जानकारी तथा उसका जीवन में आचरण एवं समय के भोग जैसे महत्त्वपूर्ण पक्ष को प्राथमिकता नहीं दी जा रही है। समयाभाव के कारण माता-पिता के रूप में संघ का दायित्व निभाने वाले पदाधिकारियों को सन्तों की मन:स्थिति का सही अनुमान नहीं लगता। संघ तो गुणियों का होता है। परन्तु आजकल अधिकांश धार्मिक संघ उस मापदण्ड पर खरे नहीं उतर रहे हैं।

आत्मार्थी साधक भी बुराई को बुरा मानते हुए भी दृढ़ मनोबल के अभाव में बुरा कहने का साहस नहीं जुटा पाते। उनकी दुविधाओं, भावनाओं एवं मन:स्थिति को समझने का किसी को समय नहीं है। अधिकांश साधकों की साधना आज क्यों निष्प्राण होती जा रही है? श्रमणों की साधना में हम कैसे सहयोगी बन सकते हैं, समाज का इस दिशा में चिन्तन प्राय: सुप्त हो गया है। साधकों की

योग्यताओं, प्रतिभाओं एवं क्षमताओं का साधना में समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। उनकी सम्यक् शंकाओं का समाधान नहीं हो पा रहा है। फलत: साधना भार स्वरूप प्रतीत हो रही है। साधना के प्रति जितना प्रमोद, रुचि, उत्साह, सजगता एवं सतर्कता होनी चाहिये, प्राय: दृष्टिगत नहीं हो पा रही है। जिस उत्साह एवं भावना के साथ साधना के पावन क्षेत्र में वे प्रवेश करते हैं, साधारण सी प्रतिकूल परिस्थितियों एवं परीषह के आते ही अपना धैर्य खो बैठते हैं। मन को अस्थिर बना, चिन्तन की धारा बदल देते हैं।

अपने सहयोगियों की उपेक्षा-वृत्ति, दुर्भावना, अविश्वास, भेदभावपूर्ण आचरण एवं व्यवहार के कारण चन्द साधकों की मन:स्थिति स्पष्ट नहीं है। लोक-व्यवहार एवं वेश की मर्यादा के कारण वे मन ही मन उलझन में हैं। वे न तो अपनी व्यथा किसी को सुना सकते हैं और न कोई आत्मीयता के साथ सुनकर समाधान करने के लिए सचेष्ट है। तनाव के पीछे चाहे जो कारण रहे हों, साधक को साधना से विचलित करते हैं एवं स्वयं के लक्ष्य से भटकाते हैं।

प्रतिदिन दोनों समय प्रतिक्रमण के माध्यम से आत्मावलोकन करने वाले प्राय: इस बात का चिन्तन तक नहीं करते कि वे क्यों अशान्त एवं तनाव-ग्रस्त हैं? उनमें समभाव का कितना विकास हुआ है? कहीं वे साम्प्रदायिक कट्टरता से तो ग्रसित नहीं हैं। तनाव का कारण कहीं उनकी व्यक्तिगत अपेक्षाएँ एवं महत्त्वाकांक्षाएँ तो नहीं है?

प्रत्येक साधक को शान्त मन से पूर्वाग्रह छोड़कर इस बात का चिन्तन करना होगा कि क्या हमारा स्वयं का आचरण एवं व्यवहार तो तनाव के लिये जिम्मेदार नहीं है? कहीं तनाव उनमें कषायों की अभिवृद्धि तो नहीं कर रहा है? तनाव हमारे मूल गुणों का घातक तो नहीं बन रहा है? शान्ति तथा चित्त की निर्मलता के बिना साधना के पावन उद्देश्यों को कैसे प्राप्त करेंगे? उनके चेहरे पर जो त्याग, तप एवं संयम का ओज-तेज देदीप्यमान होना चाहिए वह क्यों नहीं झलक रहा है? उनकी विश्वसनीयता चन्द अन्ध श्रद्धालुओं तक ही क्यों सीमित हो रही है? क्या उनका आचरण सिद्धान्तों एवं मर्यादाओं के अनुकूल है? जन साधारण जिन गुणों की कल्पना से उन्हें आदर, वन्दन, नमस्कार करता है, यदि साधक उन गुणों से वञ्चित है तो क्या कर्ज़ का भागीदार तो नहीं बनता है? उनकी कथनी-करनी में विरोधाभास तो नहीं हैं? जीवन में लुकाव-छिपाव जैसी मायावी स्थिति तो नहीं हैं?

स्वयं की मन:स्थिति उनसे छिपी हुई नहीं है। क्या साधक अपने आपको स्वयं के प्रति ईमानदार होने का दावा कर सकते हैं? वे ही अपने सच्चे समीक्षक, निरीक्षक एवं परीक्षक होते हैं। दुनिया भले ही बाह्य क्रियाओं एवं वेश से, उनके आचरण से धोखा खा जाए, किन्तु वे अपने आपको धोखा नहीं दे सकते। उत्कृष्ट साधकों का निरन्तर स्मरण करने से उनमें आत्म-विश्वास जागृत होगा एवं साधक साधना के प्रति सजग, सतर्क एवं सक्रिय होने से तनावमुक्त बनेगा।

संयमी साधकों की साधना में श्रावकों की भूमिका

साधकों में तनाव को समझने के लिये साधना की प्राथमिकताओं, मूल सिद्धान्तों के पालन में सहयोगी तत्त्वों, व्यवस्थाओं, वातावरण एवं परिस्थितियों का अध्ययन करना होगा। हमें भी अपने दायित्वों एवं कर्त्तव्यों को सजगतापूर्वक निभाना होगा तथा अपने से सम्बन्धित तनाव के कारणों को दूर करना होगा। आज अधिकांश समाज धार्मिक ज्ञान से परे होता जा रहा है। यहाँ तक कि धार्मिक संस्थाओं में कार्यरत पदाधिकारियों को मूल सिद्धान्तों की सामान्य जानकारी तक नहीं है। भौतिक उपलब्धियों से प्राप्त सहयोग की आकांक्षाओं से नेतृत्व का भार

उनको सौंप दिया जाता है। विषम परिस्थितियों में वे ही सलाहकारों की भूमिका निभाते हैं। जो श्रावक साधु समाज के लिये माता-पिता के तुल्य होते हैं, सामान्य जानकारी के अभाव में, वे साधकों की साधना में कैसे सहयोगी बन सकते हैं?

साधना की पात्रता के आवश्यक मापदण्डों की जानकारी के अभाव में अधिकांश समाज सिद्धान्तों के प्रतिकूल आचरणों को बुरा तक नहीं मानता। समय की आवश्यकता के नाम पर, नियम-मर्यादाओं में छूट का पक्षधर बन, साधकों को प्रमादी बनाने में सहयोगी बनता जा रहा है। अपने उत्तरदायित्वों एवं कर्त्तव्यों के पालन, संघ व्यवस्थाओं में साधकों को उलझाकर उनकी साधना में व्यवधान पैदा कर रहे हैं। श्रावक समाज अपनी सजगता, निष्ठा खो रहा है एवं जो कार्य साधकों की मर्यादाओं के प्रतिकूल हैं, उन्हें करने अथवा परामर्श हेतु निरन्तर प्रेरित करते संकोच नहीं कर रहा है।

साधक दोहरे आचरण में उलझता जा रहा है। फलत: साधना हेतु जो आचरण त्याज्य हैं, उन्हें करते संकोच नहीं हो रहा है। दोहरा चिन्तन एवं आचरण ही तनाव का मुख्य कारण होता है। अत: श्रावक समाज का परम दायित्व है कि साधकों की साधना के पावन उद्देश्यों की तरफ सदैव सजग रखने का विवेक रखे। व्यवस्थाओं एवं कार्यप्रणालियों का सञ्चालन इस प्रकार किया जावे, जिससे साधकों की साधना में दोष न लगें। उनकी समस्याओं, भावनाओं का विवेकपूर्ण मर्यादाओं के अनुकूल सम्यक् समाधान हो। उनकी साधना में सहयोगी बन, मन:स्थिति तनावमुक्त रखने हेतु प्रेरित करें। इसके लिए आवश्यक है-सम्पूर्ण समाज में धार्मिक ज्ञान के प्रति चेतना जागृत की जावे एवं प्रमुख पदाधिकारियों का चयन करते समय इस मापदण्ड की उपेक्षा न हो, अपितु सर्वाधिक प्राथमिकता दी जाये।

जब हम स्वयं अस्पष्ट हैं, अस्थिर हैं, भ्रमित हैं, पूर्वाग्रहों एवं अन्ध श्रद्धा से ग्रसित हैं, हमारा आचरण संदिग्ध हैं, तो साधकों के प्रति अपना कर्त्तव्य कैसे निभा पायेंगे? वास्तव में यह चिन्तन एवं चिन्ता का विषय है। जो श्रावक समाज इस दिशा में जागरूक हैं, विवेकशील हैं, प्रयत्नशील हैं, वहाँ साधकों में व्यर्थ प्रपञ्चों से दूर रहने के कारण तनाव कम देखने में आता है। कभी-कभी जब समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को साधकों से अपेक्षित आदर-सत्कार के स्थान पर उपालम्भ मिलता है तो उनके अहम् पर चोट लगती है। उनकी दृष्टि साधकों के दोषों को देख उनकी कमज़ोरियों का मिथ्या एवं भ्रामक प्रचार करने की हो जाती है। उनका ऐसा आचरण भी साधकों के तनाव का कारण बन सकता है। ऐसे तनावग्रस्त साधकों को चिन्तन करना होगा कि वाणी का अविवेक तनाव का मुख्य कारण होता है। अत: अपनी भाषा-समिति पर विशेष नियन्त्रण रखने का प्रयास करें। द्रौपदी के शब्द-''अन्धे के पुत्र अन्धे ही होते हैं।'' जीवन पर्यन्त तनाव के कारण बने। जहाँ वाणी में मधुरता है, वहाँ ऐसा तनाव नहीं हो सकता।

साधक की सजगता महत्त्वपूर्ण

कभी-कभी जब चिन्तनशील, अनुभवी श्रावक विवेकपूर्वक साधकों को उनके शुद्ध स्वरूप के बारे में सजग करते हैं, साधु-मर्यादाओं का ध्यान दिलाते हैं तो साधकों के अहम् पर चोट पहुँचती है। वे उन्हें अपने मार्ग का काँटा समझने तक की भूल कर देते हैं। उनकी उपस्थिति मात्र साधकों को तनावग्रस्त बना देती है। वे उन्हें साधना में सहायक समझने के स्थान पर अपना प्रतिद्वन्द्वी समझ ''छोटे मुँह बड़ी बात'' करने का आरोप लगाते तनिक भी संकोच नहीं करते। जहाँ मायावृत्ति है, गुण-ग्राहकता नहीं है, स्वदोष दर्शन नहीं है, पूर्वाग्रह है, वहाँ तनाव स्वाभाविक है। यदि साधक उन्हें अपना हितचिन्तक समझ अपने आचरण में सुधार करें तो उनका तनाव

समाप्त हो सकता है। ऐसे प्रसङ्गों पर साधकों को गणधर गौतम की उस घटना का अवश्य स्मरण करना चाहिये, जब उन्होंने अपनी गलती के लिए, आनन्द श्रावक से क्षमा माँगते तनिक भी संकोच एवं देर नहीं की। जहाँ ऐसी सरलता होती है, वहाँ तनाव रह नहीं सकता। गलतियों का प्रायश्चित्त करने से मन को शान्ति मिलती है एवं मन तनाव मुक्त हो जाता है। पश्चात्ताप तनाव कम करने में सहायक बनता है। इसके विपरीत जो गलती करके पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त नहीं करता, वह साधक प्राय: तनावग्रस्त रहता है।

साधना में गुरु की भूमिका

साधक को साधना हेतु सर्वाधिक प्रेरणा एवं सहयोग गुरु एवं अन्य सहयोगी साधकों से मिलते हैं। गुरु का भी कर्त्तव्य है कि जो साधक उनकी प्रेरणा से साधना के क्षेत्र में आता है, उसमें आत्मविश्वास जगावें एवं सही मार्ग दर्शन द्वारा उसकी योग्यताओं एवं क्षमताओं को विकसित करें। आत्मीयता के साथ, साधक को अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विकास करने के लिए समय-समय पर प्रोत्साहित करें। मन:स्थिति अशान्त, अस्थिर एवं तनाव ग्रस्त न बने, इस बात का सतर्कतापूर्वक ध्यान रखें। साधना से विचलित होने पर सावधान करें, परन्तु कभी भी अनुरागवश दुष्प्रवृत्तियों की अनदेखी न करें।

अपने शिष्यों को तनावमुक्त करने में वे ही अहं-भूमिका निभा सकते हैं। गुरु की सजगता, सतर्कता, आत्मीयता, सद्भाव एवं प्रेरणा ही साधना के दुर्गम पथ को सुगम बना सकती है। गुरुओं की नियमित-निरन्तर सद्प्रेरणा तथा विवेकपूर्ण आचरण एवं व्यवहार ही शिष्य को अनुकरण करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जहाँ उत्साह है, रुचि है, समर्पण एवं श्रद्धा है, वहाँ तनाव रह ही नहीं सकता। वहाँ तो साधक को एक ही तड़फन रहती है और वह है- आत्मोत्थान की। साधक प्रतिक्षण सजग, जागृत एवं अपने लक्ष्य-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है एवं सम्पर्क में आने वालों पर अपना प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहता।

कहीं-कहीं गुरु स्वयं अपनी कमज़ोरी अथवा महत्त्वाकांक्षाओं के कारण मर्यादाओं के विपरीत आचरण करते हैं एवं शिष्यों को न चाहते हुए भी उनके कार्यों का अनुमोदन करना पड़ता है, सहयोग देना पड़ता है। वे अनुशासन, निष्ठा एवं श्रद्धा से इतने अधिक कटिबद्ध होते हैं कि प्रथम तो अपनी भावना अथवा विचार अभिव्यक्त ही नहीं कर सकते, क्योंकि ऐसे आचरण अन्ध श्रद्धालुओं की दृष्टि में संगठन के प्रतिकूल अनुशासनहीनता के होते हैं। जो गुरु के प्रति निष्ठा, श्रद्धा को अविश्वसनीय बनाते हैं, ऐसे साधकों को संघ से निष्कासित, तिरस्कारित होने का भय रहता है। परम्पराओं, संगठन, अनुशासन आदि की आड़ में कोई भी सहयोग करने को प्राय: तैयार नहीं होता। ऐसे सजग साधक प्राय: तनावग्रस्त रहते हैं एवं जब उनका मनोबल दृढ़ हो जाता है तो अपने विचार रखते तनिक संकोच नहीं करते। भले ही उन्हें संगठन से अलग ही क्यों न होना पड़े।

आजकल प्राय: दीक्षा देते समय अधिकांश गुरुओं द्वारा शिष्यों का सही चयन नहीं होता, उनके संस्कारों का सजगतापूर्वक अध्ययन नहीं किया जाता और न ही साधना के पवित्र क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों, परीषहों, उपसर्गोके प्रति शिष्यों को सजग ही कराया जाता है। साधु मर्यादाओं का विस्तृत ज्ञान नहीं करवाते, परन्तु परिवार बढ़ाने के उद्देश्य से विनय, सरलता जैसे पात्रता के मूल गुणों की अवहेलना करते हुए भी संकोच नहीं करते हैं, तो ऐसे साधक साधना को भार स्वरूप समझकर तनावग्रस्त रहें तो आश्चर्य नहीं।

प्रारम्भ में तो लोक-व्यवहारों एवं जनसाधारण

की प्रतिक्रियाओं से बचने की आड़ में वास्तविकता प्रकट न हो जाए, शिष्यों के उचित-अनुचित कृत्यों की अनदेखी करने से तनावग्रस्त रहते हैं। जिस प्रकार बच्चों का भविष्य अभिभावक की सजगता, विवेक एवं अनुराग पर निर्भर करता है, यदि प्रारम्भ से उस पर नियन्त्रण न रखा जावे, हित-अहित का बोध न कराया जावे तो बड़ा होने पर उस पर अंकुश रखना कठिन होता है। उसी प्रकार जो रागवश अपने शिष्यों में प्रमाद की उपेक्षा करते हैं, प्रारम्भ से ही उनको सुसंस्कारित, सरल बनाने हेतु सजगता नहीं रखते एवं सिद्धान्तों के विरुद्ध आचरण की उपेक्षा करते हैं तो भविष्य में वे अनियन्त्रित एवं स्वच्छन्द बनकर अन्य साधकों के तनाव का कारण बन सकते हैं।

परन्तु जो गुरु अपने शिष्य से अनुशासन, नियन्त्रण, सेवा, आज्ञा पालन की तो अपेक्षा करते हैं, परन्तु उनकी मन:स्थिति को समझने का प्रयास नहीं करते, समस्याओं का सम्यक् समाधान नहीं करते एवं भावनाओं की उपेक्षा करते हैं, सहयोग, आत्मीयता का व्यवहार नहीं करते हैं तो शिष्य निराश, हतोत्साह, उदासीन, अशान्त एवं तनावग्रस्त हो, साधना के पवित्र मार्ग से भटक जाएँ तो भी आश्चर्य नहीं। विनय के अभाव में अपने प्रति उपेक्षावृत्ति देख उसके स्वाभिमान को चोट लगती है। अन्दर ही अन्दर विद्रोह की भावना पनपने लगती है एवं जब उसका विस्फोट होता है तो वाणी का संयम नहीं रह पाता। आरोप-प्रत्यारोप, निन्दा, घृणा, द्वेष, वैमनस्य जैसे अकरणीय आचरण करते हुए भी तनिक संकोच नहीं होता। साधक अपनी स्थिति एवं भान भूल जाता है, जो उनके लिए तो अहितकर है ही, जनसाधारण में भी व्यर्थ चर्चा का विषय बनता है। आपसी विश्वास की समाप्ति एवं स्वच्छन्द मनोवृत्ति साधक को तनावग्रस्त बना देती है। कभी-कभी ऐसी परिस्थितियाँ साधक के विवेकहीन आचरण एवं उसको बुरा न मानने से भी उत्पन्न हो जाती हैं। जीवन में प्राय: कुछ भौतिक उपलब्धियाँ अच्छा प्रवचन, तपस्वी होने का अहं एवं सफलता का नशा इसका मूल कारण होता है।

ऐसी परिस्थितियों में सद्भावना, वाणी का विवेक एवं सुधारवादी दृष्टिकोण ही तनाव दूर करने में सबल निमित्त बन सकते हैं। इसके विपरीत दुर्भावना, निन्दा, उपेक्षा, गलतफ़हमी, विघटन को प्रोत्साहन देती है। विघटन कभी भी तनावमुक्ति का समाधान नहीं हो सकता। समाज के शुभचिन्तकों को एकपक्षीय चिन्तन छोड़, परिस्थितियों के कारणों का चिन्तन करना चाहिये। दूसरों के दोष, कमज़ोरियाँ देखने के बजाय अपनी भूमिका का चिन्तन करना चाहिये। उसमें आवश्यक सुधार करना चाहिये। क्या उनकी उपेक्षावृत्ति इस समस्या का कारण नहीं है? ऐसे समय छोटी-छोटी बातों को तूल नहीं देना चाहिये, न प्रत्येक बात का स्पष्टीकरण देकर पुरानी बातों की चर्चा करनी चाहिए। ऐसे प्रसङ्गों पर हमारी सद्भावना, आत्मीयता, करुणाभाव, व्यापक दृष्टिकोण, विवेक ही भटके हुए साधक को पुन: अपने उद्देश्यों की ओर बढ़ने में अहम् भूमिका निभा सकते हैं। इसके विपरीत हमारी दुर्भावना, कटुता, द्वेष, अविवेक साधकों एवं समाज को तनावग्रस्त कर देंगे।

साधकों में तनाव मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है। प्रथम तो उद्देश्यों की प्राप्ति में अपेक्षित सहयोग न मिलने का। जैसे अध्ययन की भावना होते हुए भी अध्ययन न कर पाना, ज्ञान का क्षयोपशम न होना। चाहते हुए भी ध्यान, मौन, तपस्या की साधना न कर पाना, प्रमादवश अपनी क्षमताओं का पूर्ण सदुपयोग न कर पाना, आत्मार्थी गुरुओं का सान्निध्य न मिलना। निरन्तर अकारण उपेक्षित एवं प्रताड़ित होना, जैसे कारण भी साधकों का तनाव बढ़ाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में साधक को चिन्तन करना होगा कि तनाव समस्या का समाधान

नहीं, उल्टा उद्देश्य पूर्ति में बाधक होता है। उत्पन्न हुई परिस्थितियों का समभावपूर्वक सदुपयोग करने से ही तनाव कम हो सकता है।

गुरु की सेवा शिष्य का प्रथम कर्त्तव्य है। परन्तु कभी-कभी गुरु जब अनावश्यक सेवा के कारण अध्यनरत शिष्य के ज्ञानाराधन में अन्तराय का निमित्त बनते हैं तो आत्मार्थी शिष्य भी तनावग्रस्त हो जाते हैं। कभी-कभी गुरु शिष्य को साधना के क्षेत्र में उनकी क्षमताओं के उचित विकास में सहयोगी बनने के बजाय हस्तक्षेप करते हैं तो शिष्य का तनावग्रस्त रहना स्वभाविक है। गुरु का स्वविवेक एवं रुचि के अनुरूप शिष्य की क्षमताओं के उचित विकास में सहयोग से ही युवा आत्मार्थी अप्रमादी सन्तों का तनाव दूर हो सकता है।

आत्मार्थी साधक जब धार्मिक क्षेत्र में शिथिलता एवं सिद्धान्तों-मर्यादाओं के विपरीत आचरण देखते हैं, तो सहज ही तनावग्रस्त हो जाते हैं।

तनाव का एक प्रमुख कारण अपने उद्देश्यों, कर्त्तव्यों एवं सिद्धान्तों को जानते हुए भी उपेक्षावृत्ति रखना होता है। साधक का लक्ष्य एवं सिद्धान्तों के प्रति अविश्वास होने से वह प्रतिकूल परिस्थितियों एवं परीषहों को सहन करने का मनोबल खो देता है। स्वसुधार की उपेक्षा कर पर सुधार हेतु प्रचार-प्रसार के लिए अनावश्यक मर्यादाओं के विरुद्ध प्रपञ्चों में फँस जाता है। बाहर से तो अपनी भौतिक उपलब्धियों एवं अहं पूर्ति के कारण प्रसन्नचित्त रहता है, परन्तु आत्म-निरीक्षण के समय व्रतों के खण्डन के कारण अपनी भूलों का क्षणिक दु:ख अवश्य होता है।

प्रत्येक साधक को अपने-अपने तनाव के कारणों का व्यापक अध्ययन करना चाहिये। निरन्तर सिद्धान्तों से अपने आचरण की समीक्षा करने एवं सहयोगियों से अपने दोषों तथा गलतियों के बारे में जानकारी मालूम करनी चाहिए। जहाँ विनय है, मधुरता है, सरलता है, गुण-ग्राहकता है, समर्पण है, सन्तोष है, वहाँ तनाव रह नहीं सकता। परन्तु जितना-जितना इन गुणों का अभाव होगा उतना-उतना साधक तनावग्रस्त होगा। जो तनावग्रस्त होगा वह बाह्य रूप से महान् साधक होने के बावजूद भी साधना के मार्ग से भटक जाएगा। अत: साधकों को सर्वाधिक प्रयास तनावमुक्त होने का करना चाहिये। जितना-जितना साधक तनावमुक्त होगा उतनी-उतनी अन्य साधनाएँ फलीभूत होंगी।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

(शेषांश पृष्ठ 10 का)

ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को इन भोगों के दु:ख रूप परिणाम से अवगत कराते हुए कहते हैं-यह जीवन अशाश्वत है, पुण्यकर्म या शुभकर्म को नहीं करने पर जब मृत्यु का समय आता है तो मनुष्य शोक करता है एवं दु:खी होता है। उससे जीवन का वियोग सहन नहीं होता है। वह धर्म का आचरण नहीं करने के कारण इस लोक में भी दु:ख पाता है और परलोक में भी दु:ख पाता है।

कोई यह कहे कि मृत्यु के दु:ख को ज्ञातिजन, मित्रजन, पुत्र-पौत्र या बन्धुजन बाँट लेंगे तो यह सम्भव नहीं है। जिसकी मृत्यु आती है उसका दु:ख उसी को भोगना पड़ता है। परिवारजन एवं ज्ञातिजन दु:खी होकर भी न उसे बचा पाते हैं और न ही दु:ख को बाँट पाते हैं। वह स्वयं ही उस दु:ख को भोगता है, क्योंकि शुभाशुभ कर्म कर्त्ता का अनुगमन करते हैं। जिसने जैसे शुभाशुभ भावों के साथ शुभाशुभ कर्म किए हैं, उसको तदनुरूप फल भोगना होता है। पुण्यकर्म का फल सुख रूप में या विकास के रूप में तथा पापकर्म का फल दु:ख रूप में या पतन के रूप में प्राप्त होता है। इस नियम को कोई बदलने में समर्थ नहीं है।

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 35
ISSN 2249-2011

English-section

Jain History, Philosophy, Beliefs and Practice

Dr. H. Kushal Chand

Introduction

Jainism has been deemed as one of the oldest religions that exists even today and focuses on austerity through asceticism and the attainment of liberation for the seekers. This religion geographically has been located within the Indian subcontinent till the 19th century after which it has attained a somewhat global status. Jainism is now viewed as a solution to issues that the world faces today. At this time too, Jainism as a religion was one that was fully developed with all its tenets in place making a mature religion boasting a long extended period of existence. The tenets established then are the ones that are still being followed today making it a religion that has remained unchanged for more than 2,600 years. However, the time of existence is not the only factor that makes Jainism a revered religion.[1]

The religion has gained much importance owing to its extended influence over the spiritual and religious thought process of India today. The thought process that includes the concept of the world and life-negating each other has been said to be lifted from the ideals of Jainism and other similar religions that existed around the 6th century, BCE. Such a thought process is also thought to have converted the pessimistic nature of the Vedic religion into a more optimistic one with ideals such as the transmigration of the soul, aversion to the killing and sacrificing animal life, the concept of holiness (relating to ascetics), and the thought that being born into the world in itself is karmic that have been lifted from Jainism as well as other similar religions that existed during that time. Several Buddhist and Jaina texts bear evidence to the same.[2]

Historical Background of Jainism

Jainism is one of the oldest religions in India. Time and again, it was practised, perfected and preached by the legendary Tīrthaṅkara. Tīrthaṅkaras are liberated ones who have shown the path to liberation. Mahavira being the last of them, prospered in 6th century BCE. This was a time of revolutionary changes in intellectual, social and spiritual thought across the world. During that period, several distinguished spiritual and social thought leaders, such as Zoroaster in Iran, Mahavira and Gautam Buddha in India, Confucius in China and Isaiah in Israel, laid a reformative foundation for change.[3]

In India there have been many movements for religious and social reforms in response to socio-economic transformation and religious discrimination. During the Vedic period the tradition of Brahamanical religion and ritualism had become complex, hierarchical and discriminatory. Only priests were permitted to explain the *Vedic* texts, enjoyed power, wealth and social status. The rights and rituals lead to the exploitation of the common people and *Vedic* religion became both expensive and oppressive. Furthermore, the caste system rooted in the *Vedic* tradition became so rigid that the lower caste were isolated and exploited by the upper caste. The *Śramaṇa* movements, such as Jainism and Buddhism, voiced in opposition to this Brahamanical tradition and brought about several socio-religious changes.[4]

Harappan civilization

The Harappan civilization is considered

the first Indian civilization developed on the banks of Indus River; therefore, it is called the Indus Valley Civilization. This was highly developed and prosperous urban civilization. It is generally accepted that the civilization began between 2500 BCE and 1900 BCE. According to the evidence from archaeological excavations, this civilization covered large geographical areas, including Harappa, Mohenjodaro, Kalibangan, Ropar and Lothal. The people who lived in this civilization worshiped the mother goddesses, to represent earth and fertility, as the origin and source of all creation. Furthermore, they also prominently worshiped trees and animals, especially the pipal tree and the bull with a hump. Moreover, according to archaeologists and historians, excavated seals and statuettes show that these people also worshiped Tīrthaṅkaras, Shiva or his prototypes. The reasons for the decline of the Harappan civilization have been identified to be decreasing fertility, environmental degradation, epidemics, natural disasters such as earthquakes and above all the much debated Aryan invasion.[5]

Vedic period

The Vedic period started with the decline of the Harappan civilization after the Aryan invasion in around 500 BCE. During this period, Vedic Sanskrit texts were composed. Hence, this phase from the 15th to the 5th century BCE is called the Vedic Period. This period is divided chronologically into the early Vedic period (1500 BCE to 1000 BCE) and the later Vedic period (1000 BCE to 600 BCE).[6]

In this period religion centered on the worship of natural phenomena.*Indra*, *Varuna*, *Agni, Yama, Sūrya, Sāvitri, Pūshan* and *Rūdra* were important gods and goddesses, and people offered sacrifices to them. Offering sacrifices and the recitation of prayers were the dominant forms of worship. The priest did not dominate rituals and ceremonies during this period.

When Mahavira led the socio-religious reformation based on the *Śramaṇa* tradition, the society had turned into a *Varṇa*-centered society. The society was divided into four classes according to the *Varṇa* system, and it had become rigid. Thapar (2002) states that there were three preconditions that led to the society becoming *Varṇa* based and to the social order turning rigid. 1) The society in sixth century BCE was experiencing social disparities. The socio-religious division based on *Varṇa* had become concrete, and the mobility of each class of *Varṇa* was not possible. 2) There was unequal access to economic resources among various groups within society. The upper sections of *Varṇa* monopolized social and economic resources. 3) Inequalities were legitimized through a theoretically Irreversible hierarchy that had Supernatural authority.[7]

Religious Context of the Sixth Century BCE

During the Sixth Century BCE, there were two streams of religious tradition: the *Śramaṇa* traditions and the Brahmanic tradition.[8]

***Śramanic* Tradition**

When Brahmanical religion became ritual-oriented, including animal sacrifice, the domination of the priest and rigid caste divisions based on *VarṇāśramaDharma*, the non-vedic religious movements (*śramanic* movements) such as Jainism and Buddhism, led by Mahavira and Gautam Buddha, revitalized the socity in the 6th century BCE as a renovation.

The word *Śramaṇa* was derived from the Sanskrit word *śram*, which has many meanings: "to labor, to toil, to exert oneself". *Śramaṇa* means "one who practices the mendicant life". In the Jain and Buddhist Canonical texts, this term refers to the Jain and Buddhist monks. *Śramaṇas* renounce the world, follow an ascetic life to attain liberation and focus on discovering the truth and attaining true happiness, bliss or peace of mind.

According to Long (2010), there are three theories on the origins and characteristics of *Śramaṇa* movement. The first is the protest reformation theory: according to this theory, Mahavira and the Buddha where reformers within North India. During the time of Mahavira, society was divided into four Varṇas. Priests dominated the religious and social vested rights, and the lower caste were discriminated and exploited economically and religiously. The *Śramaṇa* movement protested against this social religious discrimination. Secondly, according to the indigenous reaction theory, *śramaṇa* represents a reassertion of an older, pre-vedic indigenous Indian tradition. In this view, the vedic traditions where not derived from the native Indian subcontinent, but were bought to South Asia through Indo-European migration.[9] Finally in the third theory, the lives and teachings of Mahavira and Buddha reflect the interactions between two distinct Indo-European cultural traditions : the Vedic traditions of North Western India, and the cultural traditions of the North-Eastern greater Magadha region.

The *Śramaṇic* sects did not believe in the existence of god as a creator or determiner of destiny. In contrast, people in the Vedic period believe that sacrifice was the means of appeasing and obtaining all good things from the Gods or Goddesses. Sacrifice was considered a perpetual link between human beings and the divinity. Thus, people fulfilled the religious or ritual obligations through sacrifices. In contrast, there was no place for gods or goddesses in the *Śramaṇa* tradition. *Śramaṇas* believed in finding natural laws through the endeavors without the intervention of the divine entity. A person did not owe anything to a God in exchange for favours or blessings, but relied on their own actions and efforts, which is called *karma*.

The common features of *Śramanic* sectors were, they challenged the authority of the Vedas, they accommodated everyone, irrespective of caste, into their community (Sangha), they observed a set of ethical norms, they were detached from the world and they led a life of renunciation.[10]

***Brahmanic* Tradition**

The Brahmanic tradition was entirely based on the Vedas, such as the Ṛgveda, Sāmaveda, Yajurveda and Atharvaveda. Therefore, besides Brahmanism, it is also called Vedism. The word "Veda" comes from the Sanskrit word "vid", which means "to know". Veda is a collection of prayers and hymns offered to the Gods. First, the Ṛgveda is a collection of 1028 hymns used at the sacrifices of the Aryan cult; it provides information about the lives of people during the early Vedic period. Second, the Sāmaveda is not historical book, but a collection of verses taken from the Ṛgveda arranged in a form for singing and liturgical purposes. Third, the Yajurveda concerns rituals performed publicly or individually. It contains sacrificial formulae in prose and verse to be pronounced by priests. Finally, the Atharvaveda is a collection of magic spells in charms to ward off evil spirits and diseases.[11]

In the Indus Civilization, inhabitants

worship mother earth as goddess, considered trees and animals as divine entities, and the rituals played a significant part in the religious life. These religious practices merged with other cults and doctrines until they overtook the old faith of the Indian Aryan rulers. According to the Rigveda, the most important objects of worship where devas, derived from the word "div" meaning the "radiant" or "shining one".[12] It is said that there were 33 divinities in the Vedic Pantheon, with Indra, Agni and Soma occupying the most important places among them. Indra was titled the "King of Gods" and was considered the great protector of society. People believed that he fulfilled a dual function as a war god and weather God. As the war god, he destroyed the Fortress of the *dāsas* and defeated the evil Dragon *vritra* who held back the water. As the weather god, he was associated with storms and thunder.

Agni the God of Fire, functioned as in intermediary between Gods and human beings, consuming sacrifices offered to the Gods and carrying the oblation to the Gods. Although there were many significant divinities during the Vedic period, such as Varuna (guardian of the cosmic order), Vayu (the wind deity), Aditi (the Infinite goddess), Uṣas (dawn in the sun), Sūrya (the god of sun) and many other gods, the old deities lost their greatness to other deities that rose in popularity. Vishnu appeared as a form of the Sun god, and he was assimilated into a local God as Narayana. Similarly, Rūdra, called the "great god", was considered to have merged with Shiva later on.[13]

The Brahmanical religion only allowed the three upper sections to perform and participate in the rituals. Religious ceremonies had become more exclusive aspect on the basis of *Varṇa*s. When *Brahmanas* conducted the rituals, kings and military Warriors from *Kshatriyas* came later, and then the third caste, the agriculturists and merchants, participated in the rites. The *sūdras* were not allowed to take part in the religious ceremonies. Moreover, the costly and sophistical nature of the rituals bought economic discrimination to the society, as the poor could not afford to perform them.

The *Śramaṇa* movement, revolted against socio-religious inequalities of the marriage tradition, which was attached to the ceremonies, rituals, sacrifices, and the priest-centered religion. The non-vedic religion evolved a complete nonviolence ideology, in which every soul is the same. This principle was of first and the foremost priority. Therefore, violent activities such as harming or killing any form of living being were unacceptable.[14]

Four stages of life (*Āśramas*)

According to the ancient Vedic tradition, human life is divided into four stages. This is called "*Āśramas*", derived from the Sanskrit root '*Śrama'*, which means 'to exert'. This system of the four stages of life became component of the ethical theories in later Indian philosophies.[15] The first stage was the student period (*Brahmacarya*) which was marked by chastity, devotion and obedience to one's teacher and focused on education and the practice of celibacy. The students learnt in a Gurukul and lived with the Guru to obtain knowledge of science, scripture, philosophy and logic. The second stage, the householder period (*gṛhastha*) refers to an individuals married life, which included raising children and sustaining ones family. Besides this, the individual also helped and supported priests, thereby fulfilling their religious duties. The third, the forest dweller stage (*vānaprastha*), began with having grandchildren, when an

individual withdrew from concerns regarding material things, handed over their household responsibilities to the next generation, took on an advisory role and practiced withdrawal from worldly life. Finally the fourth stage, the homeless renouncer (sanyāsi) marked the renunciation of material desires, partialities and detachment from material things. The ultimate concern for an individual during this stage was seeking union with the Absolute (Brahman). Jainism rejected the āśhrama system and said that anybody at any given time can attend to the higher spiritual calling through non-violence, self restraint and austerities. **(Continue)**

REFERENCES

1. Soas, J (Johannesburg : Sage publication, 2012), p15-23
2. Ashim Kumar Roy, A History of the Jains (New Delhi : Rise Press, 1984) p 15
3. Peter heehs ed., Indian religions: A Historical readers of spiritual expression and experience (New Delhi: Permanent black, 2002), 86.
4. Rama Shankar Tripathi, History of ancient India (Delhi: MotilalBanarasidas Publisher 1942, 10th reprint, 2014), 97.
5. Sagarakadutt, India in a Globalized world (Manchester: Manchester university press, 2006), 18.
6. Rama Shankar Tripathi, History of ancient India (Delhi: MotilalBanarasidas Publisher 1942, 10th reprint, 2014), 40-42.
7. Thapar, Early India: from the origins to AD 1300, 63.
8. Peter heehs ed., Indian religions, 89-130.
9. G.C Pande, *Śramaṇa* Tradition: Its history and contribution to Indian culture (Ahmedabad: L.D Indology, 1978), 4.
10. S.R. Goyal, A history of Indian Buddhism (Meerut: Kusumanjli Prakasahan, 1993), 67-70
11. Basham, the wonder that was India, 234.
12. Roshan Dalal, Hindusim: An Alphabetical guide (New Delhi: Penguin books 2010), 115.
13. Tripathi, History of ancient India, op.cit., 52.
14. Kanchailiah, God and political philosophy: Buddha's Challenge to Brahmanism (Kolkata: Samya, 2001), 43.
15. Upinder Singh, a history of ancient and early medieval India: from the stone age to the twelfth century (Delhi, pearson,2008),300.

-29/3, Ranganthan Avenue Kilpauk, Chennai-600010 (Tamilnadu)

जैन जीवनशैली : एक कला

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

जैन जीवनशैली तो एक कला है
सम्यक् आचरण से टलती हर बला है
कर्म की गठरी लाद के जग में भ्रमणे इन्सान
जैसा करे वैसा भरे, विधि का यही विधान
अपना कर इसको करें, हम कर्मों की क्षपणा
कर्मों की गति न्यारी, कर्मों का ही खेल है सारा
बाँधी हमने हम ही तोड़ें, अनवरत ये धारा
जैन जीवनशैली से होगा कर्मों से छुटकारा
अपनाकर इसको बन जाएगा जीवन अनुपम न्यारा
जीव की चैतन्य शक्ति ऊर्ध्वगामी है
कर्म लेप संयोग से जीव अधोगामी है
जैन जीवनशैली से कर्म लेप को हटाना है
अपनाकर इसको शुद्ध शाश्वत स्वरूप को पाना है
अनुकूल संयोग भी सुख नहीं संसार में प्रतिकूलता भी
दुःख की प्रतीति है व्यवहार में जैन जीवनशैली से
बढ़ती समता की शक्ति अपार अपनाकर इसको बन
सकते हैं हम भी निरञ्जन निराकार
भव-भव में छाई रही मिथ्यात्व की बदली कारी
समकित किरणों से ही आएगी मुक्ति उजियारी
जैन जीवनशैली से दूर होता अज्ञान
अपनाकर इसको बन सकते हैं हम भी प्रभुतावान
जैन जीवनशैली ही जीने का आधार
सम्यक् अनुकरण अनुसरण से ही होगा बेड़ा पार।

-मुम्बई

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 40
ISSN 2249-2011

नारी-स्तम्भ

एक आदर्श माँ

डॉ. मंजुला बम्ब

किसी मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण जितनी आसानी से तथा सफलतापूर्वक माता कर सकती है उतना और कोई नहीं। बच्चे के लिए माता की वात्सल्यमयी गोद ही सबसे महत्त्वपूर्ण शिक्षिका है। बालक इसी पवित्र स्नेहधारा से प्रेम तथा मानवता का पहला सबक ग्रहण करता है। कौटम्बिक वातावरण में बच्चा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से अनेक गुण-दोष ग्रहण करता है, जो उसके व्यक्तित्व के निर्माण में बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। आगम, पुराणादि में बताया गया है कि बच्चा गर्भावस्था से ही माता के रहन-सहन, आचार-विचार, गुण-दोष, खान-पान आदि के प्रभाव को अपनाया करता है और वही आगे जाकर उसके जीवन में समय-समय पर प्रगट होता है। महाभारत में अभिमन्यु के बारे में बताया गया है कि उसने माँ के पेट में रहते हुए ही किसी दिन पिता के द्वारा माँ को बताए जाने पर चक्रव्यूह तोड़ने का ज्ञान सीख लिया था। इससे सिद्ध होता है कि अप्रत्यक्ष रूप से भी माता-पिता के मनोभावों, वचनों, प्रवृत्तियों आदि से बच्चे के मनोभावों एवं व्यक्तित्व का निर्माण और विकास होता है। माँ अपने रक्त में वात्सल्य रस घोलकर उसे दुग्ध सा धवल बनाकर बालक को पिलाती है और साथ ही जन्मघूँटी में ही संस्कारों की घूँटी पिलाना भी नहीं भूलती है।

हमारे इतिहास में ऐसे सैकड़ों उदाहरण अंकित हैं जिनमें यह बताया गया है कि अनेक महापुरुषों का जीवन-निर्माण उनकी माताओं के द्वारा ही किया गया है। रानी कौशल्या के हृदय की उदारता, वत्सलता, दयालुता रामचन्द्र जी के जीवन में भरी हुई थी। जीजाबाई जो हिन्दू जाति के गौरव और प्रतिष्ठा के लिए मर मिटने को निरन्तर तत्पर रहती थी, अपने बेटे शिवाजी के जीवन-निर्माण में साधन हुई। उन्होंने बचपन से ही शिवाजी को रामायण, महाभारत आदि की कथाएँ सुना-सुनाकर उनके शिशु-हृदय में ओज और वीरत्व का बिगुल फूँकना शुरू कर दिया था। प्राण देकर भी देश और जाति की रक्षा करने की भावना कूट-कूटकर भर दी थी। उसी वीर माँ की शिक्षा का फल था कि उसके वीर बेटे शिवाजी ने हिन्दू साम्राज्य की नींव रखकर हिन्दू जाति का उद्धार किया।

इसी प्रकार जब गुरु हस्ती अपनी माँ के गर्भ में थे उस समय उनकी माता को वैराग्य उत्पन्न हुआ। संसार के दुःख, दारिद्र्य, रोगादि और संसार की असारता को जानकर उनके मन में निरन्तर भावना रही कि मेरा पुत्र बड़ा होकर इस जगत् का दुःख अवश्य दूर करेगा। आत्मज्ञान प्राप्त कर जिनशासन का पुत्र कहलायेगा। माँ रूपा के हृदय की उदारता, वत्सलता, दयालुता एवं करुणा बाल हस्ती के जीवन में भरी हुई थी, वे अपने पुत्र के जीवन-निर्माण में साधन हुईं। उन्होंने पौशाल की महाजनी एवं व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ धार्मिक एवं चारित्रिक शिक्षा भी दी। उन्होंने बचपन से ही बाल-हृदय में वीरता, वैराग्य, परस्पर सहयोग, करुणा, दया, वात्सल्यादि की कहानियाँ सुनाकर बाल-हृदय में वीरत्व के साथ-साथ संस्कार भी दिये। इन्हीं भावनाओं से गुरु-हस्ती का जीवन-निर्माण हुआ और वे निर्भीक, साहसी, दृढ़, दूरदर्शी, अनुशासनप्रिय, सिद्धान्तवादी और निश्चयशील ही नहीं बने, वे जिनशासन में युगपुरुष लोक केवली सिद्ध हुए।

जिन गुणों को माँ रूपा शुरू से बाल हस्ती के जीवन में देखना चाहती थी, उन्होंने उन सबका स्वयं आचरण किया, क्योंकि झूठ बोलकर माँ बच्चे को सत्यवादिता का पाठ नहीं सिखा सकती। उज्ज्वल चरित्र वाली माता ही बच्चे को महापुरुष बनाने में समर्थ हो सकती है। इसी प्रकार हमारे देश में ही नहीं पाश्चात्त्य देशों में भी अनेक महापुरुषों ने माताओं से ही सबक सीखा है। ईसाई धर्म के प्रणेता ईसा को ही लें उन्हें पूज्य बनाने वाली उनकी माता मरियम ही थी। वह निरन्तर बालक ईसा को धार्मिक शिक्षण दिया करती थी। स्वयं धार्मिक पुस्तकें पढ़कर उनकी प्रतिभा का विकास किया करती थी। इन बातों से ही उनके चरित्र में महानता आई और उनकी आत्मा का पौरुष सतत बढ़ता ही गया। यह बचपन की शिक्षा का महत्त्व है। बाल-जीवन को उन्नत, शिक्षित और सुसंस्कृत बनाने के लिए घर ही उपयुक्त पाठशाला है। माता-पिता ही बच्चे के सच्चे शिक्षक हैं।

बालक का जीवन अनुसरण से प्रारम्भ होता है। वह बोलते-चालते, खाते-पीते और कोई भी काम करते परिवार के सदस्यों का और विशेषतया माता का ही अनुसरण करता है। क्या बोलचाल, क्या व्यवहार, क्या मनोवृत्तियाँ और क्या अन्य प्रवृत्तियाँ, सबमें माँ की ही नकल होती है। जिसके प्रति उसके हृदय में स्नेह का भाव सहज उपज जाता है।

माँ रूपा विवेकशील थी। उन्होंने अन्तरंग और बहिरंग अनेक प्रकार से पुत्र के जीवन का विकास किया। उस ममतामयी माँ ने जिसने माता-पिता दोनों का प्यार दिया, अपने बच्चे को गुड्डे-गुड्डियों की तरह शृङ्गार कर, अच्छा भोजन खिलाकर नहीं पाला, उन्होंने जीवन दिया है, उनके जीवन का निर्माण किया है। जीवन निर्माण का अर्थ है संस्कार सम्पन्न बनाना, बालक की विविध शक्तियों का विकास करना, शक्तियों का विकास हो जाने पर वे सन्मार्ग में लगे। माँ रूपा ने मातृ-कर्त्तव्य को ही नहीं निभाया, स्त्री-समाज का ही उपकार ही नहीं किया, बल्कि अपने लाड़ले को जिनशासन में समर्पित कर एक उदाहरण उपस्थित किया।

सिंहनी एक ही पुत्र जनती है, मगर ऐसा जनती है कि उसे किसी भी समय उसके लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती। सिंहनी गुफा में रहती है और उसका बच्चा जंगल में फिरता रहता है, क्या वह उसके लिए चिन्ता करती है? वह जानती है कि उसका बच्चा अपनी रक्षा अपने आप कर लेगा। माँ रूपा भी सिंहनी की भाँति ही मात्र 10 वर्ष 18 दिन के बालक को जिनशासन की सेवा में आचार्य शोभा के चरणों में समर्पित कर स्वयं भी गुरु चरणों में दीक्षित हो गई।

शरीर में मस्तिष्क का जो स्थान है समाज में शिक्षक का भी वही स्थान है, पर सबसे ऊँचा स्थान बच्चे के जीवन-निर्माण में माता का है। बच्चे के प्रति माँ का जो आकर्षण ममत्व है वही बच्चे को उचित रूप से जीवनपथ पर अग्रसर होने का प्रयत्न किया करता है। माता का हृदय बच्चे से कभी तृप्त नहीं होता। माता के हृदय में बहने वाला वात्सल्य का अखण्ड झरना कभी सूख नहीं सकता। वह निरन्तर प्रवाहित होता रहता है। मातृप्रेम के समान संसार में और कोई प्रेम नहीं। मातृप्रेम संसार की विभूति है। माँ रूपा में हृदयबल बहुत था। इसी बल के कारण उन्होंने बालक हस्ती का पालन किया और उनके लिए कष्ट उठाती रही तथा उनके भविष्य सम्बन्धी आशाओं से प्रेरित होकर उनका पालन करती रही। उनके हृदय में बालक हस्ती की एकान्त कल्याण कामना निरन्तर प्रवाहित हो रही थी। इस प्रकार मातृहृदय संसार की अनूठी सम्पदा है। अनमोल निधि है।

माँ रूपा संस्कार प्रदाता गुणसम्पन्न आदर्श नारी थी। इन्द्र ने भी माता की महिमा का गुणगान

तीर्थंकर के जन्म पर किया है-इन्द्र ने तीर्थंकर की माता को प्रणाम ही नहीं किया? इन्द्र कहता है-''हे रत्नकुक्षि धारिणी!, जगत् विख्याता!, हे महामहिम-मण्डिता माता! आप धन्य हैं। आपने धर्म तीर्थ की स्थापना करने वाले और भवसागर से पार उतारने वाले, संसार में सुख-शान्ति की संस्थापना करने वाले त्रिलोकीनाथ को जन्म दिया है। अम्बे! आप कृत पुण्या और सुलक्षणा हैं।

आगम में वर्णन आया है कि गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से पूछा-''भगवन! अगर पुत्र माता-पिता को नहलावे, वस्त्राभूषण पहनावे, भोजन आदि सब प्रकार से सेवा करे, सुख देवे और उन्हें कन्धे पर उठाकर फिरे तो क्या वह माता-पिता के ऋण से उऋण हो सकता है?'' भगवान ने उत्तर दिया-'नायमट्ठे समट्ठे' अर्थात् ऐसा होना सम्भव नहीं। इतना करने पर भी पुत्र माता के ऋण से उऋण नहीं हो सकता।

श्री हस्ती पाठशाला से लौटने के पश्चात् अपनी माता के पास बैठकर पौशाल में पढ़े गए विषय के पाठों और महासती जी बड़े धनकँवरजी आदि साध्वियों से प्राप्त धार्मिक ज्ञान का पुनरावर्तन करते थे। बालक हस्ती की प्रतिभा और वैराग्य का परीक्षण स्वामी श्री हरखचन्द्रजी म.सा. ने इस प्रकार किया। उन्होंने बालक हस्ती से प्रश्न किया-'वत्स! तुम्हारा नाम क्या है?'

बालक-'हस्तीमल।'

गुरुदेव-'तुमने क्या-क्या सीखा?'

बालक-'मैंने पाठशाला में पढ़ना-लिखना, महाजनी गणित, प्रारम्भिक धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया है। घर पर माताजी से भी सीखता रहता हूँ।'

गुरुदेव-'तुम्हारी माताजी तो अब शीघ्र दीक्षित हो जाना चाहती हैं। माता के दीक्षित हो जाने पर तुम क्या करोगे?'

बालक-'माँ दीक्षा ग्रहण कर रही है तो मैं भी उनका अनुसरण करुँगा।'

माँ रूपादेवी बालक हस्ती के यह विचार सुनकर और उसका निश्चय जानकर हर्षावरुद्ध कण्ठ स्वर से कह उठी-'वाह मेरे बेटे! मुझे तुम्हारी माता होने पर गर्व है।'

बालक हस्ती में मनुष्यत्व की सभी शक्तियाँ छिपी हुई थीं। योग्य दिशा में उनका विकास होने पर समय पाकर उनकी सब शक्तियाँ खिल उठीं। अप्रतिम स्मरणशक्ति के लिए तो आप बाल्यकाल से ही प्रसिद्ध रहे। एक बार जिसे देख लिया उसे जीवन भर न भूलना आपकी स्मरण-शक्ति का अद्भुत चमत्कार था।

आपके आचार्यपद महोत्सव के समय 35 महासतियाँजी उपस्थित थीं उनमें आप श्री की माताजी महाराज श्री रूपाकँवरजी भी थी। साध्वी माँ ने अपनी गुरुणी महासतीजी श्री बड़े धनकँवरजी के आदेश को शिरोधार्य कर आचार्य हस्ती के समक्ष श्रद्धाभिव्यक्ति उँडेलती हुई उनके चरणों में निवेदन करती हैं साध्वी माँ रूपाकँवरजी-''आचार्यदेव! आपके सुखसाता है?''

आचार्यश्री-''धरित्रीतुल्य धैर्यमूर्ति की गोद में पले प्राणी को अमंगल कभी छू भी नहीं सकता। गुरुदेव के प्रताप से और आप सबके सद्भावना पूर्ण स्नेह से आनन्द मंगल है।''

आचार्यश्री द्वारा आचार्य पद महोत्सव के समय दिये गये व्याख्यान को सुनकर साध्वी माँ ने कहा-''ज्ञानसूर्य! आपके व्याख्यान को सुनकर तो कृतकृत्य हो गई।''

आचार्यश्री-''मूल देन तो आप की ही है।''

सांसारिक दृष्टि से माता और पुत्र, किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से आचार्य और आज्ञानुवर्तिनी साध्वीजी के इस संक्षिप्त पर सारगर्भित अन्तर्भावों की अभिव्यक्ति को सुनकर सभी ने अनिवर्चनीय आनन्द की अनुभूति की। बाल्यावस्था में माँ की

गोद में इन्होंने लोरियों, भजनों, धार्मिक गीतों से जो धर्म-ज्ञान-संस्कार पाये उनकी यह एक झलक थी। बालवय में माँ से मिले त्रिरत्नों से परिपूर्ण ज्ञान-संस्कारों की झलक इस संवाद में स्पष्ट दिखाई दे रही है। माँ रूपा ने बालक हस्ती को अपने आँचल की छाया में अन्तर के अघमल को धोने की शिक्षा दी। उन्होंने प्रमाद और मोह की थपकियों में, ममता की लोरियों को गा-गाकर नहीं सुलाया, बल्कि लक्ष्य के प्रति जागृत किया और प्रेरणा दी कि प्राणों का प्यार भव-भ्रमण कराता है और व्रतों का प्यार भवकारा से मुक्ति दिलाता है। इस प्रकार माँ द्वारा दिए गए आत्म-सम्बोधनों और सुसंस्कारों के स्वरों को वे सारे संसार में बिखेरते रहे। उन्हें श्रवण कर, आत्मसात् कर कई भव्यात्माओं ने अपना आत्मकल्याण किया।

सारे जहाँ में तेरा, जलवा कमाल देखा,
हर कोई तेरे दर से जाता हुआ निहाल देखा,
मैंने अपनी आँखों से ऐसा इन्सान देखा,
जिसके बारे में सब कहते हैं धरती पर भगवान देखा।।
हस्ती दीक्षा शताब्दी पर्व पर, श्रद्धा सुमन समर्पित।
हे वीर आपके चरणों में, मंजुल भावाञ्जलि
सादर समर्पित।।

-567, गली नं. 6, वाल्मीकि मार्ग, तिलकनगर, जयपुर-302004 (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

(1) सर्वप्रथम जिनवाणी के 'जैन जीवनशैली' विशेषाङ्क में गागर में सागर भरने के लिए मैं आपको अन्तर्हृदय से बधाईयाँ प्रेषित करता हूँ। हर बार की तरह यह विशेषाङ्क भी अनेक विशेषताओं से युक्त है, जिसमें सभी लेख एवं रचनाएँ एक से बढ़कर एक हैं। निःसन्देह जिनवाणी पत्रिका का सम्पूर्ण जैन समाज में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ स्थान है और इसका प्रमुख श्रेय गुरुकृपा के साथ-साथ आपकी सक्षम सम्पादन कला को भी जाता है। जिनवाणी के माध्यम से अनेक आचार्यों एवं सन्त-सती मण्डल ने अपनी विचक्षण विचारधाराओं तथा अनेक श्रावक-श्राविकाओं और युवाओं ने अपनी रचनाओं से लाखों पाठकों को जिनवाणी-अमृत का पान कराया है।

समय के साथ चलते हुए जिनवाणी पत्रिका ने अपने रंग-रूप एवं आकार-प्रकार में बदलाव किया ही, साथ ही आधुनिक शैली से युक्त अनेक रचनाओं से जिनवाणी को और भी रोचक एवं सरस बना दिया है। इसी कड़ी में बाल जिनवाणी का संयोजन भी महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुआ और अनेक नन्हें पाठकों को जिनवाणी से जोड़ने में सफल हुआ। जिनवाणी के साथ-साथ बाल जिनवाणी का भी अलग से रंगीन पृष्ठों में प्रकाशन, जिनवाणी की महती प्रभावना में मील का पत्थर साबित हो सकता है।

-पी. शिखरमल सुराणा-चेन्नई, पूर्व संघाध्यक्ष

(2) सितम्बर, 2020 की जिनवाणी में 'कर्तृत्व के अभिमान के निवारण' पर आपका सम्पादकीय आलेख पढ़कर आनन्द का अनुभव हुआ। आपने बड़े कठिन विषय पर सरल रीति से प्रस्तुति दी। एतदर्थ बधाई। मैं सामायिक में प्रतिदिन जिनवाणी का अध्ययन करता हूँ। श्री नौरतनमलजी मेहता का आचार्य हस्ती एवं उनके कुछ प्रमुख श्रावकों के सम्बन्ध में लिखित आलेख भी आकर्षक रहा। इसकी एक लघु पुस्तिका भी प्रकाशित की जा सकती है। पण्डित सुखलाल संघवी पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक आलेख पढ़कर प्रमोद का अनुभव हुआ। रत्नसंघ के प्रोफेशनल फोरम द्वारा आयोजित पाँच वेबिनारों का अंग्रेजी सारांश पढ़कर हर्ष हुआ।

-सुरेन्द्र सिंघवी, डेटन (ओहियो-यू.एस.ए.)

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 44
ISSN 2249-2011

स्वास्थ्य-विज्ञान

रेलम पेल····· कोरोना का खेल!!

श्री निपुण डागा

जिनवाणी के फरवरी 2017, अंक में साधक श्रीमान् कन्हैयालालजी लोढ़ा का एक लेख पुन: प्रकाशित हुआ। लेख का सार इस प्रकार समझा जा सकता है-देवी (महामारी) शहर की ओर जा रही थी। साधक साधना में लीन था। देवी से पूछा-शहर में क्यों जा रही हो? देवी ने कहा भूख लगी है-1,000 लोगों का भक्षण करना है। दीवारों के भी कान होते हैं। कहावत चरितार्थ हुई और देवी के शहर में प्रवेश के पूर्व हजार लोगों के मौत के समाचार, देवी द्वारा भक्षण की बात घर-घर में लोगों को भयाक्रान्त कर गई। अपना कार्य करके देवी लौट रही थी। पता लगा लगभग 16-17 हजार लोग मर चुके हैं। साधक ने पूछ लिया-तुमने कहा था कि तुम एक हजार का भक्षण करोगी। वो बोली-मैंने एक हजार से एक भी ज्यादा नहीं खाया। सन्त ने पूछा-आँकड़ा 16-17 हजार का कैसे हो गया? वह बोली-मैंने तो एक हजार ही खाए हैं, बाकी लोग भय से मरे हैं।

श्रद्धेय तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. कई बार फरमाते हैं कि **रोग का भय, परम रोग है अगर रोग का भय न हो तो बेचारा रोग निर्जीव हो जाता है।** इस अनुभव सिद्ध सत्य को नित्य प्रति के समाचारों में स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है। 'कोरोना' कोई रोग ना! शब्द स्पष्ट कर रहा है कि कोई रोग नहीं है। क्या यह सत्य है? क्या यह सत्य नहीं है? चर्चाओं का बाजार गर्म है। भारत में भी संक्रमितों की संख्या एक करोड़ हो गई। पर मरने वाले तो मात्र 1.45% ही हैं जो कि 1 लाख पैंतालीस हजार हैं। अकेला यह रोग किसी के भी प्राणों का हरण नहीं कर सकता। रक्तचाप हो, मधुमेह हो या और कोई इधर-उधर के रोग हों तो ही कुछ लोग मर रहे हैं और कुछ तो तब भी नहीं मर रहे। दहशत! हाँ-हाँ! महामारी ने ये तो कहा है था, एक हजार महामारी से मरे शेष 16-17 हजार दहशत से मरे। कैसे मिटाए इस दहशत को? दवा से, हवा से अथवा दुआ से। अनुभवी तो कहते हैं कि-'जब दवा काम नहीं आती तब हवा काम करती है और जब हवा काम नहीं करती तो दुआ काम आती है। देखे इन तीनों के खेल को, रेलम पेल को।

आज पूरा विश्व विषम परिस्थितियों से गुज़र रहा है, जिसने हम सबको प्रभावित किया है। समाज के हर वर्ग, पन्थ, सन्त, अमीर, गरीब सबको कोरोना महामारी ने प्रभावित किया है। मार्च से दिसम्बर तक इन नौ महीनों में भी सरकार ने समय-समय पर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के निर्देशानुसार विविध उपचार कोरोना से संक्रमित लोगों को दिए हैं। ये सब उपचार प्रयत्न और त्रुटि विधि (Trial and Error method) पर काम कर रहे हैं। वास्तविकता यह है कि चिकित्सक भी इसके सही इलाज की जाँच नहीं कर पा रहे हैं। उदाहरण के लिए जो शुरुआत में रेमडेसिवर एण्टी वायरल दवाई कोरोना के मरीज़ों को दी जा रही थी, उसको डब्ल्यू.एच.ओ. ने 20 नवम्बर के निर्देशानुसार कहा है कि इसका उपयोग करना बन्द कर देना चाहिए, क्योंकि कोई सबूत नहीं मिल रहा कि इससे लोग ठीक हो रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यह समझना मुश्किल है कि लोग अस्पताल जाकर ठीक हो रहे हैं या फिर खुद की रोग प्रतिरोधक क्षमता उसको ठीक कर रही है।

आज पूरा विश्व वैक्सीन के लिए तैयारी कर रहा है, पर फिर भी इससे लोग कितने सुरक्षित होंगे यह मालूम नहीं। वैक्सीन कम्पनियाँ दावा कर रही हैं कि 90 प्रतिशत आप सुरक्षित हैं। टाइम्स ऑफ इण्डिया में वाराप्रसाद रेड्डी (शान्ता बायोटेक्निक्स के संस्थापक, पहली कम्पनी जिसने भारत में ही कोरोना का वैक्सीन बनाया) ने जो इण्टरव्यू दिया है उसकी महत्त्वपूर्ण सूचना मैं यहाँ दे रहा हूँ जो दर्शा रही है कि वैक्सीन लगाना अपने आप में अन्धा जुआ खेलने जैसा है।

1. टीबी की वैक्सीन बनाने में 28 वर्ष, इबोला की वैक्सीन में 5.5 वर्ष और एड्स की तो आज तक कोई वैक्सीन नहीं आयी। आज के आधुनिक विज्ञान ने वैक्सीन विकसित करने का समय कम कर दिया है, पर कोई भी वैज्ञानिक इसके 'क्लिनिकल परीक्षण' का समय कम नहीं कर सकता, जिसको करने में वर्षों लग जाते हैं।

2. जनता का दबाव है कि जल्दी वैक्सीन लायी जाए और सरकार का वैज्ञानिकों पर दबाव है। इसके चलते आज रूस, अमेरिका, यू.के. में वैक्सीन लगाना शुरू भी हो चुका है। रेड्डी खुद यह स्वीकार करते हैं कि वैक्सीन के उत्पादक बहुत बड़ी जोखिम ले रहे हैं जो कि उनकी ब्राण्ड इमेज को पूरा खराब कर सकते हैं।

3. रेड्डी आगे कहते हैं कि अभी हम बहुत दूर हैं, एक असरदार और विश्वसनीय वैक्सीन को पाने के लिए कोरोना वैक्सीन का बहुत बड़ी मात्रा में उत्पादन तीसरे स्तर के क्लिनिकल परीक्षण के पूर्व ही शुरू हो गया है जो अपने आपमें बहुत बड़ा जोख़िम है।

कुछ अन्य बिन्दु जो वैक्सीन के प्रयोग को सन्देहजनक करते हैं।

1. बहुत सारे चिकित्सकों से बातचीत करते समय यह मालूम पड़ता है कि वे खुद भी वैक्सीन लगने के पक्ष में नहीं है। उदाहरणत: जयपुर के एक प्रसिद्ध डॉक्टर ने बताया कि ज्यादा से ज्यादा छह महीने तक ही वैक्सीन आपको सुरक्षित करेगी, उसके बाद क्या? क्योंकि अभी तक कोई भी यह बताने में असमर्थ है कि एक बार वैक्सीन लगाने के बाद हम कितने समय तक सुरक्षित रहेंगे?

2. यू.के. में वैक्सीन लगाने के एक दिन बाद ही लोगों में दुष्प्रभाव दिखना शुरू हो गया।

3. **हमारे डी.एन.ए. के साथ खिलवाड़-** कोविड वैक्सीन एक नई तकनीक से बनी है जो कि आपके शरीर में एम-आर.एन.ए. को बदल डालेगी जो हमारे डी.एन.ए. को बदलने में भी सक्षम है, ऐसी सम्भावना है।

4. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार 21 दिसम्बर के बाद का काल और भी भयंकर होने वाला है और लोग वैक्सीन लगाने में अगर जल्दबाजी करेंगे तो उनको दुष्परिणाम भोगने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। 800 वर्ष बाद 21 दिसम्बर को गुरु और शनि बहुत करीब आने वाले हैं और 21 अप्रेल, 2021 तक रहेंगे। इसके प्रभाव से पूरी सृष्टि में भयानक प्रभाव रहेगा ऐसा ज्योतिष आचार्यों का मत है।

इस भूमिका से यह स्पष्ट विदित हो रहा है कि इस बीमारी से जंग में अभी हम पूरे तरीके से एलोपैथी दवाई या वैक्सीन पर आश्रित नहीं रह सकते। हमें स्वयं को 'आत्मनिर्भर' होना पड़ेगा और हमारी प्राचीन भारतीय विद्याओं/उपचारों पर श्रद्धा विकसित करनी पड़ेगी। आगे आपको ऐसे अचूक प्राकृतिक इलाज और सुझाव मिलेंगे, जिससे हमें दवाई/वैक्सीन पर आश्रित नहीं रहना पड़ेगा।

निर्भय हो जाएँ

1. जैसे कि पहले भी निवेदन किया है-''रोग का भय परम रोग है।'' इसलिए सबसे पहले हमें हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा जो कि हमारी रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएगा। यह अनुभव सिद्ध है

कि जो व्यक्ति मन से मजबूत होता है वह जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाता है। इसलिए निर्भय होना परम आवश्यक है।

2. **डॉ. रक्षकमलजी लोढ़ा, जोधपुर द्वारा बताया स्वमूत्र और प्राकृतिक इलाज**–पिछले 50 वर्षों से डॉ. रक्षकमलजी नि:स्वार्थ भाव से प्राकृतिक प्रयोगों द्वारा अद्भुत सेवा का कार्य कर रहे हैं। इन्होंने आज तक इलाज के नाम पर एक रुपया कभी लिया नहीं और एक दवाई दी नहीं। केवल प्राचीन स्वमूत्र चिकित्सा, आहार में संयम और कसरत के द्वारा ये लोगों का फोन पर ही रोग निवारण कर देते हैं। श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. का जब उनसे जोधपुर में परिचय हुआ तब उनसे वे बहुत प्रभावित हुए। कोरोना काल में मेरा भी इनसे सम्पर्क हुआ। वैसे तो ये हर रोग (कैंसर जैसे असाध्य रोगों का भी) प्राकृतिक उपचारों द्वारा इलाज करते हैं, पर यहाँ केवल कोरोना से सम्बन्धित उपचार आपके समक्ष रख रहा हूँ।

स्वमूत्र को नाक द्वारा खींचना एवं नीम तुलसी का प्रयोग सुनने में थोड़ा अटपटा जरूर है, पर इनका असर अद्भुत है। हमारे आगमों में भी (स्थानाङ्गसूत्र, स्थान 2 एवं व्यवहारसूत्र उद्देशक 4 में मोक प्रतिमा में स्वमूत्र पीने का उल्लेख मिलता है। बृहत्कल्पसूत्र 3.5 में आया है कि मूत्र-सेवन औषधि का काम करता है। व्याख्या-साहित्य में इसकी पूरी विधि का उल्लेख मिलता है) साधु को स्वमूत्र लेने का उल्लेख मिलता है। डॉ. रक्षकमलजी के अनुसार जो व्यक्ति नाक से स्वमूत्र को (कोई सीरिंज/ड्रॉपर की सहायता से) दिनभर में 2-3 बार ले लेता है तो वह कोरोना का निरोध भी है और उपचार भी। जरूरी है कि सबसे पहले हमें इस पद्धति पर श्रद्धा हो। इसके साथ प्रतिदिन 5 नीम पत्ते और 5 तुलसी के पत्ते खाने से भी लाभ होता है।

इन्होंने कोरोना से सम्बन्धित बहुत सारे मरीजों को कोरोना होने के बाद इनके अनोखे प्रयोगों से ठीक किया है। इनका यह 100% दावा है कि जो नाक से स्वमूत्र रोज लेगा उसे कोरोना हो ही नहीं सकता। कोरोना के होने के बाद जब उनसे जयपुर के कई लोगों ने सम्पर्क साधा तो उन्होंने कोई भी दवाई दिए बिना ही उनको पुन: स्वस्थ कर दिया। जयपुर के कुछ उदाहरण आपके सामने यहाँ रखे जा रह हैं-

(1) श्रीमान् हरिचन्दजी हीरावत का परिवार-इनके परिवार के चारों ही सदस्य कोरोना से संक्रमित हो गए थे, फिर डॉ. रक्षकमलजी द्वारा सुझाए स्वमूत्र एवं नीम-तुलसी के प्रयोग से वे सब पाँच ही दिन में बिना कोई दवाई लिए ही स्वस्थ हो गए।

(2) श्रीमती पूर्णिमाजी गोलेछा-8 अक्टूबर को बुखार आने पर उन्होंने जाँच करायी तो पॉजिटिव पाया, फिर कोई और दवाई लिए बिना डॉ. साहब के उपचारों द्वारा तीन ही दिन में एकदम स्वस्थ हो गए और सात दिन बाद निगेटिव भी आ गए।

(3) सुश्री आश्री डागा (13 वर्ष)-इनको 7.5 वर्ष से हर महीने बुखार आता-जाता था। इस काल में साधारण बुखार भी कोरोना जैसा प्रतीत होता है। इनको डॉ. रक्षकमलजी ने एक विचित्र इलाज बताया। रात को दोनों हाथों एवं पैरों के अँगूठे पर बीज निकली हुई हरी मिर्च 5 मिनिट तक लगवाई फिर ओढ़कर सो जाने को कहा। वह पूरी पसीने से लथपथ हो गई। सुबह तक पूरा बुखार उतर गया और उसको वापस नहीं आया।

(4) श्रीमती महक डागा-मेरी धर्मपत्नी महक डागा को भी जोरदार पेट दर्द हुआ। दो घण्टे तक वह सहन करती रही, फिर डॉ. साहब को फोन लगाया तो उन्होंने नीचे लेटकर नाभि में तेल डालकर जाँघों पर थपथपाने को कहा। इससे दस मिनिट के अन्तराल में पूरा पेटदर्द ठीक हो गया।

(5) श्रीमती डिम्पल लोढ़ा-इनके भी अचानक पेट में असहनीय पीड़ा उत्पन्न हुई, जिससे उनको अस्पताल में भर्ती कराने की नौबत आ गई थी। फिर इनको डॉ. साहब द्वारा सुझाए प्रयोग-पहले 2 चम्मच घी पीना फिर नाभि में तेल डालकर पवन मुक्त आसन करने को कहा। इससे वह 15 मिनिट में ही पूर्णतः स्वस्थ हो गई।

ऐसे अनके उदाहरण हमने साक्षात् देखे है जो इनसे लाभान्वित हुए हैं। लोग कोरोना से संक्रमित होने के बाद लाखों रुपये खर्च कर देते हैं, पर उन्हें बिना पैसे की प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों पर श्रद्धा नहीं होती है। महत्त्वपूर्ण है कि सबसे पहले डॉ. रक्षकमलजी के उपचारों पर श्रद्धा और दृढ़विश्वास होना, फिर उनके निर्देशानुसार उपचार करना।

गौरतलब है कि विदेशी इनकी अनोखी विद्या का ज्यादा श्रद्धा से लाभ ले रहे हैं। इनके इन प्रयोगों के कारण ही वे आज 78 वर्ष की आयु में भी नीरोग, ओजस्वी, स्फूर्ति और ऊर्जा से परिपूर्ण हैं।

जेल-नेति का प्रयोग-दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल, पुणे के डॉक्टर के पास हर रोज सैंकड़ों कोरोना के मरीज आते हैं। इससे डॉक्टरों की खुद संक्रमित होने की रिस्क बहुत बढ़ जाती है। पर इन्होंने एक अनोखा प्रयोग शुरू किया जिससे इनके डॉक्टर संक्रमित नहीं हुए। वे रोज दिन में निवाए पानी से दो बार जल-नेति कर रहे हैं, जिससे वे अभी तक कोरोना से सुरक्षित हैं। जयपुर में भी 'राजस्थान अस्तपाल' के डॉक्टर जलनेति द्वारा रोज खुद की सुरक्षा करके कोरोना मरीजों को ठीक कर रहे हैं।

पसीना निकाले-दिनभर में कोई न कोई शारीरिक श्रम जरूर करें। जैसे कि प्रतिदिन 36 वन्दना, खुली हवा में योग और प्राणायाम एवं सैर करना तथा कसरत करना।

दुआ/मंगलमैत्री का प्रभाव-यहाँ आपके समक्ष कुछ रामबाण मन्त्र रखे जा रहे हैं जो न सिर्फ कोरोना के रोग में, अपितु अन्य सभी रोगों में कारगर सिद्ध होंगे।

(1) **भक्तामर स्तोत्र का 45वाँ श्लोक**-रोज ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर एक माला फेरने से कोई भी असाध्य रोग ठीक हो सकता है। इसके साथ नमक का त्याग एवं ब्रह्मचर्य का पालन अधिक असरदार सिद्ध होता है। (2) **शान्ति प्रभु का जाप**-ऊँ शान्ति प्रभु जय शान्ति प्रभु, शान्तिकरण जय शान्ति प्रभु। (उत्तराध्ययनसूत्र 18.38) इसकी प्रतिदिन 1 माला फेरने से पूरा परिवार रोग मुक्त रहेगा। (3) **पानी की हर बूँद को तीन बार अमृत कहकर पीएँ**-वैज्ञानिक डॉ. मसारू इमोटो ने पानी पर शोध करते समय यह पाया कि मंगल एवं शुभ भावना से पानी के तत्त्वों में सकारात्मक ऊर्जा जागृत हो जाती है जो कि शरीर के लिए अमृत का काम करती है। (4) **कर भला सो हो भला**-प्रतिदिन 10 मिनिट परिवारजन समस्त जीव-राशि एवं समस्त विश्व के लिए मंगल की भावना भाएँ। यह करने से हम स्वयं ऊर्जावान् होते हैं और हमारे में सकारात्मकता बढ़ती है।

कुल मिलाकर सारांश यह है कि हमें इन सरलतम उपायों द्वारा स्वयं का रक्षण करना चाहिए। यदि कोई संक्रमित हो भी जाता है तब तुरन्त डॉ. रक्षकमलजी से 9413819827 पर सम्पर्क कर अहिंसात्मक पद्धति से निःशुल्क प्राकृतिक इलाजों द्वारा स्वयं को स्वस्थ कर सकते हैं। साथ ही निर्भय होकर अन्य प्रयोग जैसे कि जल-नेति, शारीरिक-श्रम, योग, नियमित वन्दना, आहार पर संयम और मंगल भावना मन्त्रों द्वारा आत्म-निर्भर होकर स्वयं स्वस्थ रहें एवं दूसरों को भी इस विषम काल में स्वस्थ रखें।

-बी 13, शिवालय मार्ग, सेठी कॉलोनी, जयपुर-302004 (राजस्थान) 9821044803

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 48
ISSN 2249-2011

श्रद्धार्पण

बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी श्री आर.सी. बाफना

श्री प्रकाशचन्द जैन (प्राचार्य)

राजस्थान के जोधपुर जिलान्तर्गत क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ के सेठ चुन्नीलालजी बाफना की धर्मपरायणा धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती सायरदेवीजी की कुक्षि से 11 फरवरी, 1935 को जन्मे श्री रतनलालजी बाफना का शिक्षण जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ में हुआ। वहाँ शिक्षा के साथ सुसंस्कारों का बीजारोपण किया जाता था। आप प्रारम्भ से ही कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। आपने स्कूल में पढ़ते हुए लगभग एक हजार पद्य कण्ठस्थ कर लिये थे, जिनमें से अधिकांश अभी तक याद थे।

घर की आर्थिक स्थिति सामान्य होने से आप दसवीं कक्षा की पढ़ाई करके सर्विस के लिए बेंगलोर चले गये थे। वहाँ से आपके मामाश्री फतहराजजी चोरड़िया आपको जलगाँव ले आये जहाँ आपने 18 वर्षों तक मैसर्स राजमल लखीचन्दजी ज्वैलर्स के यहाँ सर्विस की। 1970 में आपने अपना निजी शोरूम प्रारम्भ किया। अपनी प्रामाणिकता, कार्यकुशलता, दीर्घदृष्टि और पक्का इरादा आदि गुणों के कारण आपने अपने व्यवसाय को इतना विस्तारित किया कि आज देश के प्रमुख स्वर्ण व्यापारियों में आपका नाम लिया जाता है। आपने व्यवसाय में नैतिकता और ईमानदारी के बल पर उसे स्वर्ण-तीर्थ का रूप दे दिया, जहाँ पर ग्राहक गहने खरीद कर सन्तोष का अनुभव करते हैं। आप कई वर्षों तक जलगाँव जिला सर्राफा एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जलगाँव के कार्याध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने जलगाँव में धार्मिक गतिविधियों के सञ्चालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के दो बार राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। आपके कार्यकाल में संघ की खूब उन्नति हुई। 33 दीक्षाएँ आपके सत्प्रयासों से रत्नसंघ में हुई। **सप्त-सूत्री** कार्यक्रम के माध्यम से पूरे देश में दौरे करके संघ की महती प्रभावना की। आप आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के परम कृपापात्र श्रावक रहे। आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं सभी सन्त-महासतीवृन्दों पर आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति रही। आप शासन सेवा समिति के संयोजक पद को सुशोभित करते हुए संघ-सेवा में सदैव तत्पर रहे। आपने अलग-अलग विषयों पर अनेक डायरियाँ लिखीं, जिन्हें अभी लॉकडाऊन में अपने हाथों से वापस लिखकर रखा। वे इन डायरियों को अपनी सच्ची पूँजी मानते थे। एक बार जयपुर में उनकी एक डायरी सतियाँजी के पास थी, मुझे 4-5 बार फोन करके उसे मँगाकर ही सन्तुष्ट हुए। आपने आचार्य हस्ती रचित जैनधर्म का मौलिक इतिहास भाग-1 से 4 तक का जब स्वाध्याय किया तो खूब प्रसन्नता व्यक्त की और लोगों को अध्ययन हेतु प्रेरित करने के लिए पूरे देश में परीक्षाओं का आयोजन किया। जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। एक लाख रुपये के पुरस्कार वितरित किए गये। उत्तराध्ययनसूत्र के तीन भागों पर भी आपने इसी तरह परीक्षाओं का आयोजन किया। जो आपके आगम-प्रेम और गुरु-भक्ति का अनूठा उदाहरण है। आप एक सम्प्रदाय से जुड़े होने पर भी असाम्प्रदायिक विचार रखते थे। जलगाँव में पधारने वाले सभी सम्प्रदायों के सन्त-सतियों की आप भक्ति-भावपूर्वक सेवा शुश्रूषा में सदैव तत्पर रहते थे। छोटे-छोटे सन्त-सतियों को बड़े प्रेम से आदर सहित प्रेरणा और प्रोत्साहन देते। जलगाँव में आपने रत्नसंघ के अतिरिक्त अन्य सम्प्रदायों की अनेक दीक्षाएँ अपनी ओर से

सम्पन्न करवाईं। इसी का परिणाम है कि आपके स्वर्गवास पर पूरे देश से सभी सम्प्रदायों के करीब 1500 से अधिक पत्र एवं सन्देश प्राप्त हुए हैं, सभी ने आपकी सेवाओं को याद किया है।

समाज सेवा

जिस समाज के कारण हम आगे बढ़ते हैं उसके प्रति हमारा दायित्व रहता है कि हम उसके काम आएँ। बाफना साहब इन विचारों को लेकर जलगाँव तथा जिले के लोगों के लिए उदारतापूर्वक नये-नये उपक्रम चलाते थे। भूखे को भोजन मिले इसके लिए 'सस्ता भोजन-झूणका भाकर केन्द्र' चालू किया जिसमें करीब 3500 लोग लाभ ले रहे हैं। प्यास बुझाने के लिए स्थान-स्थान पर जल-मन्दिरों का निर्माण, अपङ्गों को ट्राइ-साइकिल, आँखों के रोगियों के लिए नेत्रपेढ़ी (अस्पताल) मूक-बधिरों के लिए व्यवस्था, सैंकड़ों परिवारों को मासिक आर्थिक सहयोग तथा अनेक गाँवों में स्थानक-भवन आदि खड़े किये। जोधपुर के शक्तिनगर में निर्मित स्थानक और अतिथि-भवन आपके संघप्रेम का अनूठा उदाहरण है।

जीवदया

आपके रोम-रोम में जीवदया बसी हुई थी। किसी भी दुःखी प्राणी को देखते तो आपका हृदय मोम की तरह पिघल जाता था। शाकाहार आपका प्रिय विषय था। हजारों लोगों को आपने मांसाहार छुड़वाकर शाकाहारी बनाया। गाँव-गाँव स्कूल, कॉलेजों में जाकर आपने खूब व्याख्यान दिये। शाकाहार के स्लोगन लिखवाये, जिससे पूरा वातावरण शाकाहारमय बन गया। गो-सेवा केन्द्र (अहिंसा-तीर्थ) आपके जीवन की अमर-कृति है। लगभग 4,000 गायों का संरक्षण करते हुए 36 एकड़ के क्षेत्र में गायों को आत्म-निर्भर बनने के उपक्रम चालू हैं। पूरे देश की गो शालाओं को सहयोग के साथ आत्म-निर्भर बनने हेतु सम्मेलनों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान करते थे। गायों के साथ कबूतर, खरगोश आदि का भी संरक्षण इस केन्द्र पर किया जाता है। इस केन्द्र को आपने करोड़ों रुपये खर्च कर दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया, जिससे प्रतिदिन अनेक लोग यहाँ आकर प्रेरणा प्राप्त करते हैं। यू-टर्न म्युजियम आपकी कल्पना का साकार रूप सबके आकर्षण का केन्द्र है। आप पापभीरु थे। सब कार्यों में कम से कम पाप हो, इसका सदैव ध्यान रखते थे। अधिक से अधिक पुण्य और धर्मकार्यों को करने में आप अग्रणी रहते थे।

आपका समूचा जीवन धर्ममय था। दैनिक सामायिक-स्वाध्याय, रात्रिभोजन, जमींकन्द का पूर्ण त्याग। अष्टमी, चतुर्दशी-पक्खी को उपवास-पौषध आदि धर्माराधना में रत रहे। अन्तिम दिनों में आप 9-11 सामायिक करते, आपने श्री उदयमुनिजी म.सा. की संलेखना विषयक पुस्तक को दो बार पढ़ा। बहुत प्रभावित हुए और मोह-ममता तथा आहार को कम करने में लग गये। मानो उन्हें आभास हो गया था। कहते थे मेरे पास अधिक समय नहीं है। अन्त में भी खूब दान किया। ममता को घटा लिया। आपकी धर्मसहायिका सुश्राविका नयनताराजी ने आपकी खूब सेवा की, धर्म का साथ दिया। सागारी संथारा चेतनावस्था में करवाकर आपने धर्मसहायिका के धर्म का निर्वहन किया। आपके लघुभ्राता श्री कस्तूरचन्दजी, भतीजे श्री सुशील भाई (पप्पू भाई), दत्तक सुपुत्र श्री सिद्धार्थ बाबू आदि पूरा परिवार धर्मनिष्ठ, संघसमर्पित तथा गुरुभक्ति से ओतप्रोत है। आप उनके कार्यों को आगे बढ़ाने में तत्पर हैं।

मेरे ऊपर बाफना साहब का वरदहस्त था। उन्होंने खूब स्नेह दिया, आगे बढ़ाया, उनकी स्मृति हमेशा बनी रहती है। वह पुण्यात्मा शीघ्र जन्म-मरण के चक्र को समाप्त कर, शाश्वत मोक्ष को प्राप्त करे, यही शुभकामना करता हूँ।

-महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 50
ISSN 2249-2011

श्रद्धार्पण

संघसेवी, समाजसेवी श्री रतनलाल सी. बाफना

डॉ. दिलीप धींग

अपने जीवन की सान्ध्य वेला में आचार्यश्री हस्ती ने श्री रतनलाल सी. बाफना को कहा था- ''संघ-सेवा, स्वाध्याय-साधना में कहीं कसर न पड़े, इसका खयाल रखना।'' 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' में बाफनाजी लिखते हैं-''उनका (गुरुदेव का) यह सन्देश आज भी मेरे हृदय में टकसाल में ढले सिक्के की तरह उट्टंकित है।''

वाकई गुरुवचन को स्वर्णलेख मानते हुए बाफनाजी तन-मन-धन से संघसेवा में जुटे रहे। संघहित के लिए उन्होंने अथक श्रम और अगणित कार्य किये। 'संघसेवा शिरोमणि' श्री मोफतराज मुणोत के शब्दों में-''संघ-विकास में आर.सी. बाफना सा. का योगदान मुझसे ज्यादा है।'' यह बात उन्होंने 1 मार्च, 2015 को कुसुम्बा (जलगाँव) स्थित अहिंसा तीर्थ में आयोजित आचार्य हस्ती अहिंसा पुरस्कार समारोह में कही थी। वस्तुत: रत्नसंघ के विकास में सेवारत्न श्री बाफनाजी का योगदान सर्वविदित है।

उन्होंने अपने नीतिपूर्ण व्यवसाय और प्रभूत सेवाकार्यों के माध्यम से जन-जन का विश्वास अर्जित किया। उनके सहृदय व्यक्तित्व, बहुआयामी कृतित्व और विविध सेवाकार्यों से रत्नसंघ ही नहीं, समग्र जैन समाज का निर्मल यश चहुँ ओर फैला है। जिस प्रकार अहिंसा, शाकाहार, गोसेवा, मानवसेवा और व्यवसाय के क्षेत्र में उन्होंने असाधारण कार्य किये, उसी प्रकार संघ के बहुआयामी विकास के लिए उन्होंने अनेक असाधारण कार्य किये। उनका जीवन एक ऐसा इन्द्रधनुष है, जिसमें मात्र सात ही नहीं, अपितु अनेक रंग चमकते रहे। संघसेवा से जुड़े उनके कुछ कार्यों की झलक बिन्दुवार प्रस्तुत की जा रही है-

1. सन् 1997 में वे अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (रत्नसंघ) के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने और लगातार तीन-तीन वर्ष के दो उपलब्धिपूर्ण कार्यकाल पूरे किये।
2. रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में उनकी सेवाएँ अविस्मरणीय रहीं। उनके कार्यकाल में अनेक रचनात्मक कार्य हुए तथा संघ को अभिनव ऊँचाइयाँ मिलीं।
3. सन् 1997 से 2003 तक उनके छह वर्षीय अध्यक्षीय कार्यकाल में रत्नसंघ में कीर्तिमान 33 दीक्षाएँ हुईं।
4. उन्होंने अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में सबको सप्तसूत्र दिये-सन्त-दर्शन, पारिवारिक सामायिक, जूठन नहीं छोड़ना, निन्दा-विकथा से दूरी और जय जिनेन्द्र से अभिवादन, सप्तकुव्यसन त्याग एवं अहिंसक जीवनशैली।
5. गाँव-गाँव में प्रवास यात्राएँ करके गुरुभाइयों में नई-चेतना का सञ्चार किया।
6. वे विरक्त भाई-बहनों का पूरा ध्यान रखते थे।
7. उन्होंने सन्त-सतियों के लिए सदैव 'अम्मा-पिया' की भूमिका निभाई। चारित्रात्माओं के संयमी जीवन में निखार लाने हेतु उन्होंने उनकी सेवा में जाकर उनके ज्ञान-ध्यान और संयम-साधना के विकास में सहायक सभी प्रकार की उचित व्यवस्थाएँ कीं।
8. उन्होंने सन् 1984 से 1991 तक रत्नसंघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष के रूप में सेवाएँ अर्पित कीं।
9. जीवन के अन्तिम समय तक वे शासन सेवा समिति के संयोजक और संघ-संरक्षक के रूप में अपनी अनुभवपूर्ण सेवाएँ अर्पित कर रहे थे।

10. जलगाँव में श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ की स्थापना और सञ्चालन में योगदान। इस विद्यापीठ में अनेक विद्यार्थी विद्वान्, स्वाध्यायी, जानकार श्रावक और श्रेष्ठ नागरिक बने। विद्यापीठ के अनेक विद्यार्थी रत्नसंघ तथा अन्य जैन संघों में सेवाएँ दे रहे हैं।
11. विद्यापीठ के प्राचार्य रहे पण्डित प्रकाशचन्द जैन के अनुसार-''बाफनाजी ने संघ को आगे बढ़ाने में अपनी जी-जान लगा दी।'फ
12. बाफनाजी विद्वानों और साहित्यकारों से अनुराग रखते थे, उनका ख़याल रखते थे, और उनका मान-मूल्यांकन करते थे।
13. समाजहित में बाफनाजी व्यक्ति, वक्त और जरूरतों का अवलोकन करते और उनकी पूर्ति भी करते थे। वे किसी पद पर रहे या नहीं रहे, संघ तथा समाज के लिए वे सदैव तन, मन, धन से समर्पित रहे। जो भी पद उन्हें दिया गया, उसका उन्होंने गौरव बढ़ाया। बिना पद के भी उनके सेवाकार्य गतिमान रहे।

इन कार्यों के अलावा समाज की चिरस्थायी सेवा की विराट् भावना के साथ उन्होंने अनेक स्थानों पर सामायिक स्वाध्याय-भवन, आराधना-भवन, अतिथि-भवन आदि बनाकर संघ और समाज को समर्पित कर दिये। दानवीर बाफनाजी ने न जाने कितने साधना स्थलों, धर्मस्थानकों, समाज-भवनों और संस्थाओं के निर्माण में अपना योगदान किया होगा, उसका लेखा-जोखा यहाँ नहीं दिया जा रहा है। यहाँ कुछ उन्हीं आराधना भवनों का नामोल्लेख किया जा रहा है, जिनका भूमि-क्रय से लेकर सम्पूर्ण निर्माण बाफनाजी ने करवाया और उन्हें संघ और समाज को समर्पित कर दिया।

1. बाफनाजी को लगा कि उनकी कर्मस्थली जलगाँव में उपयुक्त साधना-स्थल का अभाव है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए उन्होंने 1990 में नगरपालिका का स्थान 15 लाख रुपये में खरीदकर समाज को समर्पित कर दिया। बाद में उस पर 15 लाख रुपये और खर्च किये। जिससे 'रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन' की उपयोगिता और बढ़ गई। इस कार्य में सुरेशदादा जैन का विशेष सहयोग रहा। आज यह भवन जलगाँव का एक प्रमुख धर्मस्थान है।
2. 'रत्नसंघ की राजधानी' कहलाने वाले जोधपुर में विशाल 'रतनलाल सी. बाफना सामायिक स्वाध्याय भवन' का निर्माण करवाया। इस निर्माण में श्री कुशलचन्द बाफना ने प्रशंसनीय समयदान किया।
3. जोधपुर में ही करोड़ों की लागत का सर्व सुविधाओं से युक्त 'रतनलाल सी. बाफना अतिथि भवन' का निर्माण।
4. नसीराबाद में 'रतनलाल सी. बाफना सामायिक स्वाध्याय भवन' का निर्माण।
5. वरणगाँव में 'रतनलाल सी. बाफना सामायिक स्वाध्याय भवन' का निर्माण।
6. इच्छापुर में 'रतनलाल सी. बाफना सामायिक स्वाध्याय भवन' का निर्माण।
7. बेटावद में 'रतनलाल सी. बाफना सामायिक स्वाध्याय भवन' का निर्माण।
8. फत्तेपुर में 'रतनलाल सी. बाफना आराधना भवन' का निर्माण।

साधु-साध्वियों के प्रवास, पावस-प्रवास, प्रवचन, सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, पौषध तथा अन्य कई प्रकार के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजनों और सभाओं के लिए इन धार्मिक भवनों की उपयोगिता सदियों-सदियों तक बनी रहेगी।

इन सबके अतिरिक्त समाज में इतिहास चेतना का सञ्चार करने के लिए बाफनाजी ने आचार्य हस्ती प्रणीत 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग 1 से 4)' पर राष्ट्रीय स्तर पर स्वाध्याय परीक्षाएँ करवाईं। देश में 75 केन्द्रों पर परीक्षाओं का आयोजन किया गया, जिसमें सभी आयु वर्ग के बड़ी संख्या में लोगों ने

भाग लिया था। बाफनाजी ने मुक्त हृदय से विभिन्न और विस्तृत श्रेणियों में विजेताओं को पुरस्कृत किया। ऐसा ही सारस्वत अनुष्ठान उन्होंने मूल आगम ग्रन्थ 'उत्तराध्ययनसूत्र' पर भी करवाया और समाज में शास्त्रों के स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ाने में अपना योगदान किया। महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के गठन, गति, प्रगति और संचालन में बाफनाजी का हर प्रकार का सहयोग जुड़ा रहा।

इसके अलावा उन्होंने नई पीढ़ी में श्रेष्ठ संस्कारों के बीजारोपण एवं नैतिक और आध्यात्मिक जागरण के लिए समय-समय पर अनेक प्रकार के ज्ञान शिविरों का आयोजन करवाया था। इस सम्बन्ध में डॉ. धर्मचन्द जैन ने जिनवाणी (जुलाई-2005) में ठीक ही लिखा-''योजना-शिल्पी, धुन के पक्के एवं धर्मनिष्ठ बाफना सा. अहिंसा तीर्थ में धार्मिक शिविरों के आयोजन से प्रमोद का अनुभव करते हैं। जून-2005 में स्वाध्याय संघ का शिक्षण प्रशिक्षण शिविर एवं आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला के आयोजन इसके निदर्शन हैं।''

वस्तुत: बाफनाजी के कार्यों से पूरे जैन समाज का गौरव बढ़ा है। उनके स्थायी महत्त्व के सेवाकार्यों का लाभ पूरे समाज को मिला और मिल रहा है। वे सभी सम्प्रदायों के साधु-साध्वियों की सेवा में तत्पर रहते थे। पूरे जिनशासन की चिन्ता करते थे। सन् 2017 में उन्हें 'रत्नसंघ-विभूषण' अलंकरण से नवाज़ा गया इससे पूर्व वे 'संघरत्न' के सम्मान से सुशोभित हुए। सन् 2001 में भगवान महावीर 2600वें जन्म कल्याणक के अवसर पर उन्हें 'जैन-रत्न' अलंकरण से नवाजा गया था। अहिंसा और शाकाहार-प्रचार के क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए उन्हें 1997 में अति प्रतिष्ठित भगवान महावीर अवार्ड से सम्मानित किया गया था। इनके अलावा भी उन्हें अनेक सम्मान-पुरस्कार मिले, अनेक क्षेत्रों में उन्होंने अविस्मरणीय सेवाकार्य किये। उनके बहुआयामी योगदान को विशेष रूप से जानने के लिए इन पंक्तियों के लेखक द्वारा लिखित पुस्तक 'प्रगति का पथिक' पढ़ी जा सकती है।

-निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु)

संघसेवा-सोपान में सहकार कर लाभार्थी बनें

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के द्वारा संघहित में विभिन्न प्रवृत्तियाँ सञ्चालित हैं। गजेन्द्रनिधि एवं गजेन्द्र फाउण्डेशन की बैंक में जमा राशि पर अभी ब्याज बहुत कम हो गया है। संघ की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ अवरुद्ध न हों, इस दृष्टि से निवेदन है कि आप निम्नाङ्कित संस्थाओं के लिए खुले दिल से स्वैच्छिक राशि जमा कर संघसेवा सोपान के लाभार्थी बनें-

1. श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ
2. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
3. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र
4. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका छात्रावास)

सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट ''गजेन्द्र फाउण्डेशन-संघसेवा सोपान फण्ड (**GAJENDRA FOUNDATION-SANGH SEVA SOPAN FUND**) के नाम से बनाकर भेजें अथवा कोटक महिन्द्रा बैंक के खाता संख्या 3911757346 (**IFSC CODE-KKBK0000957**) में जमा करवायें।

निवेदक

कैलाशमल दुग्गड़	प्रमोद लोढ़ा	नरेन्द्र हीरावत	अनिल सुराणा
9841008585	9829051083	9821040899	9869541530

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 53
ISSN 2249-2011

श्रद्धार्पण

जैनविद्या एवं भारतीय दर्शन के तलस्पर्शी मनीषी प्रो. सागरमल जैन

प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन

भारतीय दर्शन और संस्कृति को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने वाले प्रमुख मनीषियों में जैनविद्या और प्राकृत आगमों के तलस्पर्शी ज्ञानाराधक प्रोफेसर सागरमल जैन का नाम प्रतिष्ठा को प्राप्त है। मध्यप्रदेश के शाजापुर ग्राम में 22 फरवरी, 1932 को जन्म लेने वाले डॉ. सागरमल जैन ने 30 नवम्बर, 2020 को संथारा ग्रहण कर 2 दिसम्बर, 2020 बुधवार को 88 वर्ष की आयु पूर्ण कर जीवन की अन्तिम साँस ली। दिवंगत प्रोफेसर सागरमल जैन के असामयिक निधन से जैनविद्या और भारतीय दर्शन के शिक्षा-जगत् में अपूरणीय क्षति हुई है।

प्रोफेसर सागरमल जैन ने 1964 से 1989 तक जबलपुर, रीवां, ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल में दर्शनशास्त्र के व्याख्याता एवं प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान की। इसी बीच भोपाल के हमीदिया कालेज में आप मध्यप्रदेश के वर्तमान मुख्यमन्त्री श्री शिवराज सिंह चौहान के शिक्षक भी रहे हैं। डॉ. जैन सन् 1979 से जैनविद्या और प्राकृत अध्ययन की प्रमुख संस्था पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी के निदेशक के रूप में मार्गदर्शन करते रहे। शासकीय सेवा से मुक्त होकर आप बनारस में ही रहने लगे थे। वहाँ आपने 1997 तक 18 वर्षों तक अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। इस अवधि में आपके निर्देशन में पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए हैं। जैनविद्या के कई ग्रन्थ प्रकाशित हुए और लगभग 59 विद्वानों ने पीएच-डी. के लिए आप से मार्गदर्शन प्राप्त किया। श्रमण शोधपत्रिका का आपने कुशल सम्पादन किया है। आपने अनेक संगोष्ठियाँ और सम्मेलन वहाँ पर आयोजित कराये हैं।

प्रोफेसर सागरमल जैन यद्यपि श्वेताम्बर समाज की स्थानकवासी परम्परा में जन्मे थे, किन्तु आपकी वैचारिक उदारता और आगम ग्रन्थों की विशेषज्ञता के कारण आप सभी परम्पराओं के विद्वानों में लोकप्रिय थे। प्रज्ञाचक्षु पण्डित बेचरदास, पण्डित दलसुख भाई मालवणिया, डॉ. मोहनलाल मेहता, डॉ. नरेन्द्र भानावत आदि मूर्धन्य मनीषियों की श्रेणी में प्रोफेसर सागरमल जैन का स्थान था। डा. जैन अच्छे लेखक होने के साथ गम्भीर विचारक एवं प्रभावक वक्ता भी थे। उदयपुर से आपका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग के कई कार्यक्रमों में हमने उन्हें आमन्त्रित किया था। महावीर परिषद्, उदयपुर के समारोह में सार्वजनिक व्याख्यान देने के लिए वे पधारे थे। उदयपुर में स्थित आगम-अहिंसा समता एवं प्राकृत संस्थान के वर्षों तक डॉ. जैन मानद निदेशक रहे हैं। हमारी भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी, उदयपुर की स्थापना में डॉ. जैन का मार्गदर्शन प्राप्त था।

प्रोफेसर सागरमल जैन सहज, सरल और साधक व्यक्तित्व के धनी मनीषी थे। सकारात्मक विचारधारा के पोषक और जैन आगमों के गहन अध्येता होने के कारण देश-विदेश में आपकी बहुत प्रतिष्ठा थी। 1985 में असेम्बली ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स तथा 1993 में पार्लियामेन्ट ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स में अमेरिका में आपने जैनधर्म का

प्रतिनिधित्व किया था। कनाडा, अमेरिका, यूरोप के अनेक शहरों में आप व्याख्यान देने जाते रहे।

प्रोफेसर सागरमल जैन अपने जीवनकाल में स्वयं जैनधर्म का पालन करते रहे और जैनधर्म के सन्त तथा साध्वियों को शिक्षा प्रदान करने में भी अग्रणी रहे हैं। आपने अपने निजी पुस्तकालय का सार्वजनिक उपयोग करने के लिए 1998 में शाजापुर में प्राच्यविद्या शोधपीठ की स्थापना की, जिसमें 15,000 पुस्तकें और 700 पाण्डुलिपियों का संग्रह है। यहाँ पर साधु साध्वियों के रहने और साधना की पूरी व्यवस्था है। इस सुविधा के कारण डॉ. जैन अब तक लगभग 300 साध्वियों को उच्च अध्ययन की शिक्षा प्रदान कर चुके हैं। डॉ. जैन के सुपुत्र श्री नरेन्द्र जैन और श्री पीयूष जैन सपरिवार शोधपीठ को सब सुविधा प्रदान कर रहे हैं।

जैनविद्या एवं प्राकृत विषय पर प्रोफेसर सागरमल जैन की लगभग 60 पुस्तकें और 300 शोध आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। इस महत्त्वपूर्ण साहित्य-सेवा के लिए प्रो. जैन को वर्ष 2017 में पाँच लाख रुपयों की राशि सहित राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य प्रतिष्ठित अवार्ड भी प्रो. जैन को प्राप्त हुए। यथा-प्रदीपकुमार रामपुरिया अवार्ड (1986 एवं 98), आचार्य हस्तीमल स्मृति सम्मान (1994), स्वामी प्रणवानन्द पुरस्कार (1987), कला मर्मज्ञ सम्मान (2006), गौतम गणधर सम्मान, प्राकृत भारती अकादमी (2008), आचार्य तुलसी प्राकृत सम्मान (2009) आदि।

जैनविद्या एवं प्राकृत तथा भारतीय दर्शन के ऐसे मूर्धन्य विचारक और सशक्त लेखक को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि एवं नमन।

-अध्यक्ष, भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी, उदयपुर (राजस्थान)

आभार एवं सूचना

जिन उदारमना श्रावक-श्राविकाओं ने जिनवाणी के 'जैन जीवनशैली' विशेषाङ्क हेतु अर्थ सहयोग कर लाभ लिया है, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है। जिन महानुभावों ने इसमें अपना योगदान करने की स्वीकृति प्रदान की है, किन्तु अभी तक राशि जमा नहीं करा पाए हैं, वे अपनी स्वीकृति राशि का चैक जिनवाणी या JINWANI के नाम पर भेज सकते हैं, अथवा यह राशि SBI बैंक में बैंक खाता संख्या 51026632986 IFS Code SBIN0031843 में जमा कराकर जमापर्ची की फोटो एवं जमाकर्ता का विवरण कार्यालय सहायक श्री अनिल कुमारजी जैन मोबाइल 9314635775 पर भिजवा कर अनुगृहीत करें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

जिनवाणी विशेषाङ्क पर प्रतिक्रियाएँ

जिनवाणी (दिसम्बर 2020) के विशेषाङ्क 'जैन जीवनशैली' पर पाठकों एवं विशेषज्ञों की अच्छी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। जैनधर्म-दर्शन एवं प्राकृतभाषा के मूर्धन्य मनीषी प्रो. कमलचन्दजी सोगानी, जयपुर ने फोन पर प्रमोद प्रकट करते हुए कहा कि यह विशेषाङ्क विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के चेयरमेन सहित जैनेतर विद्वानों को भी प्रेषित किया जाए। जिनवाणी पत्रिका के लेखक डॉ. रमेशजी मयंक ने कहा कि इस विशेषाङ्क का अंग्रेजी अनुवाद कर इसे अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित किया जाए। मुमुक्षु श्री किरणजी मेता ने कहा कि इस विशेषाङ्क की बहुत माँग रहेगी। वैज्ञानिक डॉ. अनिलजी जैन ने कहा कि विशेषाङ्क बहुत श्रमपूर्वक तैयार किया गया है।

-प्रधान सम्पादक

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 55
ISSN 2249-2011

श्रद्धार्पण

मूर्धन्य मनीषी एवं आत्मसाधक प्रो. सागरमलजी जैन

प्रो. धर्मचन्द जैन

जैनधर्म-दर्शन के मूर्धन्य विद्वान् एवं प्राकृत साहित्य के योगदान हेतु 'राष्ट्रपति सम्मान' से सम्मानित प्रो. सागरमलजी जैन ने कार्तिक पूर्णिमा 30 नवम्बर, 2020 को पूर्ण सजग अवस्था में मध्यप्रदेश के शाजापुर में अपने निवास स्थान पर तत्र विराजित महासती श्री प्रियदर्शनाजी से संथारा स्वीकार किया एवं दो दिन पश्चात् 2 दिसम्बर, 2020 को सांयकाल 5 बजकर 40 मिनिट पर 88 वर्ष की आयु में समाधिमरण का वरण किया। एक विद्वान् का समाधिमरण होने के सम्बन्ध में यह उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें उनके जीवन की विचारधारा प्रतिबिम्बित होती है। डॉ. सागरमलजी ने अपने पुत्रों एवं परिवारजनों को पहले से ही अपनी भावना व्यक्त कर रखी थी कि मैं समाधिमरण पूर्वक देह छोड़ूँ, इसमें आप सब का सहकार रहे। इसीलिए ज्येष्ठ पुत्र श्री नरेन्द्र कुमारजी एवं कनिष्ठ पुत्र श्री पीयूषजी इन्दौर ने आदरणीय विद्वत्श्रेष्ठ श्री सागरमलजी के गिरते स्वास्थ्य को देखकर अस्पताल ले जाने की अपेक्षा संथारा कराना ही उचित समझा। इससे डॉ. सागरमलजी जैन का एक मनोरथ पूर्ण हुआ। वे साल-डेढ़ साल से गमनागमन में अशक्तता का अनुभव कर रहे थे एवं प्राय: शाजापुर या इन्दौर में ही रह रहे थे।

आपका जन्म 22 फरवरी, 1932 को शाजापुर में विक्रम सम्वत् 1988 की माघ पूर्णिमा को श्री राजमलजी शक्करवालों की धर्मसहायिका श्रीमती गंगाबाईजी की कुक्षि से हुआ। आपके दादा-दादीजी का देहावसान आपके पिताजी के बाल्यकाल में ही हो गया था। अत: शैशव अवस्था में आपको सर्वाधिक प्यार-दुलार एवं धर्म संस्कार अपने पिताजी की मौसीजी विरक्ता पानबाई से प्राप्त हुए जो आगे चलकर दीक्षित हो गई।

आप बचपन से ही प्रतिभा सम्पन्न थे। आपने मिडिल कक्षा की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने साथ शाजापुर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आपने इसी समय मित्रों के साथ पार्श्वनाथ बालमित्र मण्डल की स्थापना की, जो सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों के साथ अपने सदस्यों को बीड़ी, सिगरेट आदि दुर्व्यसनों से मुक्त रखता था। फलस्वरूप यह मित्रमण्डली व्यसन-मुक्त और धार्मिक संस्कारों से युक्त रही। आपका विवाह 17 वर्ष की वय में ही श्रीमती कमलाबाई, शुजालपुर के साथ सम्पन्न हुआ। किशोरवय में ही आप गृहस्थ जीवन और व्यवसाय से जुड़ गए। फिर भी आपकी अध्ययनशीलता बनी रही। सन् 1952 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से आपने 'व्यापार विशारद' की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा सन् 1954 में अर्थशास्त्र विषय में साहित्यरत्न की उपाधि प्राप्त की। 1955 में हाईस्कूल, 1957 में इण्टर कॉमर्स एवं 1961 में बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। आपके सत्प्रयत्नों से शाजापुर में महाविद्यालय की स्थापना हुई।

सन् 1963 में आपने दर्शनशास्त्र में एम.ए. की परीक्षा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से कला संकाय के रजत पदक के साथ उत्तीर्ण की। स्वर्ण नियन्त्रण कानून लागू होने के पश्चात् आपका मन शिक्षा जगत् में ही अधिक रुचिशील रहा और सन् 1964 में आप मध्यप्रदेश शासन की ओर से दर्शनशास्त्र के व्याख्याता पद पर नियुक्त हो गए। सर्राफे की दुकान पर दो मुनीमों की व्यवस्था करके आप शासकीय सेवा के लिए चल दिए। एक व्याख्याता के रूप में आपको जो वेतन मिलता था उसकी अपेक्षा दो मुनीमों को दिया जाने वाला वेतन कहीं अधिक था। फिर भी आपकी दृष्टि में अर्थ की प्रधानता नहीं थी। आपने महाकौशल महाविद्यालय, जबलपुर में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। यहाँ आचार्य रजनीश जो

बाद में भगवान रजनीश एवं ओशो के नाम से प्रसिद्ध हुए, वे भी कार्यरत थे, जो डॉ. सागरमलजी के पूर्व परिचित थे। किन्तु शासकीय आदेश के कारण आप वहाँ से रीवां एवं ग्वालियर के महाविद्यालय में भी रहे। यहाँ आपने छात्रों के साथ कठोर परिश्रम किया तथा एक सुयोग्य अध्यापक के रूप में पहचाने गए। ग्वालियर में तीन वर्ष रहने के पश्चात् मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग से सहायक प्राध्यापक के रूप में चयनित होकर आप कुछ समय इन्दौर कॉलेज में रहे तथा जुलाई 1968 में हमीदिया कॉलेज भोपाल में सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष के रूप में नियुक्त हो गए। आपने यहाँ रहकर सन् 1969 में लगभग 1500 पृष्ठों का बृहत्काय शोध प्रबन्ध लिखा जो 'जैन, बौद्ध और गीता के आचार-दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर केन्द्रित था, जिस पर आपको पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त हुई। भोपाल में आपकी अध्यापन शैली के कारण दर्शनशास्त्र में छात्रों की संख्या दो से सौ एवं फिर तीन सौ तक हो गई।

इन्हीं दिनों वाराणसी स्थित पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान में डॉ. मोहनलालजी मेहता के अनन्तर एक सुयोग्य एवं समर्पित निदेशक की आवश्यकता थी। अत: पण्डित दलसुख भाई मालवणिया के आदेश को शिरोधार्य कर आप पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी की व्यवस्था को सम्भालने के लिए सन् 1979 में मध्यप्रदेश शासन से प्रतिनियुक्ति आदेश पर पार्श्वनाथ विद्यापीठ में निदेशक के पद पर आ गए। सन् 1997 तक अपनी अमूल्य सेवाएँ पार्श्वनाथ विद्यापीठ को जारी रखीं।

पार्श्वनाथ विद्याश्रम में आपके पदार्पण से संस्थान को एक नवजीवन मिला। आपने अपनी सूझबूझ एवं परिश्रम से पार्श्वनाथ विद्यापीठ का नाम पूरे देश में ही नहीं, विदेशों तक पहुँचा दिया। आपके यहाँ रहते हुए विशाल साहित्य का प्रकाशन हुआ। विद्याश्रम को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त होने के कारण इतिहास, दर्शन, संस्कृति, संस्कृत एवं पालि विभाग से शोध छात्र आने लगे। आपने जैनधर्म-दर्शन के साथ जैन कला, पुरातत्त्व और इतिहास का भी अध्ययन किया। आपने अनेक कठिन दार्शनिक ग्रन्थों का भी दक्षतापूर्वक मर्म समझाया। अनेक साधु-साध्वियों एवं छात्रों ने आपके ज्ञान का लाभ लिया। सन्त श्री ललितप्रभजी एवं श्री चन्द्रप्रभजी ने भी आपके निर्देशन में शोधकार्य सम्पन्न किया। डॉ. जितेन्द्र भाई शाह जैसे विद्वान् भी आपके निर्देशन में पी-एच.डी. कर आज ख्याति प्राप्त हैं। डॉ. अशोक सिंह, डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय आदि ने आपके सान्निध्य में उत्साह से कार्य किया। यही कारण है कि यहाँ से विपुल संख्या में साहित्य का प्रकाशन हुआ। यहाँ से प्रकाशित होने वाली 'श्रमण' पत्रिका के सम्पादक के रूप में भी आपका यश बढ़ा। आपने 'दार्शनिक' नामक त्रैमासिक पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक के दायित्व का भी निर्वहन किया तथा अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बने। उदयपुर की संस्था 'आगम-अहिंसा, समता और प्राकृत संस्थान' के भी आप मानद् निदेशक रहे, जहाँ से प्रकीर्णक साहित्य का डॉ. सुभाष कोठारी, डॉ. सुरेश सिसोदिया द्वारा कृत हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशन हुआ। आपने अनेक राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों और सम्मलेनों की अध्यक्षता की एवं संयोजन भी किया।

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के निदेशक पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् भी आप यहाँ के कार्यों का मार्गदर्शन करते रहे तथा फिर सचिव के रूप में इस संस्था का कुछ वर्षों तक मार्गदर्शन किया। शाजापुर लौटने पर यहाँ भी आप खाली नहीं बैठे। अपने बलबूते पर 'प्राच्य विद्यापीठ' की स्थापना कर यहाँ सैंकड़ों साधु-साध्वियों को अध्यापन एवं शोधकार्य द्वारा लाभान्वित किया। आपके मार्गदर्शन में कुल 59 शोधार्थियों को पी-एच.डी. एवं डी.लिट् की उपाधि प्राप्त हुई। इनमें जैन विश्व भारती, लाडनूँ से पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त 21 साधु-साध्वी भी सम्मिलित हैं। जैन विश्व भारती, लाडनूँ में आप एमिरटस प्रोफेसर भी रहे। आध्यात्मिक शिक्षा समिति, जयपुर के शिक्षकों ने भी प्राच्य विद्यापीठ में दो बार सप्ताह-दस दिन के लिए आचाराङ्गसूत्र एवं भारतीय दर्शनों का अध्ययन किया। भारत देश के विभिन्न नगरों में आपके व्याख्यान हुए। आपने अमेरिका

के शिकागो, राले, ह्यूस्टन, न्यूजर्सी, उत्तरी करोलीना, वाशिंगटन, सेनफ्रांसिस्को, लॉसएंजिल्स, फिनीक्स, सेण्टलुईस, पिट्सबर्ग, न्यूयार्क तथा कनाडा एवं इंग्लैण्ड की अकादमिक यात्राएँ की एवं वहाँ व्याख्यान दिए।

आपका जन्म यद्यपि श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा में हुआ, किन्तु विद्या के क्षेत्र में आप सम्प्रदाय तक सीमित नहीं थे। आप श्वेताम्बर परम्परा की खरतरगच्छ सम्प्रदाय में लोकप्रिय रहे। आप दिगम्बर परम्परा के विद्वानों के आदरणीय रहे। सबसे आपका संवाद था। आपने 'यापनीय परम्परा' पर जो ग्रन्थ लिखा उसमें दिगम्बर परम्परा के मान्य अधिकांश ग्रन्थों को यापनीय परम्परा का सिद्ध किया। इससे दिगम्बर परम्परा के साधुओं एवं विद्वानों में खलबली हो गई। भोपाल के डॉ. रतनचन्दजी को इसके खण्डन में ग्रन्थ लेखन का दायित्व दिया गया, तो उन्होंने मित्रता के नाते प्रो. सागरमलजी से ही इसका उपाय पूछा। आपने सहज भाव से अपने ही ग्रन्थ के खण्डन हेतु उन्हें युक्तियाँ बतायी, जिसके प्रति आदरणीय रतनचन्दजी ने शाजापुर में आयोजित एक संगोष्ठी में कृतज्ञता ज्ञापित की थी।

आपने विपुल साहित्य की रचना की। आपकी 76 मौलिक पुस्तकें एवं 228 सम्पादित पुस्तकें तथा 300 शोधालेख प्रकाशित हैं। आपकी प्रमुख पुस्तकें हैं-1. जैन-बौद्ध और गीता के आचार-दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन भाग 1 एवं 2, 2. तत्त्वार्थसूत्र और उसकी परम्परा, 3. गुणस्थान सिद्धान्त : एक विश्लेषण, 4. ऋषिभाषित : एक अध्ययन, 5. जैनधर्म और तान्त्रिक साधना, 6. जैनधर्म का यापनीय सम्प्रदाय, 7. जैनधर्म एवं दर्शन, 8. स्थानकवासी जैन परम्परा का इतिहास, 9. सागर जैन विद्या-भारती (भाग 1-6), 10. जैनधर्म का मर्म, 11. जैन एकता का प्रश्न, 12. आचार्य हरिभद्र और उनका अवदान, 13. भारतीय संस्कृति के उन्नयन में आध्यात्मिक जीवनदृष्टि की भूमिका, 14. अध्यात्मवाद और विज्ञान, 15. जैनधर्म का संक्षिप्त इतिहास, 16. अनेकान्त, स्याद्वाद और सप्तभङ्गी, 17. अहिंसा की प्रासङ्गिकता, 18. जैन कर्म सिद्धान्त : एक विश्लेषण, 19. जैन भाषा दर्शन, 20. An Introduction to Jaina Sādhnā 21. Peace, Religious Harmony and solution of world problems from Jaina perspective 22. श्रावकधर्म की प्रासङ्गिकता प्रश्न, 23. प्राकृत भाषा का प्राचीन स्वरूप, 24. प्राकृत एवं संस्कृत साहित्य के विभिन्न वर्गों से सम्बन्धित आलेख, 25. प्राचीन जैनाचार्य, 26. जैनधर्म-दर्शन का ऐतिहासिक विकास-क्रम।

आपके शोधात्मक एवं विश्लेषणात्मक आलेखों से 'जिनवाणी' पत्रिका भी सुशोभित होती रही है तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी आपके आलेख प्रकाशित हुए हैं। जोधपुर में सेवामन्दिर के माध्यम से हमने मासिक विचार गोष्ठी का उपक्रम प्रारम्भ किया था, जिसका शुभारम्भ 19 अक्टूबर, 2003 को आपकी अध्यक्षता में हुआ तथा इसकी सन् 2012 में सम्पन्न 101वीं मासिक विचार गोष्ठी में भी आपका उद्बोधन हुआ। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भी आपके वक्तव्यों का लाभ मिला तथा आपसे बहुत कुछ सीखने को मिला। पूज्य आचार्य हस्ती जब युवावय में शाजापुर पधारे थे, तब आपने स्वाध्यायी बनाने का संकल्प किया था, जो आपकी धर्मनिष्ठा एवं स्वाध्याय के प्रति सहज स्नेह का प्रतीक रहा।

आदरणीय प्रोफेसर सागरमलजी को न केवल जैन समाज में अपितु भारतीय धर्म-दर्शनों के विद्वत्समाज में भी पर्याप्त यश प्राप्त हुआ। उन्हें अनेक सम्मानों से अलङ्कृत कर संस्थाओं ने प्रमोद का अनुभव किया।

आप जिस प्रकार श्वेत एवं स्वच्छ कुर्ता पायजामा के परिधान में रहते थे उसी प्रकार भीतर से भी आपका चित्त उतना निर्मल था। सादगी एवं विचारों में उच्चता के साथ आपका जीवन प्रमोद एवं प्रसन्नता से ओतप्रोत रहा। नैतिकता, प्रामाणिकता, निर्लोभता, सेवा एवं विद्याप्रेम के आप मूर्तिमान् पुरुष थे।

आपके संथारापूर्वक समाधिमरण पर श्रद्धापूर्वक शत-शत नमन।

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 58
ISSN 2249-2011

जीवन-व्यवहार

व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य

श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. डर का न होना वीरता नहीं है, बल्कि डर पर विजय पाना वीरता है। बहादुर वह है जो भय को परास्त करता है। सच्चाई यह है कि डर तो डराने के लिए सब के पास आएगा। आपके पास जो भी है, वह कम हो या अधिक, उसको खोने का डर हमेशा रहता है। हानि होने का भय, फिर वह चाहे आर्थिक हानि हो, सामाजिक और पारिवारिक पीड़ा हो या प्रतिकूल स्वास्थ्य हो, सभी को मानसिक रूप से प्रताड़ित एवं सशंकित रखता है। जिस व्यक्ति ने इस डर पर काबू पा लिया, अपनी किसी भी तरह की हानि होने पर भी विचलित न होने का साहस प्राप्त कर लिया, आने वाली किसी भी परेशानी अथवा मुसीबत का डटकर सामना करने का जज़्बा पैदा कर लिया, सही अर्थों में वह इंसान ही साहसी और सफल व्यक्तित्व का धनी है।

2. असफल होना कोई गुनाह नहीं है, लेकिन सफलता के लिए कोशिश ही न करना ज़रूर गुनाह है। प्रयत्न पूरे मन से, अपने सामर्थ्य के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करते हुए किया जाए, तो सफलता की निश्चित सम्भावना होती है। किन्तु प्रयत्न करते हुए यदि असफलता भी हाथ लगती है, तो यह कोई अपराध नहीं है। अर्जित अनुभव के साथ निश्चित सफलता हेतु पुनः प्रयास किये जाने चाहिये। सफलता की धारणा रखना और फिर उसको प्राप्त करने के लिए प्रयास करने की दृढ़ इच्छा-शक्ति होना अति आवश्यक है। किन्तु कर्महीन रहकर प्रयास ही न करना न केवल नैतिक अपराध की श्रेणी में आता है वरन् पश्चात्ताप तथा आत्मग्लानि का कारण भी बनता है। अतः निश्चित सफलता के मूलसूत्र कोशिश को जारी रखिये एवं लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरन्तर ईमानदार प्रयास करते रहिये।

3. जब आप कुछ गँवा बैठते हैं, तो उससे प्राप्त शिक्षा को न गँवाएँ। जीवन स्वयं में एक घटना चक्र है, जहाँ कुछ घटनायें सुख तो कुछ दुःख, कुछ लाभ तो कुछ हानि पहँचाती हैं। अब यह सब हमारे विवेक पर निर्भर करता है कि हम विपरीत तथा विकट परिस्थितियों में भी किस प्रकार व्यवहार करते हैं, और खुद पर कैसे नियन्त्रण एवं संयम रखते हैं। इसके अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण यह भी है कि कष्ट, दुःख और हानि का घटना चक्र भी हमको कुछ-न-कुछ शिक्षा तथा ज्ञान प्रदान करता है। हम हानि एवं कष्ट होने पर कुछ गवाँ ज़रूर देते हैं, किन्तु उनसे शिक्षा लेते हुए ही हमें भविष्य का खाका खींचते हुए योजनाएँ बनानी होंगी, ताकि वैसी हानिकारक एवं कष्टदायक घटनाओं की जीवन में पुनरावृत्ति न हो।

4. बड़ा अपराध है अन्याय सहना और ग़लत व्यक्ति के साथ समझौता करना... यह नकारात्मक प्रवृत्ति एवं पलायनवादी दृष्टिकोण है। जब हम किसी शक्तिशाली, प्रभावी, किन्तु नकारात्मक प्रवृत्ति के व्यक्ति का अन्याय सहते हैं तो यह अपने आप पर स्वयं अन्याय एवं प्रताड़ना करने के समान है। यह हमारे भीतर नकारात्मकता को जन्म देकर हमको हिंसक बनाती है, और हम बदले में अपने से कमज़ोर व्यक्ति पर अत्याचार करने को प्रवृत्त होते हैं। इसी प्रकार, यदि हम ग़लत व्यक्ति के साथ समझौता करते हैं अथवा उसका साथ देते हैं, तो हम तत्काल प्रभाव से नकारात्मकता को ओढ़ते हुए अन्याय करने हेतु स्वयं को तैयार कर लेते हैं। हमको इस नकारात्मक ऊर्जा एवं हिंसात्मक प्रवृत्ति को किसी भी तरह अपने जीवन मे प्रवेश करने से रोकना है। न स्वयं अन्याय सहना है और न ही किसी के साथ अन्याय करना या होने देना है। **(क्रमशः)**

-Surana & Surana International Law Centre, 61-63, Dr. Radhakrishnan Road, Mylapore, Chennai-600004 (Tamilnadu)

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 59
ISSN 2249-2011

तत्त्व-चर्चा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (9)

(मतिज्ञान के भेद)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– मतिज्ञान के मुख्य भेद कौन-कौन से होते हैं?

समाधान–मतिज्ञान के मुख्य भेद दो बतलाये हैं–1. श्रुतनिश्रित 2. अश्रुतनिश्रित।

मन और इन्द्रियों के माध्यम से जिन विषयों का ज्ञान पूर्व में किया हुआ हो, गुरु आदि के श्रीमुख से कई बार सुना हुआ हो अथवा लोक व्यवहार में-दैनिक जीवन में अनेक बार सुना हो, परन्तु अतीत के अनुभव के आलम्बन के बिना वर्तमान में संस्कारों के कारण सहज रूप से जो ज्ञान होता है, उसे श्रुतनिश्रित मतिज्ञान कहते हैं।

जैसे बच्चे ने एक वस्तु देखी। उसने माँ से पूछा- यह क्या है? माँ ने कहा-बेटा, यह घड़ा है। दो चार बार देखकर उसने निर्णय कर लिया कि ऐसी वस्तु घड़ा होती है। इसके कुछ अन्तराल पश्चात् पुनः उसने घड़ा देखा, परन्तु भूतकालीन अनुभवों के बिना ही उसने तय कर लिया कि यह घड़ा है। इस प्रकार वर्तमान में सहज होने वाला ज्ञान श्रुतनिश्रित मतिज्ञान कहलाता है।

जिज्ञासा– श्रुतनिश्रित मतिज्ञान के कौन-कौन से भेद होते हैं?

समाधान–श्रुतनिश्रित मतिज्ञान के चार भेद बतलाये हैं–1. अवग्रह, 2. ईहा, 3. अवाय और 4. धारणा।

मन और इन्द्रियों के साथ जानने योग्य विषय का सम्बन्ध होने से 'कुछ है', इस प्रकार का अस्पष्ट ज्ञान अवग्रह कहलाता है।

जिज्ञासा– अवग्रह कितने प्रकार का होता है?

समाधान–अवग्रह दो प्रकार का होता है– 1.व्यञ्जनावग्रह और 2. अर्थावग्रह।

चक्षु और मन को छोड़कर शेष चार इन्द्रियों का पदार्थ के साथ सम्बध होने पर भी 'कुछ है' इस प्रकार सामान्य-अस्पष्ट बोध होना, स्पष्ट ज्ञान नहीं हो पाना, व्यञ्जनावग्रह मतिज्ञान कहलाता है।

चक्षु और मन को छोड़ने का कारण यह है कि ये दोनों अप्राप्यकारी इन्द्रियाँ हैं। जबकि व्यञ्जनावग्रह प्राप्यकारी इन्द्रियों से ही होता है, अतः व्यञ्जनावग्रह चार प्रकार का ही होता है।

जिज्ञासा– प्राप्यकारी किसे कहते हैं?

समाधान–जिन इन्द्रियों से विषय वस्तु का संयोग होने पर ही उनसे सम्बन्धित ज्ञान होता है, उन्हें प्राप्यकारी इन्द्रियाँ कहते हैं। जैसे-कान में शब्दों का प्रवेश होने पर सुनाई देता है। नाक में गन्ध के परमाणु प्रवेश होने पर सुगन्ध-दुर्गन्ध का अहसास होता है। रसना अर्थात् जिह्वा से पदार्थ का संयोग होने पर कड़वा, मीठा, तीखा आदि स्वाद का अनुभव होता है। त्वचा अर्थात् स्पर्शनेन्द्रिय से पदार्थ का संयोग होने पर ही ठण्डा, गर्म, लूखा, चिकना आदि स्पर्शों का ज्ञान होता है।

जिज्ञासा– अप्राप्यकारी किसे कहते हैं?

समाधान–जिन इन्द्रियों से विषय-वस्तु का संयोग नहीं होने पर भी उन विषयों का ज्ञान हो जाता है, उन्हें अप्राप्यकारी कहते हैं। चक्षुरिन्द्रिय और मन से विषय-पदार्थ का संयोग नहीं होने पर भी उन विषयों का ज्ञान हो जाता है, जैसे-चक्षु दूर-सुदूर स्थित वृक्ष, पानी, अग्नि, पर्वत आदि को देखती है, परन्तु चक्षु का उनसे स्पर्श नहीं होता है। न तो आँखे भीगती हैं, न जलती हैं, न भारी होती हैं, इसलिए चक्षुरिन्द्रिय अप्राप्यकारी कहलाती है।

मन भी अप्राप्यकारी होता है, वह नदी का चिन्तन

करता है, किन्तु भीगता नहीं है। अग्नि का चिन्तन करता है, किन्तु जलता नहीं है, विष का चिन्तन करता है, किन्तु विषैला नहीं बनता है।

जिज्ञासा– जब व्यञ्जनावग्रह में स्पष्ट ज्ञान नहीं होता है तो उसे श्रुतनिश्रित मतिज्ञान के भेदों में क्यों लिखा जाता है?

समाधान–व्यञ्जनावग्रह में ज्ञान का अभाव नहीं है, ज्ञान के अनुभव का अभाव है। अत: व्यञ्जनावग्रह को ज्ञान का भेद मानना उपयुक्त है। ज्ञान की शुरुआत इसी से होती है। यह अर्थावग्रह से पूर्व की अवस्था है। यदि ऐसा नहीं माना जाये तो एक पत्थर को तोड़ने में हथोड़े के जो 100 प्रहार किये गये, उनमें 99 प्रहार बेकार हो जायेंगे। जबकि यह प्रत्यक्ष देखा जाता है कि 100वें प्रहार का जितना महत्त्व है, उतना ही पहले प्रहार का भी महत्त्व है। यदि पहला प्रहार नहीं होता तो 100वाँ प्रहार भी नहीं होता।

जिज्ञासा– अर्थावग्रह किसे कहते हैं?

समाधान–द्रव्य, जाति, गुण, क्रिया, नाम की कल्पना के बिना 'यह कुछ है' इस प्रकार का सामान्य ज्ञान अर्थावग्रह कहलाता है। अर्थावग्रह पाँचों इन्द्रियों तथा मन, इन छहों से होता है। चक्षु और मन अप्राप्यकारी होने से इनसे सीधा अर्थावग्रह ही होता है, जबकि शेष चार इन्द्रियों से व्यञ्जनावग्रह होने के अन्तर्मुहूर्त्त में अर्थावग्रह होता है।

व्यञ्जनावग्रह का काल पृथक्त्व श्वासोच्छ्वास (2 से 9 श्वासोच्छ्वास) प्रमाण अन्तर्मुहूर्त्त माना जाता है। पूज्य आचार्य श्री अमोलक ऋषि जी म.सा. ने अपने स्वरचित ग्रन्थ 'मुक्ति का सोपान' में मिश्रगुणस्थान की स्थिति व्यञ्जनावग्रह के समान पृथक्त्व श्वासोच्छ्वास प्रमाण अन्तर्मुहूर्त्त की बतलायी है। अर्थावग्रह का काल 1 समय का होता है। व्यञ्जनावग्रह में ज्ञान का अनुभव नहीं है, जबकि अर्थावग्रह में अस्पष्ट ज्ञान का हल्का सा अनुभव होता है।

जैसे कोई पुरुष दूर स्थित अन्य पुरुष को बुलाता है, वह पुरुष दसवीं आवाज़ में ऐसा अनुभव करता है कि मुझे कोई बुला रहा है, परन्तु आवाज़ किसकी है? किधर से आ रही है? यह नहीं जान पाता है, यह अर्थावग्रह कहलाता है। उस दसवीं आवाज़ से पहले की जो 9 बार की आवाज़ का अव्यक्त ज्ञान है, वह व्यञ्जनावग्रह कहलाता है।

जिज्ञासा– 'ईहा' किसे कहते हैं?

समाधान–अर्थावग्रह द्वारा ग्रहण किये शब्द, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श के विषयों के बारे में निर्णय करने रूप विभिन्न विकल्प आदि से युक्त विचार 'ईहा' कहलाता है।

कुछ होने के अहसास होने के पश्चात् यह ठूँठ है या पुरुष? आवाज स्त्री की है या पुरुष की? स्वाद तीखा है या मीठा? शीत स्पर्श है या उष्ण स्पर्श? वर्ण काला है या नीला? गन्ध गुलाब के फूल की है या अन्य किसी की? इस प्रकार का मानसिक ऊहापोह 'ईहा' मतिज्ञान कहलाता है।

शाम के समय में व्यक्ति को एक ठूँठ दूर से दिखाई देने पर उसके मन में शंका हुई कि यह ठूँठ है या पुरुष? उसकी विचारधारा आगे बढ़ी। उसने सोचा यदि पुरुष होता तो उसमें गति होती, हलन-चलन होता, परन्तु यह तो बिल्कुल स्थिर है। इसके ऊपर तो पक्षी बैठ रहे हैं, घौंसले बने हुए हैं, इस प्रकार विचार करते-करते इस निर्णय के निकट पहुँचना कि यह तो ठूँठ ही होना चाहिए, यह ईहा मतिज्ञान कहलाता है।

ईहा ज्ञान संशय से प्रारम्भ होता है, किन्तु निर्णय की ओर झुकाव के साथ इसका समापन होता है। ईहा मतिज्ञान भी अर्थावग्रह के समान पाँचों इन्द्रियों तथा मन के द्वारा होने से छह प्रकार का होता है।

जिज्ञासा– 'अवाय' किसे कहते हैं?

समाधान– 'ईहा' के द्वारा सम्भावित की गयी वस्तु का निश्चय करना 'अवाय' कहलाता है। शब्द, रूप, रस, गन्ध एवं वर्ण के विषयों के वैकल्पिक चिन्तन से बाहर निकलकर इस प्रकार का निर्णय, निश्चय कर लेना कि 'यह ऐसा ही है' अवाय मतिज्ञान कहलाता है।

यह पुरुष नहीं, ठूँठ ही है। यह स्त्री की नहीं, पुरुष की ही आवाज़ है। इसका स्वाद तीखा नहीं, मीठा ही है। जल का स्पर्श उष्ण नहीं, ठण्डा ही है। यह गुलाब के फूल की नहीं, चमेली के फूल की ही गन्ध है, इस प्रकार का निर्णय कर लेना अवाय मतिज्ञान कहलाता है।

अवाय मतिज्ञान के भी अर्थावग्रह मतिज्ञान के समान छह भेद होते हैं।

जिज्ञासा– 'धारणा' किसे कहते हैं?

समाधान–अवाय के द्वारा निर्णय किये गये विषय को अल्प या अधिक समय तक मन में स्थिर रखना, हृदय में धारण करना, धारणा मतिज्ञान कहलाता है। अवाय द्वारा किये निर्णय को जब व्यक्ति मन में, मानस में स्थिर कर लेता है। बाद में वही वस्तु सामने आने पर वह तुरन्त धारणा मतिज्ञान के द्वारा यह निर्णय कर लेता है कि यह वही है, जो पहले देखी थी, सुनी थी, जानी गयी थी।

इसके भी ईहा, अवाय के समान छह भेद होते हैं।

धारणा मतिज्ञान संख्यात-असंख्यात काल तक भी रह सकता है। जिन जीवों की आयु संख्यात काल की होती है, उनमें संख्यात काल तक तथा जिनकी आयु असंख्यात काल (पल्योपम-सागरोपम) की होती है, उनमें असंख्यात काल तक भी धारणा मतिज्ञान रह सकता है।

धारणा मतिज्ञान एक भव में जीवन पर्यन्त रह सकता है तो अनेक भवों में भी लगातार रह सकता है। वासना, स्मृति, संस्कार के रूप में अनेक भवों तक धारणा मतिज्ञान जीवों में साथ रह सकता है, इन्हीं संस्कारों के प्रकट होने पर सन्नी जीवों को जाति स्मरण ज्ञान हो जाता है। इस ज्ञान से वे अपने लगातार हुए सन्नी के पिछले सैकड़ों भव जान-देख सकते हैं। **(क्रमशः)**

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

जिनवाणी पर अभिमत

जिनवाणी का 'जैन जीवनशैली' विशेषाङ्क पढ़ा। प्रधान सम्पादक ने जैन जीवनशैली पर एक अपूर्व एवं अद्भुत ग्रन्थरत्न जिनवाणी के पाठकों एवं समाज को प्रदान किया। जैन जीवनशैली के समग्र आयामों को प्रस्तुत करने वाला ऐसा ग्रन्थ हिन्दी में दूसरा देखने में नहीं आया। सन्तों एवं मनीषी विद्वानों के आलेख एक से एक बढ़कर हैं। आलेखों का चयन, उनका विद्वत्तापूर्ण सम्पादन एवं त्रुटि रहित प्रकाशन होने के साथ इस विषय का यह एक बृहद् ग्रन्थ है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। 'जिनवाणी' के माध्यम से जिनवाणी की जो प्रवचन प्रभावना की है, उसके लिए डॉ. साहब हमारे हृदय में 'जैनरत्न' के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्ती 'आचार' पर विशेष बल देते थे और यह विशेषाङ्क जीवनशैली के रूप में आचार का सुन्दर विवेचन करता है, अतः आचार्यश्री हस्ती दीक्षा शताब्दी पर उनको यह विशेषाङ्क सच्ची श्रद्धाञ्जलित है। डॉ. धर्मचन्दजी जैन का बहुत-बहुत अभिनन्दन एवं नमन। आशा है भविष्य में भी ऐसे ही उपयोगी विशेषांङ्क पाठकों को देते रहेंगे। *-सम्पतराज चौधरी, पूर्व कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल*

Do All The GOOD

Sh. Bhavya Dhinesh Jain

- Do all the good you can.
- In all the ways you can.
- In all the times you can.
- As long..... as you can.
- By all the means you can.
- At all the places you can.
- To all the people you can.

-17/729, Chopasni Housing Board, Jodhpur-342008 (Raj.)

युवा-स्तम्भ

आग्रहवृत्ति से बचें

श्री वीरेन्द्र कांकरिया

कुछ वर्ष पूर्व हमारे क्षेत्र में जैन सन्तों का एक सिंघाड़ा पधारा था। हम कुछ मित्र सायं प्रतिक्रमण पश्चात् प्रथम बार दर्शनार्थ गये। धर्मचर्चा और कुछ जिज्ञासाओं का समाधान पाने की भावना थी। सभी सन्तों को वन्दन कर एक नवदीक्षित सन्त की सेवा में बैठे। उनका प्रथम प्रश्न यह था कि वन्दना उल्टी क्यों कर रहे हो? (हाथ घुमाने की अपेक्षा), हम सन्न से रह गये। जितनी देर सेवा में बैठे, ऐसे प्रश्न पूछे गये-सामायिक लेते समय किसका काउसग्ग करते हो? ऐसा नहीं करना चाहिये, वैसा करना चाहिये। गुरुकृपा से हम शान्त रहे, पर जब बाहर आये तो हम सबकी जुबान में एक ही बात आयी-'यहाँ क्यों आयें?'

जब नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वालों को भी ऐसे प्रश्नों से आवेश आ सकता है, तो ऐसे प्रश्न अगर उनसे पूछा जाये जो नये-नये धर्म से जुड़ रहे हैं, तो क्या वे दुबारा धर्मस्थान में आयेंगे? आज की युवा पीढ़ी को धर्मस्थान में लाना कितना मुश्किल है, वे आये और यहाँ पर ऐसी खींचातानी होती देखे, तो क्या उनका मन दुबारा आने को करेगा?

हम धर्मस्थान, गुरु भगवन्तों के दर्शनार्थ क्यों जाते हैं? कषाय मुक्त होने के लिए, राग-द्वेष की मन्दता के लिए और शान्ति की अनुभूति के लिए ही न। फिर यहाँ आकर ही अगर राग-द्वेष बढ़े तो कहाँ कम होगा? क्यों हम जैनी वन्दना, काउसग्ग, संवत्सरी दिवस, प्रतिक्रमण के पाठों में ज्यादा उलझ जाते हैं? हम सभी अपने-अपने गुरुदेव अपनी-अपनी परम्परा के अनुसार ये सब करें, पर किसी दूसरों पर टीका-टिप्पणी नहीं करें। हम किसी की साधना का उपहास करते हैं तो इसका अर्थ यही है कि हमें हमारी साधना का अहंकार है। स्वयं को ऊँचा समझे बिना किसी दूसरे को नीचा नहीं समझा जा सकता। लघुता आये बिना प्रभुता नहीं आ सकती।

राग-द्वेष को मन्द करना ही वीतराग मार्ग है। इनको क्षय करके ही मोक्ष पाया जा सकता है और इस पर किसी संघ का, गच्छ का, पन्थ का एकाधिकार नहीं है। **परम्परा से मोक्ष नहीं होता, वीतरागता से मोक्ष होता है।** हम जिस किसी भी संघ से जुड़े हैं, वह संघ, वे आचार्य भगवन्त, हमारे अनन्त उपकारी हैं, परम हितैषी हैं। पर अपने संघ का राग, अपनी परम्परा का आग्रह कभी न रखें। **सम्प्रदाय सुन्दर व्यवस्था है, सम्प्रदायवाद घोर कट्टरता है।**

-द्वारा : श्री रिखबचन्दजी कांकरिया, 79 अडिप्पा नाइकन स्ट्रीट, साहूकार पेट, चेन्नई-600079

विषम परिस्थिति में अपनाने योग्य सूत्र

डॉ. समणी शशिप्रज्ञा

1. सर्वप्रथम अपने आत्मवीर्य पर अटूट विश्वास रखें। हर आत्मा अनन्त शक्ति सम्पन्न है-इस तथ्य की अनुभूति करें। **'अनन्तवीर्येभ्यो नमः'**- इस मन्त्र जप से आत्मवीर्य को जागृत करें।
2. मृत्यु के लिए कोई भी समय अनवसर नहीं हैं- आचाराङ्गसूत्र के इस वाक्य की स्मृति करें एवं संसार की नश्वरता का यथार्थ बोध करें।
3. सभी 84 लाख जीवयोनियों से खमतखामणा कर उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययनानुसार परम आह्लाद का अनुभव करें। जैसे ही सभी जीवों के प्रति मैत्रीभावना रखेंगे, सभी की शुभकामना परोक्ष रूप से आपको प्राप्त होगी।
4. अरिहंत-सिद्ध-आचार्य एवं केवली प्रज्ञप्त धर्म की शरण को स्वीकार कर सम्पूर्णतया निश्चिन्त हो जाएँ। अपनी जीवन की बागडोर को चतुःशरण में समर्पित कर आध्यात्मिक ऑक्सीजन से आयुष्य को शान्त भाव से भोगें।

-एसोसिएट प्रोफेसर, जैन दर्शन एवं तुलनात्मक तथा दर्शन विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

ISSN 2249-2011

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

श्री गौत्तमचन्द जैन

बेटी बनी वरदान-आगमज्ञाता श्री अरुणमुनिजी म.सा., **प्रकाशक एवं प्राप्ति**-रत्नत्रय प्रकाशन समिति, दिल्ली, पीपी 114, निकट गोपाल मन्दिर, पूर्वी प्रीतमपुरा दिल्ली, फोन 99111-77434, Website : www.gurusewakparivaar.org., Email : info@gurusewakparivaar.org. **अन्य प्राप्ति-स्थल**-कुशल जैन (गंगानगर) 9463961490, विनोद जैन (जीन्द) 9416190074, विनोद जैन (लुधियाना) 9814033180, दीपक जैन (नरवाना) 9034112000, राजेश जैन (पंचकुला) 9216640005, संजीव जैन गोल्डी (जालन्धर) 9417429000, नितिन जैन (दिल्ली) 9871416763, आशीष जैन (बड़ौत) 9837210341, मुकेश जैन (दिल्ली) 9911177434, जयभगवान (गन्नौर) 9896617368, वनीश जैन विक्की (भटिण्डा) 9872900022, संजीव जैन (चण्डीगढ़) 9876180117, **प्रथम संस्करण**-2020, **पृष्ठ**-256, **मूल्य**-50 रुपये।

प्रस्तुत रचना 'बेटी बनी वरदान' एक पारिवारिक उपन्यास है। इसमें एक ग्रामीण अशिक्षित परिवार में जन्मी इल्ली नामक बालिका प्रमुख पात्र है। इल्ली नामक बालिका के जीवन का सर्वाङ्गीण एवं सुन्दर चित्रण जीवन्त रूप में प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है। इल्ली की माता का देहान्त हो जाता है और पिता का व्यवहार भी उसके साथ अच्छा नहीं रहता है। वह पुत्र एवं पुत्री में भेद करता है तथा पुत्री को शिक्षा दिलाने में रुकावटें पैदा करता है। पुत्री जन्म से ही कुशाग्र बुद्धिसम्पन्ना है, वह कन्या और नारी के अपमान एवं उत्पीड़न को सहन नहीं करती है। गाँव के लोग भी उसका विरोध करते हैं। इल्ली एक समझदार, चरित्रवान एवं संस्कारवती बालिका है। परन्तु वह बालिकाओं एवं नारी पर होने वाले अत्याचारों को सहन नहीं करती है और उनका डटकर विरोध करती है। पंचायत के द्वारा भी इल्ली को धमकी दी जाती है, परन्तु वह अपने संकल्प पर दृढ़ रहती है और नारी को जागृत करने का प्रयास करती रहती है। उसके पिता भरत एक विधवा स्त्री से दूसरा विवाह कर लेते हैं जिसके रत्न नामक पुत्र भी साथ था। इल्ली की सौतेली माँ भी उसको कष्ट देती रहती है और कभी प्यार नहीं करती। इल्ली ने अपनी असाधारण क्षमता से विद्या अर्जित की और मेरिट में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वह ग्राम की अशिक्षित और पीड़ित महिलाओं की समय-समय पर मदद करती थी और उनके संकट को दूर करती थी।

इल्ली ने परिवार, समाज और वृद्ध जनों के भरसक विरोध के बावजूद नारी पर होने वाले अत्याचारों का विरोध किया और नारी-जाति को पुरुष के बराबर समानता के अधिकार होने का अहसास करवाया। महिलाओं को संगठित किया और उच्च शिक्षा प्राप्त कर जिला कलेक्टर का पद प्राप्त किया। इल्ली में मानवता और दुःखी जनों के प्रति करुणा तथा सहानुभूति के गुण कूट-कूटकर भरे हुए थे। इल्ली ने कलेक्टर बनने के बाद अपने पिता को अपना घर वापस दिलवाया और उनकी सेवा की तथा माता और छोटे भाई को भी मुसीबत से बचाकर अपने पिता से मिलवाया। इस प्रकार इल्ली नामक बेटी पिता के लिए वरदान बन गई, जो इस पुस्तक के नाम को सार्थक करती है।

इस रोचक उपन्यास में यह स्थापित किया गया है कि स्त्री को पुरुषों के बराबर समानता है और वह किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है। स्त्री को अपने प्रति होने वाले अन्याय एवं अत्याचार का डटकर मुकाबला करना चाहिये, परन्तु उसको स्वच्छन्द नहीं होना चाहिये। जैनधर्म में तो स्त्री को मोक्ष प्राप्ति के लिए भी योग्य बताया गया है।

उपन्यास की भाषा सरल, सुबोध एवं रुचिकर है। कथानक की घटनाओं में निरन्तरता एवं प्रवाह है।

उपन्यास को विभिन्न शीर्षकों से अध्यायों में विभक्त किया गया है और स्थान-स्थान पर प्रसङ्गानुसार कविताओं की भी रचना कर प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास सभी स्त्री और पुरुषों के लिए पठनीय एवं मानसिकता बदलने वाला है।

सरस्वती-आगमज्ञाता श्री अरुणमुनि, **सम्पादक**-संजीव जैन, **प्रकाशक एवं प्राप्ति**-रत्नत्रय प्रकाशन समिति, दिल्ली, 424, चौथी मञ्जिल, डी-माल, ट्विन डिस्ट्रिक सेन्टर, सेक्टर-10, रोहिणी, नईदिल्ली-85, फोन 011-27932228, 8800779013, Website : www. gurusewakparivaar.org., Email : info@gurusewakparivaar.org **अन्य प्राप्ति-स्थल**-पूर्व पृष्ठ पर वर्णित अनुसार, **द्वितीय संस्करण**-2020, **पृष्ठ**-208, **मूल्य**-50 रुपये।

'सरस्वती' भी एक पारिवारिक उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में सरस्वती एक बूढ़ी औरत है जो धनाढ्य महिला है, परन्तु उसके पति, पुत्र-पौत्र एवं बहुएँ उसकी सार-सम्भाल नहीं करती हैं, अपितु उसके साथ दुर्व्यवहार करती हैं और उसके रहने तथा खाने-पीने की भी सही तरह से व्यवस्था नहीं करती हैं। परिवार में सभी सदस्य उससे बात करना और उसके पास जाना तक पसन्द नहीं करते हैं। परन्तु सारी सम्पत्ति सरस्वती के स्वयं के नाम पर होने का जब उसे पता चलता है तो वह समझदारी और व्यावहारिकता से काम लेती है और सतर्क हो जाती है। परिवार के सदस्य उससे वसीयत लिखवाकर सारी सम्पत्ति अपने नाम करवाना चाहते हैं, पर सरस्वती वसीयत के कागजों पर हस्ताक्षर नहीं करती है। फलस्वरूप उसका पौत्र सरस्वती का अपहरण करवा देता है और किसी अन्य मृत महिला को अपनी दादी (सरस्वती) बताकर अन्तिम संस्कार करवा देता है। सरस्वती अपहरण होने पर सागारी संथारा ग्रहण कर लेती है और नवकार महामन्त्र का स्मरण करती रहती है। दस दिन के बाद उसका संकट दूर हो जाता है। तब वह अपनी सम्पत्ति बेचकर अपनी पुत्री शकुन्तला के सहयोग से वृद्धाश्रम स्थापित करती है। वृद्धाश्रम में वह वृद्ध स्त्री-पुरुषों की देखभाल करती है और संसार से विरक्त होकर स्वयं आत्म-साधना करती है। कुछ समय के पश्चात् उसके दोनों पुत्र एवं पौत्र की भी दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। एक पुत्रवधू जैनिका जीवित रह जाती है जिसको भी वह आश्रम में ले आती है। बाद में अन्तिम समय में सरस्वती ध्यान-साधना करते हुए समाधिमरण को प्राप्त करती है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक मुनिराज ने सभी पात्रों का सजीव चित्रण किया है और कथानक का प्रवाह इतना सरस और सुन्दर है कि उपन्यास को बीच में छोड़ने का पाठक का मन ही नहीं करता। लेखक मुनिराज ने वर्तमान में परिवार के सदस्यों की मनोभावना एवं वृद्ध पुरुषों की स्थिति का वास्तविक हृदयग्राही चित्रण प्रस्तुत किया है। लोग धन को ही साध्य अथवा लक्ष्य मानकर उसके पीछे भाग रहे हैं जबकि धन साधन है, साध्य नहीं। कर्म-सिद्धान्त का भी बड़ा सुन्दर चित्रण किया गया है। सरस्वती मुख्य पात्र के माध्यम से कर्म-सिद्धान्त की बड़ी मार्मिक बातों को सरल शब्दों में समझाया गया है जिनको स्वीकार कर पालन करने से व्यक्ति को शान्ति और समता प्राप्त होती है, जिससे वह विपरीत परिस्थितियों अथवा दुःखों को अपने पूर्व कर्मों का फल मानकर समभाव से सहन करता है और कर्मों की निर्जरा करता है तथा नये कर्मों का बन्ध नहीं करता है। इस प्रकार से वह विपरीत परिस्थितियों में भी सुखी और आनन्दित रहता है।

प्रस्तुत उपन्यास को 10 अध्यायों में विभाजित किया गया है। उपन्यास की शैली रोचक, सरस और सुगम है। यह उपन्यास वर्तमान पीढ़ी के युवक-युवतियों एवं वृद्ध स्त्री-पुरुषों सभी के द्वारा पठनीय और मननीय है तथा वृद्ध-पुरुष और वृद्ध-स्त्रियों की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने वाला है।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 65
ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

कोरोना के संकटकाल में भी सभी चातुर्मासों में उपलब्धिपूर्ण रही धर्माराधना, ज्ञानाराधना एवं तपाराधना

इस वर्ष रत्नसंघ के विभिन्न 23 स्थानों पर चातुर्मास हुए। कोरोना संकट-काल में सरकारी प्रतिबन्धों एवं नियमों का पालन करते हुए श्रावक-श्राविकाओं ने धर्माराधना का लाभ लिया। घर पर रहते हुए भी स्वाध्याय-सामायिक एवं व्रत-प्रत्याख्यानों के साथ उपवास, आयम्बिल, एकाशन एवं दीर्घ तपस्याएँ सम्पन्न की गई। श्रद्धालुओं ने पारस्परिक दूरी एवं मास्क का प्रयोग करते हुए चातुर्मास स्थलों में साधु-साध्वियों के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति की तथा व्रत-नियम अङ्गीकार किए। नियमित प्रवचन एवं सामूहिक धर्माराधना के कार्यक्रम स्थगित रखे गए। फिर भी जहाँ पर कोरोना का प्रभाव कम रहा, उन प्रान्तों एवं नगरों में श्रावक-श्राविकाएँ नियमों का पालन करते हुए धर्मस्थान में पहुँचे। प्रतिवर्ष चातुर्मास में जो विभिन्न ग्राम-नगरों से श्रद्धालुओं का आगमन होता था वह इस वर्ष नगण्य रहा। स्थानीय स्तर पर श्रावक-श्राविकाओं ने इस काल का उपयोग ज्ञानवर्धन एवं आत्मसाधना में करके समय का सदुपयोग किया। अनेक जैन परिवारों में कोरोना रोग के संक्रमण के कारण मृत्यु के दुःखद समाचार भी प्राप्त होते रहे तो कहीं सम्पूर्ण परिवार या परिवार के सदस्यों के इस रोग से संक्रमित होने के कारण उनकी जीवनचर्या अस्त-व्यस्त हो गई। साधु-साध्वियों को भी ऐसे परिवारों में भिक्षा के लिए जाने में बाधा उत्पन्न हुई। कई श्रावक-श्राविका चाहते हुए भी गोचरी के लाभ से वञ्चित रहे। एकाध चातुर्मास स्थलों पर सन्त-सतियों को भी इस रोग का सामना करना पड़ा। इन सब परिस्थितियों के बावजूद धर्माराधना का क्रम बना रहा। चातुर्मास सम्पन्न होने के पश्चात् अब जहाँ विहार सम्भावित थे वहाँ सर्वत्र विहार चल रहे हैं।

पूज्य आचार्यप्रवर, सन्तप्रवरों एवं महासती मण्डल के चातुर्मासों के कतिपय समाचार

कोसाणा- रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग एवं व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा का छोटे से ग्राम कोसाणा में चातुर्मास सम्पन्न हुआ, किन्तु उपलब्धियाँ एक बड़े कस्बे की भाँति रही। यहाँ 12 बेले, 67 तेले, 5 चोले, 9 पचोले, 3 छह की तपस्या, 12 अठाई, 10 नौ की तपस्या, 3 ग्यारह की तपस्या, 2 मासक्षपण, एक छत्तीस की तपस्या आदि के साथ उपवास की लड़ी भी चली। **पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 58वें दीक्षा दिवस** पर 9 से 20 नवम्बर तक 11 + 1 उपवास से सिद्धितप किया गया। श्रीमती बिन्दुजी मेहता की चातुर्मासोपरान्त भी तपस्या चल रही है। उन्होंने 88 में 5 मिलाकर पूज्य आचार्य भगवन्त के **मुखारविन्द से 93 उपवास** के लिए प्रत्याख्यान किए हैं। श्री मोहनजी पोरवाल सवाईमाधोपुर ने 36 की तपस्या, मंजूदेवीजी बाघमार (धर्मसहायिका श्री अनोपचन्दजी बाघमार, मन्त्री) एवं युवारत्न श्री हर्षितजी कोठारी ने मासक्षपण की तपस्या की। आयम्बिल ओली के प्रसङ्ग पर निरन्तर आयम्बिल तपाराधना सम्पन्न हुई। श्रावक-श्राविकाओं, बालकों एवं बालिकाओं द्वारा भिक्षुदया सम्पन्न की गई।

कुछ श्रावकों ने सपत्नीक **आजीवन शीलव्रत** अङ्गीकार कर किया-1. श्री आर. पदमचन्दजी बाघमार, संयोजक, 2. श्री आर. शान्तिलालजी बाघमार, 3. श्री अनोपचन्दजी बाघमार-मन्त्री, 4. श्री जी. राजेन्द्र कुमारजी

बाघमार तथा श्री डी. राजेश कुमारजी बोहरा।

जोधपुर, अरटिया कला, गोटन, पीपाड़ आदि ग्राम-नगरों से आकर अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से विभिन्न तपस्याओं के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी के अवसर पर प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर सविधि करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई। श्री राजेन्द्रजी बाघमार, श्री हर्षितजी कोठारी-निमाज, श्री सन्दीपजी बाघमार, श्री विमलजी बोहरा, श्री पवनजी बोहरा ने प्रतिक्रमण सीखा। बालवर्ग में **श्री एल. सम्राट् बाघमार ने 11 वर्ष की वय में प्रतिक्रमण के साथ 25 बोल, वीरस्तुति, दशवैकालिकसूत्र के चार अध्ययन भी कण्ठस्थ किए।** विधि सहित प्रतिक्रमण करने वाले अन्य बालकों में श्री विनीत बाघमार (13 वर्ष), हितांश बोहरा वीरसुपौत्र (10 वर्ष), लक्ष्य पोखरणा (10 वर्ष), सुश्री कल्पना बाघमार (10 वर्ष), श्री यशवीर बाघमार (7 वर्ष) सम्मिलित रहे।

चातुर्मास काल में कोसाणा में रहकर अनेक परिवारों ने पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि का लाभ लिया। इसमें गुरुभक्त श्री भागचन्दजी-श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर एवं श्री पदमचन्दजी महावीरजी कोठारी-निमाज ने पूरे पाँच माह लाभ लिया। श्री प्रकाशचन्दजी ओस्तवाल चेन्नई, श्री सुभाषचन्दजी धोका मैसूर, श्री सुनील कुमार अनिल कुमारजी नाहटा बंगारपेट, श्री आर. मदनलालजी सुनीलकुमारजी बाघमार, श्री आर. पदमचन्दजी ललीतकुमारजी बाघमार, श्री आर. शान्तीलालजी प्रशान्तकुमारजी बाघमार, श्री एम. धर्मचन्दजी हंसराजजी, अशोकजी बाघमार, श्री एम. अनोपचन्दजी, पंकजकुमारजी, संदीपजी बाघमार, श्री जी. गणपतराजजी, उपेन्द्रजी बाघमार, श्री दुलीचन्दजी ललितकुमारजी, अरुणजी, सुनीलजी बाघमार, श्री जी. राजेन्द्रकुमारजी बाघमार, श्री प्रेमचन्दजी बाघमार, श्री जी. दिनेशकुमारजी बाघमार, श्री आर. उत्तम चन्दजी, ज्ञानेन्द्रजी, जितेन्द्रजी बाघमार, श्री पी. रमेशचन्दजी, विमलचन्दजी बाघमार, श्री सी. सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतजी बाघमार, श्री ए. नवरतन जी बाघमार, श्री ए. गौतमचन्दजी, राकेशजी बाघमार, श्री नथमलजी बाघमार, श्री जे. राजेशकुमारजी बाघमार, श्री एस. गणपतराजजी बाघमार, श्री पी. राजेशकुमारजी सम्पतराजजी बाघमार, श्री बी. बुधमलजी बोहरा, श्री डी. राजेश जी. विमलजी, पवनजी बोहरा, श्री पन्नालालजी, माणिकचन्दजी ओस्तवाल, श्री आर. महावीरचन्दजी बाघमार आदि ने अपनी महती सेवाएँ देकर धर्मसाधना का लाभ लिया। 29 नवम्बर को पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा कृपा पूर्वक चातुर्मास करने हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की गयी, जिसमें विभिन्न श्रावकों ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये। संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री बी. बुधमलजी बोहरा सहित चातुर्मास संयोजक, मन्त्री, अध्यक्ष आदि के द्वारा अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किये गये।

पूज्य आचार्यप्रवर सन्तमण्डल सहित यहाँ से विहार करके छोटी-छोटी ढाणियों एवं ग्रामों को फरसते हुए 9 दिसम्बर को पीपाड़ पधारे हैं। मार्गस्थ शय्यातरों में श्री भैरूरामजी टांक (माली), श्री विष्णुदत्तजी राजपुरोहित, श्री गोमणरामजी माली, श्री राणारामजी कच्छवाह ने गुरुदक्षिणा में श्रद्धा सिक्त होकर **आजीवन सदारशीलव्रत का नियम** ग्रहण किया तथा सेवा धर्म के पालन का भी संकल्प लिया। आचार्यप्रवर पीपाड़ा में सुखा-साता पूर्वक विराज रहे हैं।

-गिरीश जैन

सवाईमाधोपुर- मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा का सवाईमाधोपुर चातुर्मास कोरोना काल में भी श्रावक-श्राविकाओं के लिए अत्यन्त लाभप्रद रहा। धर्माराधना, ज्ञानाराधना तथा तपाराधना की दृष्टि से सभी अग्रसर रहे। प्रत्येक रविवार को युवक-युवतियों की प्रातःकालीन कक्षा **'आओ चलें जिनशासन की ओर'** में विविध विषयों पर सन्तों का मार्मिक उद्बोधन हुआ। प्रातः 9 से 10 बजे तक आगम विवेचन में श्रद्धालुओं की उपलब्धि एवं जानने की उत्सुकता और एकाग्रता अपने आप में एक मिसाल रही। छोटे-छोटे बच्चों की माताओं का

4 से 8 अक्टूबर तक पाँच दिवसीय शिविर रखा गया, जिसमें लगभग 140 से 150 बहुओं ने तात्त्विक जानकारी प्राप्त की। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने आह्वान किया कि आज कैरियर एवं पैकेज की सोच बनी हुई है, किन्तु याद रखना केवल शिक्षा पर ही ध्यान केन्द्रित न करें, संस्कारों का सृजन भी करें क्योंकि संस्कारों की कमी पैसों से पूरी नहीं हो सकती। इस कड़ी में 6 अक्टूबर को युवाओं के लिए एक दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर रखा गया, जिसमें नवतत्त्वों का संक्षिप्त एवं सारगर्भित अध्ययन कराया गया। इसमें लगभग 150 युवकों ने भाग लिया। इसी क्रम में 8वीं कक्षा से ऊपर की बालिकाओं का छह दिवसीय शिविर 31 अक्टूबर से 5 नवम्बर तक रखा गया। बालिकाओं के लिए यह शिविर ज्ञान-सम्वर्धन एवं भविष्य निर्माण की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी रहा। भगवान महावीर के निर्वाण कल्याण दिवस पर तेले, बेले, उपवास, एकाशन के साथ-साथ अठाई तप भी सम्पन्न हुए। संघनायक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पावन दीक्षा दिवस पर सन्तों ने श्रद्धा भक्ति के साथ आचार्यप्रवर की अनेक विशेषताओं की चर्चा कर लोगों की श्रद्धा को जीवन्त कर दिया। इस अवसर पर सम्पूर्ण पोरवाल क्षेत्र एवं नगर परिषद् क्षेत्र में अनगिनत एकाशन एवं 5-5 सामायिक की साधना की गई। स्थानक भवन बड़ा होने से पारस्परिक दूरी के नियम की पालन में कोई कठिनाई नहीं हुई। *-मुकेश जैन (करेला वाले), मन्त्री*

सूरत- सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 की सन्निधि में जिज्ञासा सत्र का आयोजन हुआ जिसमें 750 प्रश्नों का आगमानुसार सरल भाषा में समाधान प्रदान किया गया। **पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 58वें दीक्षा दिवस** पर लगभग 75 एकाशन के तेले हुए तथा सन्त मण्डल एवं श्रावक-श्राविकाओं ने गुरुदेव के प्रति श्रद्धा-भक्ति के साथ अपने भाव प्रस्तुत किए। 20 नवम्बर को 30 एकाशन अलग से हुए। यह चातुर्मास सूरतवासियों के लिए उपलब्धिपूर्ण रहा। अत: 29 नवम्बर को आयोजित बधाई दिवस पर लगभग 150 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही अपने भाव अभिव्यक्त किए। इस दिन 15 पौषध संवर भी हुए। सन्तों के कुल 6 माह के सान्निध्य में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने सेवा का विशेष लाभ लिया, जिनमें श्री विपुलजी ढाबरिया, राजीवजी नाहर, निहालचन्दजी नाहर, सुरेशजी चौपड़ा, गौरवजी डोसी, शान्तिलालजी बाफना, महावीरजी बाफना, राजेशजी तातेड़, श्री सुनीलजी गाँधी आदि का नाम उल्लेखनीय है। स्थानक में प्रतिदिन स्वाध्याय की अलख जगाने का बीड़ा श्री अनिल विमलजी ढाबरिया, शान्तिलालजी बाफना, राजीवजी नाहर, कपिलजी जैन, सुशीलजी गोलेछा, पदमजी चोरड़िया, भागचन्दजी छाजेड़, महावीरजी बाफना ने स्वीकार किया। स्वाध्याय-सम्बन्धी सेवा करने वाले चिकित्सकों का स्वागत सम्मान किया गया। एक दिसम्बर को विहार में लगभग 175 श्रावक-श्राविकाओं ने जय महावीर, जय गुरु हस्ती हीरा मान के उद्घोष के साथ स्व. श्रीमती विजयकँवर नाहर स्वाध्याय भवन तक साथ दिया। सन्त मण्डल के स्वास्थ्य में चातुर्मास काल में समाधि रही।

-सुनील कुमार नाहर, मन्त्री

जयपुर- तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3, **साध्वी प्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.** आदि ठाणा-9, **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.** आदि ठाणा-9, **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा-3, **व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.** आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में महावीर नगर, महारानी फार्म, नित्यानन्द नगर, मालवीयनगर में ज्ञानाराधना, तपाराधना एवं धर्माराधन के साथ चातुर्मास सुसम्पन्न हो गए। **पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 58वें दीक्षा दिवस पर जयपुर में लगभग 1100 एकाशन तप** सम्पन्न हुए एवं सामायिक साधना सम्पन्न हुई। पाँचों चातुर्मासों में सहस्राधिक उपवास, 24 बेले, 75 तेले, 20 चोले-पचोले, 40 अठाई, 11 नौ के उपवास, 9 ग्यारह के

उपवास, 15 दिवसीय उपवास, दो मासक्षपण के तथा प्रतर तप सम्पन्न हुए। अनेकों पौषध एवं संवर हुए। कई श्रावक-श्राविकाओं ने सजोड़े शीलव्रत अङ्गीकार किये। बालक-बालिकाओं ने श्रावक-श्राविकाओं ने सरकारी नियमों का पालन करते हुए सामायिक-प्रतिक्रमण, 25 बोल तथा थोकड़े कण्ठस्थ किये।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 1 दिसम्बर को विहार कर श्रीजीनगर पधारे, यहाँ से प्रतापनगर, एन.आर.आई. कॉलोनी, एस.एफ.एस. मानसरोवर, राधा-निकुञ्ज, मानसरोवर होते हुए महारानी फार्म पधारे। यहाँ पर विराजित साध्वी प्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. के साध्वी मण्डल ने अध्ययन का लाभ लिया। इसके अनन्तर बापूनगर, आदर्श नगर, सेठी कॉलोनी, राजापार्क होते हुए 20 दिसम्बर को लाल भवन चौड़ा रास्ता पधारे। 25 से 27 दिसम्बर तक यू-टर्न धार्मिक शिविर आयोजित हुआ। व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 का दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में महारानी फार्म साध्वीप्रमुखाजी की सेवा में पदार्पण हो गया।

-सुरेशचन्द कोठारी, मन्त्री

जोधपुर- व्याख्यानी श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में घर पर रहते हुए श्रावक-श्राविकाओं ने स्वाध्याय-सामायिक एवं तपस्या का लाभ लिया। यथोचित समय पर सन्तों के दर्शन-वन्दन एवं ज्ञानाराधन का लाभ भी लिया। पर्युषण पर्व के अवसर पर अठाई एवं तेले की तपस्याएँ हुई। श्राविका रत्न श्रीमती सन्तोषजी धर्मसहायिका श्री बहादुरमलजी डोसी ने 71 दिवसीय तपस्या सम्पन्न की। प्रतिक्रमण तथा आवश्यक सूत्र सीखने में श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरणा की जा रही है। इसमें यहाँ से 125 श्रावक-श्राविका भाग ले रहे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा के दिग्विजय नगर चातुर्मास में नौ, आठ की अनेक तपस्याओं के साथ 25 तेले, 5 एकान्तर उपवास, 4 एकाशन के मासखमण सम्पन्न हुए। श्री महेन्द्रकुमारजी-उषाजी सिंघवी ने शीलव्रत अङ्गीकार किया।

-नवरतन गिड़िया, मन्त्री

अयनावरम्- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा-10 के चातुर्मास प्रवेश के पश्चात् 18 से 20 जुलाई तक एकाशन के 80 तेले सम्पन्न हुए तथा चातुर्मासिक पर्व के दिन लगभग 1100 सामायिकें हुई। चातुर्मास में आयम्बिल की लड़ी निरन्तर चली तथा एकान्तर एकाशन एवं चन्द्रकला तप भी सम्पन्न हुए। बालक-बालिकाओं के पृथक्-पृथक् शिविर आयोजित हुए। पर्युषण पर्व में अन्तगडदसासूत्र का वाचन हुआ तथा आठों दिन प्रात: 6 से शाम 6 बजे तक नवकार मन्त्र का जाप रखा गया, जिसे लोगों ने अपने-अपने घरों में सम्पन्न किया। प्रतिक्रमण भी अपने ही घरों पर किये। संत्सवरी एवं कार्तिक चातुर्मासिक को अनेक पौषध हुए। चातुर्मास में 15 दिन की दो तपस्याएँ श्री रिखबचन्दजी बाघमार एवं श्रीमती गंगाबाईजी कर्णावट द्वारा की गयी। इसके साथ ही 12, 9,8, 4, 3 आदि की अनेक तपस्याएँ पूर्ण हुई। आयम्बिल एकाशन आदि भी खूब हुए। प्रतिदिन प्रात: पूज्या महासतीजी द्वारा प्रेरक विषयों पर उद्बोधन दिया गया। प्रात: 9 से 10 बजे तक आगम वाचनी हुई तथा दोपहर में 2 से 3.30 बजे तक धर्म चर्चा में 12 व्रतों का स्वरूप समझाया गया। रात्रि में श्राविकाओं द्वारा संवर साधना की गयी। दीपावली पर उत्तराध्ययनसूत्र का वाचन हुआ। लघुदण्डक, कर्मप्रकृति, पाँच समिति-तीन गुप्ति, उपयोग, संज्ञा, रूपी-अरूपी आदि थोकड़े सिखाये गये। 'सम्यग्दर्शन का स्वरूप' विषय पर आयोजित शिविर में 30 श्राविकाओं ने भाग लिया। आवश्यकसूत्र की परीक्षा भी ली गयी। प्रत्येक रविवार को युवक-युवतियों के लिए विशेष धार्मिक उद्बोधन की कक्षा रखी गयी। ज्ञानाराधन की दृष्टि से अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने कर्मग्रन्थ, पंचसंग्रह, उत्तराध्ययनसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, सुखविपाक, 25 बोल, पुच्छिसु णं, प्रतिक्रमण, भक्तामरस्तोत्र आदि का अध्ययन किया। पाँच वर्ष की वय में रूबी तलेसरा ने सामायिकसूत्र कण्ठस्थ किया तथा 13 वर्ष की लिशा रांका ने सामायिकसूत्र, प्रतिक्रमण, 25 बोल, पुच्छिसु णं, 15 थोकड़े एवं दशवैकालिकसूत्र के चार अध्ययन कण्ठस्थ किये। पूज्य

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 58वें दीक्षादिवस पर लगभग 240 एकाशन तप हुए। 22 नवम्बर को 40 वर्ष की वय से ऊपर के श्रावक-श्राविकाओं के एक दिवसीय शिविर में ओल्ड-ईज-गोल्ड विषय पर प्रवचन करते हुए जीवन के अन्तिम समय को सुधारने की प्रेरणा की गई। 25 नवम्बर को गोशालाक चरित्र का वाचन किया गया जिसको सबने तपस्या के साथ श्रवण किया। चातुर्मास में नवयुवक मण्डल की सेवाएँ सराहनीय रहीं। श्री ज्ञानचन्दजी रांका, महावीरजी बांठिया, सम्पतराजजी दुगड़ का पूरा सहयोग रहा। लगभग चार माह 3 ठाणा से चिंतादरीपेठ क्षेत्र को भी लाभ मिला। विषम परिस्थितियों में भी संघ ने चातुर्मास का पूरा लाभ लिया। *-सुभाषचन्द छाजेड़, मन्त्री*

चामराजपेठ-बेंगलोर- व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा-5 का चातुर्मास मंगलमय रहा। नपीतुली भाषा में मधुर स्वभाव से सम्पन्न महासती जी का ज्ञानार्जन एवं ज्ञानचर्चा में विशेष लक्ष्य रहा। आपके व्यक्तित्व से और साधना से सभी लोग प्रभावित रहे। पाँच महीने उपवास, एकाशन एवं आयम्बिल की बहुत बार लड़ियाँ चलती रहीं। अनेक छोटे-बड़े प्रत्याख्यान होते रहे। महासतीजी का पुरुषार्थ प्रेरणाप्रद रहा है। हर दर्शनार्थी को संक्षेप में जिनवाणी का अमृतवाक् प्राप्त हुआ। चेन्नई, हैदराबाद, तमिलनाडु एवं कर्नाटक के कई क्षेत्रों से कोरोना में भी पदार्पण हुआ एवं उन्होंने नियमों का पालन करते हुए ज्ञान-ध्यान का लाभ लिया। स्थानीय श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक मण्डल, बाल मण्डल, बहू-मण्डल आदि ने दर्शन एवं सेवा का लाभ लेते हुए आध्यात्मिक विकास किया। यहाँ पर 13, 9, अठाई, 7, 4 आदि की अनेक तपस्याओं के साथ 72 तेले, 150 बेले एवं 4 पचोले सम्पन्न हुए। पर्युषण पर्व के समय अनेक छोटे-छोटे नियम सैंकड़ों लोगों ने स्वीकार किये। 500 आयम्बिल चार जनों के सम्पन्न हुए तथा 250 व्यक्तियों के एकान्तर वर्षीतप चल रहा है, कइयों के 20 विहरमान की नींवी की ओली चालू है। वर्धमान नींवी की ओली भी चल रही है। पर्युषण के अतिरिक्त 108 बेले-तेले चार बार सम्पन्न हुए हैं। एकाशन के 60 मासखमण हुए तथा एकाशन का वर्षीतप चार जनों के चल रहा है। बियासन के मासखमण 80 जनों के सम्पन्न हुए हैं। एकान्तर आयम्बिल का वर्षीतप भी चल रहा है। दो युगलों ने आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया है। नवपद की ओली 240 जनों ने पूर्ण की। चातुर्मास में फुटकर आयम्बिल, उपवास, नींवी, बियासना तप, अनेक सम्पन्न हुए। दो व्यक्तियों ने उत्तराध्ययनसूत्र पूर्ण कण्ठस्थ किया है तथा दो पूर्णता की ओर अग्रसर हैं। साथ ही उत्तराध्ययनसूत्र, सुखविपाकसूत्र, दशवैकालिक, पुच्छिसु णं, 25 बोल, जीवधड़ा, गमा आदि कइयों ने कण्ठस्थ किये हैं। अनेकों ने एक घण्टा जाप एवं स्वाध्याय पूरे चातुर्मास में किया है। कइयों ने 15 सामायिक एवं उससे कम 11, 9, 7, 5 नियमित रूप से सम्पन्न की है। संघ की सुन्दरतम व्यवस्था के कारण दर्शन, प्रत्याख्यान, धर्म प्रेरणा के साथ अध्ययन करने के लिए महासती मण्डल के द्वारा पाठ याद करने हेतु दिये गये। 11 से 20 अक्टूबर तक प्रवचन हुए। **पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दीक्षा दिवस** पर अनेक उदाहरणों के साथ गुणानुवाद किया गया। इन दस दिनों में 108 बेले या तेले हुए तथा 1100 से अधिक उपवास एवं अनेक विध तप हुए। दीपावली तक 216 जनों ने 108 बार पुच्छिसु णं का घर में स्वाध्याय किया तथा 108 जनों ने 108 लोगस्स नमोत्थु णं का जाप घरों में किया। आसोज शुक्ला चतुर्दशी एवं पूनम को लगभग 350 लोगों ने उपवास या 15-15 सामायिक की साधना की। हर पक्खी एवं चौदस को सैंकड़ों ने घरों में उपवास, संवर, पौषध किए। ब्रह्मचर्य की मर्यादाएँ की गयी। चामराजपेठ के 1100 घरों में धर्म-ध्यान का ठाट रहा। समय-समय पर थोड़े-थोड़े दर्शनार्थियों को दर्शन-वन्दन हेतु कतारबद्ध होकर जाने की अनुमति प्रदान की गयी।

चातुर्मास के पश्चात् 2 दिसम्बर को व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती म.सा. आदि ठाणा-5 एवं व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-6 का राजाजी नगर के स्वाध्याय भवन में मधुर मिलन हुआ, जिसे देखकर सभी गद्‌गद् हो गये। *-शान्तिलाल समदड़िया, अध्यक्ष*

राजाजी नगर-बेंगलोर- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-6 का यह चातुर्मास कोरोना में सवाया रहा है। 10 अक्टूबर को आयोजित 21 थोकड़ों की परीक्षा में 30 श्राविकाओं ने भाग लिया, जिसमें श्रीमती पूजाजी गुंदेचा प्रथम रही। पुनः 21 थोकड़ों की परीक्षा में श्रीमती कविताजी भण्डारी प्रथम रहीं। दोनों बार की तैयारी

में महासतीवृन्द का पुरुषार्थ एवं मार्गदर्शन अद्वितीय रहा। कोरोना काल के कारण यह चातुर्मास अत्यन्त सादगी एवं आत्म साधना-आराधना से सम्पन्न रहा। संघ के नियमों एवं सरकारी निर्देशों के अनुसार ज्ञानाराधन, तपाराधन हुए। एक गुप्त जन ने सजोड़े श्री जगदीशमलजी गुंदेचा रामपुरम् ने सजोड़े शीलव्रत अंगीकार कर संथारा ग्रहण किया। पर्युषण एवं चातुर्मास काल में 300 एकाशन, 500 आयम्बिल, सैकड़ों उपवास, 15तेले, 2 अठाई तप, 9 की 1 तपस्या, 5 जनों द्वारा वर्षीतप, 5 आयम्बिल मासखमण, 15 एकाशन मासखमण तथा दीपावली पर 15 तेले की तपस्याएँ सम्पन्न हुई। सप्तकुव्यसनों का त्याग अनेक जनों ने किया। महासती मण्डल ने तत्त्वार्थसूत्र को अर्थसहित पढ़ा, सीखा एवं स्वाध्याय किया आचाराङ्गसूत्र, पण्णवणासूत्र के साथ जैनधर्म के मौलिक इतिहास के प्रथम भाग का भी स्वाध्याय किया। 11 भाई-बहिनों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ तथा 25 बोल, कल्याणमन्दिर, आचाराङ्गसूत्र, वीरस्तुति अनेक भाई-बहिनों ने सीखे। दीपावली के निर्वाण दिवस पर उत्तराध्ययनसूत्र का स्वाध्याय हुआ तथा महासतीवृन्द ने यहाँ बेला-तेला, पचोले, अठाई तप आदि व एकाशन तप की लम्बी साधना की। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दीक्षा दिवस एवं पूज्य गुरु गणेश जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 20 नवम्बर को 246 जनों ने एकाशन तप किया। महासतीवृन्द के होली चातुर्मास 2019 के पश्चात् से बेंगलुरू प्रवेश तक 25 जनों ने सजोड़े एवं 37 जनों व्यक्तिगत रूप से विहार-सेवा का लाभ लिया। लोंकाशाह जयन्ती पर संघ को विभिन्न प्रकल्प में सेवा देने वालों का सम्मान किया गया। *-गौतमचन्द ओस्तवाल, मन्त्री*

हिण्डौनसिटी- व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 के चातुर्मास में जैनधर्म का मौलिक इतिहास से सम्बद्ध 'जैन इतिहास के प्रसङ्ग' पुस्तक के भाग-1 से 40 पर आयोजित परीक्षा में 50 भाई-बहिनों ने भाग लिया। चार आजीवन शीलव्रत के खन्द हुए। बालिकाओं एवं श्राविकाओं ने दो बार भिक्षुदया की साधना की। राज्य सरकार के नियमानुसार 4 अक्टूबर से 2 माह प्रवचन हुए। अनेक भाई-बहिनों ने सामायिक-प्रतिक्रमण सीखा तथा 20 जनों ने प्रतिक्रमण पूर्ण किया। 10 वर्षीय बालिका मोनी सुपुत्र श्री शैलेशजी जैन ने 20 दिनों में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया। अनेक भाई-बहिनों ने आयम्बिल तप किये। वीर निर्वाण पर्व के अवसर पर उत्तराध्ययनसूत्र का वाचन तथा पुच्छिसु णं का 108 बार अर्थ सहित स्वाध्याय किया गया। **पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 58वाँ दीक्षा दिवस** मनाते हुए एक वर्ष के लिए ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तप सम्बन्धी नियम ग्रहण किये गए। इनमें कल्याणमन्दिर, 58 थोकड़े, पाँच आगमों की अर्थ सहित वाचनी, 5800 गाथाओं का स्वाध्याय, सामायिक-प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करना, प्रतिदिन हस्ती-हीरा-मान चालीसा का पठन आदि 19 प्रकार के नियम 900 की संख्या में हुए। 37 श्रावक-श्राविकाओं ने लघु सवर्तोभद्र तप पूर्ण किया तथा 36 जनों ने 20 नवम्बर को तेले की तपस्या सम्पन्न की। त्रिदिवसीय साधना के साथ एक क्विज प्रतियोगिता भी रखी गयी। *-श्रेयांस जैन*

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित चतुर्थ निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा आचार्य हस्ती शताब्दी वर्ष एवं स्वाध्याय संघ के हीरक जयन्ती वर्ष पर द्वितीय निबन्ध प्रतियोगिता **'आत्मशुद्धि का साधन : प्रतिक्रमण'** विषय पर आयोजित की गई, जिसमें जोधपुर क्षेत्र से 7, महाराष्ट्र क्षेत्र से 13, जयपुर क्षेत्र से 7, पोरवाल क्षेत्र से 11, पल्लीवाल क्षेत्र से 2, मारवाड़ क्षेत्र से 8, तथा अन्य क्षेत्रों से 12 सहित कुल 60 स्वाध्यायी भाई-बहिनों, श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह से भाग लिया। निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है-**प्रथम विजेता** श्री हेमन्त जी डागा (बून्दी वाले)-जयपुर, **द्वितीय विजेता** श्रीमती नवीनाजी जैन-हुबली एवं **तृतीय विजेता** श्री अनिलजी जैन-कोटा। **सान्त्वना पुरस्कार-** 1. सौ. मधुबालाजी ओस्तवाल-नाशिक, 2. प्रियंकाजी चौपड़ा-अजमेर, 3. स्नेहलता जी जैन-अहमदनगर, 4. मिनाक्षीजी चौपड़ा-अजमेर, 5. प्रियाजी सुराणा- मदनगंज, 6. कविनाजी जैन- जयपुर, 7. नाथुलाल जी जैन-

अजमेर, 8. सुषमाजी सिंघवी-जोधपुर, 9. ज्योतिजी जैन-बारां, 10. सेहलजी जैन-जयपुर, 11. राजमल जी संचेती-अमलनेर।

-सुनील संकलेचा, सचिव-श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर

'आवश्यकसूत्र' आगम की परीक्षा स्थगित

युगमनीषी, इतिहास मार्तण्ड, स्वाध्याय-सामायिक के प्रबल प्रेरक, अध्यात्म योगी, आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आवश्यक सूत्र आगम की खुली किताब लिखित परीक्षा 24 जनवरी, 2021 को आयोजित करने का निर्णय लिया गया था, किन्तु कोरोना महामारी के कारण विगत 9 माह से विश्वव्यापी संकट फैला हुआ है। इस महामारी के बढ़ते हुए प्रकोप को तथा सरकारी गाइडलाइन को देखते हुए 24 जनवरी, 2021 को आवश्यक सूत्र की खुली किताब लिखित परीक्षा व्यवस्थित रूप से आयोजित करना सम्भव नहीं हो पा रहा है। इसलिए अभी यह परीक्षा स्थगित की जा रही है। आगे जिस रूप में सरकारी गाइडलाइन प्राप्त होगी, कोरोना का प्रभाव कम होगा, उसे ध्यान में रखते हुए आवश्यक सूत्र की आगामी परीक्षा की निश्चित तिथि 15 फरवरी, 2021 तक सूचित कर दी जायेगी।

सभी से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक भाई-बहिनों को उक्त परीक्षा में भाग लेने हेतु प्रेरित करने का कार्य निरन्तर जारी रखावें। अभी तक जिन क्षेत्रों से तथा जिन भाई-बहिनों से सम्पर्क नहीं हो पाया है, उनसे सम्पर्क कर उन्हें इस परीक्षा में भाग लेने हेतु प्रेरित करने की कृपा करावें। सभी परीक्षार्थियों से निवेदन है कि वे अपनी परीक्षा की तैयारी जारी रखें, उसमें किसी प्रकार की शिथिलता न आने दें।

-अशोक बापना (संयोजक) अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

संक्षिप्त समाचार

जयपुर-कोरोना संकटकाल में इस बार दीपावली पर्व पर राजस्थान में पटाखों के क्रय-विक्रय पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहा। कुछ अन्य प्रान्तों में भी दीपावली बिना पटाखों के मनाई गई। इस रोक के पूर्व यह तथ्य भी प्रकाशित हुआ कि एक छोटा पटाखा दस लीटर और एक बड़ा पटाखा सौ लीटर ऑक्सीजन को समाप्त कर देता है। पटाखे से कोरोना, हृदयरोग, ब्लडप्रेशर एवं श्वास के रोगियों को फेफड़े के इन्फेक्शन का खतरा होता है। सरकार द्वारा लगाए गए पटाखा प्रतिबन्ध पर जिनवाणी परिवार की ओर से हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की जाती है।

बधाई

जोधपुर-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी

टाटिया को राष्ट्रीय हरित अधिकरण, नई दिल्ली द्वारा जोधपुर, बालोतरा तथा पाली के औद्योगिक और शहरी दूषित एवं रसायनयुक्त जल के सुचारु निष्कासन एवं शुद्धीकरण व्यवस्था की कार्य योजना बनाये जाने वाली कमेटी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

जयपुर-इण्डियन सोसाइटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज़ द्वारा जैन, बौद्ध, वैदिक दर्शन तथा संस्कृति के मूर्धन्य विद्वान् एवं अध्येता प्रो. सागरमल जैन की पुण्य स्मृति में प्राच्य-विद्या के संवर्द्धन हेतु सम्पादित शोध कार्यों की श्रेष्ठता के लिए प्रो. (डॉ.) धर्मचन्दजी जैन को 18 दिसम्बर, 2020 को भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद्, नईदिल्ली के सभागार में सोसायटी के अध्यक्ष प्रो. सत्यप्रकाश शर्मा एवं अतिथियों के करकमलों से **'प्रो. सागरमल जैन प्राच्य-विद्या सम्मान-2020'** प्रदान किया गया। डॉ. जैन जिनवाणी पत्रिका के प्रधान सम्पादक हैं।

बैंगलोर-व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 के अरटिया-कलां चातुर्मास में महासती श्री

सिद्धिप्रभाजी म.सा. के संसार पक्षीय बहन-बहनोई मुकेशजी, मीनाक्षीजी ओस्तवाल की सुपुत्री प्रांजल ओस्तवाल बैंगलोर ने 11 वर्ष की छोटी-सी उम्र में मात्र 15 दिन में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया है। **कोसाणा** में पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में 11 वर्षीय **श्री एल. सम्राट् बाघमार** ने प्रतिक्रमण, 25 बोल, वीरस्तुति एवं दशवैकालिकसूत्र के चार अध्ययन कण्ठस्थ किये हैं।

हिण्डौनसिटी-व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के वर्द्धमान नगर चातुर्मास में 10 वर्षीय बालिका मोनी जैन सुपुत्री श्री शैलेषजी जैन ने 20 दिन में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर लगभग चार माह स्वयं ने प्रतिक्रमण किया। प्रतिक्रमण के पश्चात् बालिका ने उववाई सूत्र, भक्तामर स्तोत्र तथा पुच्छिस्सुणं भी कण्ठस्थ किया।

जोधपुर-श्री शनिल रांका (सी.ए., सी.एस., सी.एम.ए.) सुपुत्र श्रीमती सुनीताजी-सन्तोषजी रांका सुपौत्र श्रीमती शान्तिदेवी-स्व. प्रेमचन्दजी रांका का पी.डब्ल्यू.सी., एडिनबर्ग स्कॉटलैण्ड (यू.के.) में चयन हो गया है।

पीपाड़सिटी-सी.ए. अंशिमाजी धर्मपत्नी श्री सौरभजी भण्डारी सी.ए. ने 22 दिसम्बर, 2020 को सम्पन्न हुए दीक्षान्त समारोह में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से मास्टर ऑफ कॉमर्स (एकाउण्ट्स) में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। श्रीमती अंशिमाजी पीपाड़ के धर्मनिष्ठ श्रावक श्री दिलीप-ऊषाजी भण्डारी की पुत्रवधू हैं एवं वर्तमान में आई.सी.आई.सी.आई. बैंक राजकोट में मैनेजर पद पर कार्यरत हैं। *-नमन मेहता*

श्रद्धाञ्जलि

आचार्य श्री ज्ञानसागरजी, आचार्यश्री रयणसागरजी, आचार्यश्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तपस्वी सन्त श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी आदि जिन सन्तों एवं महासतीवृन्द का इन दो-तीन माह की अवधि में देहावसान हुआ है, उन सबके प्रति लोगस्स के पाठ के साथ हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

जलगाँव-अनन्य गुरु भक्त, धर्मनिष्ठ, विख्यात समाजसेवी, संघसेवी, रत्नसंघ, संघविभूषण सुश्रावक श्री रतनलाल

सी. बाफना (भोपालगढ़ वाले) का 16 नवम्बर, 2020 को 85 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपने मानवसेवा, गोसेवा, जीवदया, शाकाहार और स्वाध्याय-प्रचार के प्रचुर अविस्मरणीय कार्य किए। शाकाहार, प्राणिरक्षा और गोसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों हेतु आपको 1991 में 'आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड' प्रदान किया गया। आपने 1998 में रतनलाल सी. बाफना गोसेवा, अनुसन्धान केन्द्र (गौशाला) की स्थापना की, जो अहिंसा तीर्थ के नाम से विख्यात है। आपने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद को 6 वर्षों तक सुशोभित किया। आपने अपने प्रतिष्ठान 'आर. सी. बाफना ज्वैलर्स' के माध्यम से हजारों स्वधर्मी भाइयों तथा ज़रूरतमन्द युवाओं को अपनी आजीविका हेतु रोजगार प्रदान किया। गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय मिशन को घर-घर पहुँचाने में आपने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। संघ में विरक्त-विरक्ताओं, वीर परिवारजनों एवं सन्त-सतियों की सार-सम्भाल में आपकी सक्रियता प्रेरणादायी थी। आप रत्नसंघीय शासन सेवा प्रवृत्तियों के पालन में पूरी तरह सजग थे। रत्नसंघ के अलावा सभी सम्प्रदायों के साधु-साध्वियों की सेवा-भक्ति में भी आप सन्नद्ध रहते थे, कहते थे कि मेरे गुरु हस्ती ने जो मन्त्र 'गुरु एक सेवा अनेक' का दिया, उसी का पालन कर रहा हूँ। *-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री*

सवाईमाधोपुर-अनन्य गुरु भक्त, सन्तसेवी, श्रद्धानिष्ठ वरिष्ठ स्वाध्यायी सुश्रावक श्री जगदीश प्रसादजी जैन (चकेरी वाले) का 23 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् आप पूर्णत: सांसारिक कार्यों से निवृत्त होकर सन् 2003 से आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की चरण सन्निधि का लाभ लेते रहे। आप आचार्य भगवन्त की सेवा में रहकर आवश्यक कार्यों को छोड़कर प्राय: अहोरात्रि संवर की साधना में संलग्न रहते थे तथा सन्त-सतियों के दिशा-निर्देश हेतु प्रेषित होने वाले पत्राचार का कार्य पूर्ण गम्भीरता के साथ सम्पादित किया करते थे। साथ ही समय-समय पर आचार्य भगवन्त एवं सन्तों के प्रवचनों का संकलन करने की भी आपकी अभिरुचि थी। जिनवाणी में आचार्य भगवन्त से सम्बन्धित प्रकाश्य समाचार आप ही तैयार कर प्रेषित करते थे। आप इस कार्य में सिद्धहस्त थे। प्राय: संघ के सभी समर्पित सुश्रावक-सुश्राविकाओं से आपका परिचय सरल स्वभावी, सेवाभावी एवं संघ समाचारी की जानकारी से सम्पन्न सुश्रावक के रूप में रहा। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णत: समर्पित रहे तथा सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहे। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के समर्पित वरिष्ठ परिवारों में से एक है। *-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री*

शाजापुर (म.प्र.)-धर्मनिष्ठ सुश्रावक, प्रज्ञापुरुष, श्रमण साहित्य के सारस्वत साधक डॉ. सागरमलजी जैन सुपुत्र स्व. श्री राजमलजी शक्करवाला का 2 दिसम्बर, 2020 को 88 वर्ष की आयु में संथारापूर्वक महाप्रयाण हो गया। आप अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जैन विद्वान् ही नहीं, अपितु गृहस्थ सन्त थे। सहजता, सरलता, सहिष्णुता, विनम्रता, अनुशासन आदि आपके जीवन की मौलिक विशेषताएँ रहीं। आप अपने लेखन-चिन्तन-अध्यापन के माध्यम से सदैव सत्य को उद्घाटित करने हेतु प्रयासरत रहे। पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी के निदेशक पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् आपने अपने द्वारा सञ्चित एवं पारिवारिक सहयोग से 1997 में शाजापुर (मध्यप्रदेश) में प्राच्य विद्यापीठ की स्थापना की जिसे वर्ष 2000 में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन द्वारा शोध-संस्थान के रूप में मान्यता प्रदान की गई। आपके निर्देशन में सञ्चालित ई-लाइब्रेरी प्रोजेक्ट कार्य के अन्तर्गत तीन लाख ग्रन्थों के दस लाख पृष्ठों की सामग्री इण्टरनेट पर सहज उपलब्ध हो रही है, जिससे देश-विदेश के मुमुक्षु शोधार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। आपने शिक्षकीय धर्म का पालन करते हुए विद्यार्थियों, मुमुक्षुओं और साधु-साध्वियों को जैन धर्म एवं दर्शन के उच्चस्तरीय ग्रन्थों का पारम्परिक एवं आधुनिक शैली से अध्यापन कार्य बहुत ही मेहनत और लगन के साथ किया।

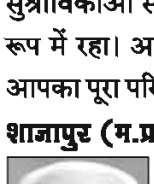

जयपुर-संघ समर्पित, श्रद्धानिष्ठ, श्रावकरत्न श्री प्रकाशचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री प्रेमचन्दजी डागा का 18 अक्टूबर, 2020 को संलेखना संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करते थे तथा प्रत्येक अष्टमी, चतुर्दशी को संवर-पौषध, दया आदि की साधना करते थे। आपने स्वाध्यायी के रूप में भी कई वर्षों तक सेवाएँ प्रदान की। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्णत: समर्पित थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। रत्नसंघीय सन्त-सतीवृन्द सहित सभी सम्प्रदायों के सन्त-सतीवृन्दों को कर्मग्रन्थ पढ़ाने-समझाने का योगदान आपने निष्काम भाव से जीवन पर्यन्त किया, जो जैन जगत् में आदर्श पथ-प्रदर्शक रहेगा। आपने संघ की विभिन्न संस्थाओं में सेवा प्रदान कर संघ का नाम गौरवान्वित किया। आप स्वाभाविक सहिष्णुता एवं शिष्टाचार के धनी थे। आपमें नैतिकता का संस्कार भरपूर था। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री तथा लालभवन चौड़ा रास्ता स्थित विनयचन्द ज्ञान भण्डार के कोषाध्यक्ष के रूप में आपकी महनीय सेवाएँ रही है। जीवन के अन्तिम क्षणों में भी आप अपनी साधना के प्रति सजग थे। यह आपकी त्याग के प्रति दृढ़ता के भाव प्रदर्शित करता है। आपके लघु भ्राता

श्री विमलचन्दजी डागा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संघ संरक्षक एवं भतीजे श्री विनयचन्दजी डागा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष के रूप में अपना दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। सम्पूर्ण डागा परिवार संघ की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। आपका पूरा परिवार सामायिक, स्वाध्याय, सेवा और संस्कारों के प्रति समर्पित है। *-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री*

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री राजेन्द्रकुमारजी सुपुत्र स्व. श्री जौहरीलालजी पटवा का 08

दिसम्बर, 2020 को 70 वर्ष की आयु में संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आप गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति रखते थे तथा सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे। सन् 2013 में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के जयपुर चातुर्मास में आपने पूरे चार माह तक संवर की साधना की। आप नियमित रूप से सामायिक, स्वाध्याय करने के साथ व्रत-नियमों का पालन करते थे तथा संघसेवा के लिए सदैव तत्पर रहते थे। आपने वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में लगभग अर्द्धशती तक अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की। आपश्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जयपुर शाखा के संयोजक एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के संयुक्त मन्त्री के पद पर भी रहे। साथ ही गुरु हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-संघ के संयोजक के रूप में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही थी। आपके सुपुत्र युवारत्न श्री रितुलजी पटवा वर्तमान में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कोषाध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। *-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री*

जबलपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शकुनदेवीजी धर्मपत्नी श्री मदनलालजी बाघमार का 16 दिसम्बर, 2020 को

देहावसान हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविकारत्न थी। कोसाना ग्राम मूल निवासी श्राविकारत्न जबलपुर क्षेत्र में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा में सदैव तत्पर रहती थी। साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा तथा व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के जबलपुर चातुर्मास में आपने धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। सुश्राविका श्रीमती शकुनदेवीजी बाघमार संघ-सेवा में सदैव सक्रिय थी। आपके धर्मसहायक आदरणीय श्री मदनलालजी बाघमार श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जबलपुर के अध्यक्ष पद के दायित्व को बखूबी निर्वहन के साथ ही संघ एवं संघीय संस्थाओं में सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं। बाघमार परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

कानपुर-संघसेवी, धर्मपरायणा श्राविकारत्न श्रीमती कंचनदेवीजी धर्मसहायिका वरिष्ठ श्रावकरत्न श्री मनमोहनचन्द

जी पुत्रवधू स्व. श्री जालमचन्दजी बाफणा (श्री जैन रत्न विद्यालय के संस्थापक) का 78 वर्ष की आयु में 26 दिसम्बर, 2020 को व्रत-पच्चक्खाण के साथ परलोकगमन हो गया। चातुर्मास में विराजित विद्वान् महासतीजी घर पर पधारे, एक घण्टे विराजकर लगभग डेढ़ माह पूर्व आपने जमीन-जायदाद, अपनी पूँजी, जेवरात का परिग्रह, वस्त्रों को त्यागकर सिर्फ दवा सम्बन्धी सामान रखकर त्याग कर लिया तथा वन्दन करके प्रमोदभाव से ग्रहण किया। आपने 8 वर्ष की आयु में तेले का प्रारम्भ कर जीवन में 3 मासखमण, सिद्धिचक्र, उपवास 11 से 8 अठाई तक 45, हर साल 6 तेले की तपस्या की। उपवास आदि करने में पता नहीं चलता था। आयम्बिल, एकाशन आदि करने में रुचि थी। कानपुर समाज में उनका बहुत दबदबा था। स्थानक-निर्माण में पूरा सहयोग था, हरेक के प्रति दया भावना, सहकार, प्रेम व्यवहार एवं उच्च भावना थी। स्थानक में स्वयं सामायिक करना एवं दूसरों को प्रेरित करना उनका स्वभाव था। शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा., महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. के चातुर्मास में आपका सराहनीय सहयोग रहा। आपके पति श्री मनमोहनचन्दजी का कानपुर के समाज में पूरा धार्मिक सहयोग संरक्षक की तरह है।

सुपुत्र श्री प्रमोद कुमारजी समाज में अध्यक्ष हैं, पुत्री कुसुम, पौत्री प्रतिभा एम.डी. हैं। पुत्रवधू, पौत्र, पड़पौत्री सहित समस्त परिवार धर्मनिष्ठ है। *-शान्तिलाल लोढ़ा, मन्त्री*

अजमेर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री धर्मीचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री राजमलजी रांका का 13 नवम्बर, 2020 को देवलोक गमन

हो गया। आप शिक्षा विभाग-लेखा सेवा से सेवानिवृत्त हुए थे। आप शान्त स्वभावी, सरल, सेवाभावी, सादा-जीवन उच्च-विचार के धनी एवं ईमानदार होने के साथ-साथ धर्मध्यान में सदैव समर्पित रहे। अपना जीवन जैन शैली में जीते हुए प्रतिदिन प्रतिक्रमण-स्वाध्याय करते थे। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री सुकेश कुमारजी रांका, सुपुत्री श्रीमती सीमाजी चण्डालिया एवं श्रीमती संगीताजी बाफना एवं सुपौत्र श्री श्रेयांसजी, जतिनजी रांका सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। *-सुकेश कुमार रांका*

अजमेर-धर्मनिष्ठ श्राविकारत्न श्रीमती अनिलाजी धर्मपत्नी श्री धर्मीचन्दजी रांका का 09 नवम्बर, 2020 को

देवलोकगमन हो गया। आपकी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। स्वास्थ्य अनुकूल रहते प्रतिदिन आराधना करती थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आपने स्वयं संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहनों के आतिथ्य सत्कार में आपका परिवार सदैव तत्पर रहता है। *-सुकेश कुमार रांका*

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मैनादेवीजी धर्मपत्नी श्री उम्मेदराजजी डूंगरवाल (थाँवला वाले) का 4 नवम्बर,

2020 को देहावसान हो गया। सन्त-सतीवृन्द के प्रति उनकी अनन्य आस्था और अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के पाँच्यावाला चातुर्मास में आप सहित समस्त डूंगरवाल परिवार ने महनीय सेवाएँ प्रदान की। विहार-सेवा में भी डूंगरवाल परिवार की अमूल्य सेवाएँ प्राप्त हुई। चातुर्मास तथा आपके मूल निवास थाँवला में भी शेखेकाल सन्त-सतीवृन्द के पधारने पर आप सहित परिवारजन दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त करते हैं। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था, जिसके फलस्वरूप डूंगरवाल परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। श्री उम्मेदराजजी, शान्तिलालजी, प्रकाशचन्दजी, एवन्त कुमारजी तथा राजेशकुमारजी की थाँवला और जयपुर में संघ एवं संघीय स्थानीय संस्थाओं में विशेष रूप से सक्रिय सेवाएँ प्राप्त हो रही हैं। स्वधर्मी वात्सल्य और आतिथ्य-सत्कार में भी डूंगरवाल परिवार सदैव समर्पित रहा है। *-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री*

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री भँवरलालजी बोथरा का 29 अगस्त, 2020 को 96 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया।

आपका जीवन प्रारम्भ से ही संघ-सेवा के लिए समर्पित रहा। आपने आचार्य हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक- स्वाध्याय को अपने जीवन में आत्मसात् किया था। हीरादेसर एवं चेन्नई चातुर्मासार्थ तथा शेखेकाल पधारने वाले सभी सन्त-सतीवृन्द की सेवा में आप सदैव समर्पित रहते थे। जब भी रत्नसंघीय सन्त-सती आपके मूल निवास हीरादेसर पधारते थे, आप चेन्नई से गाँव पधार कर सेवा का लाभ लेते थे। पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का सदुपयोग जीवदया के क्षेत्र में आपने विशेष रूप से किया। अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में भी आपका सहयोग रहता था। आपके सुपुत्र श्री चम्पालालजी, श्री सुगनचन्दजी, श्री रतनलालजी एवं श्री गौतमचन्दजी बोथरा सहित सभी परिवारजन रत्नसंघ की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। *-जवाहरलाल कर्णावट*

धनोप-वीरमाता सुश्राविका श्रीमती चाँदकँवरजी पाडलेचा धर्मसहायिका स्व. श्री धनराजजी पाडलेचा का 08 नवम्बर, 2020 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपका जीवन धार्मिक प्रवृत्ति से सराबोर था। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति समर्पित श्राविकारत्न ने अन्तिम समय में सजग अवस्था में अपने अन्तिम मनोरथ को सफल किया। आप रत्नसंघीय महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा. की सांसारिक मातुश्री थी। सम्पूर्ण पाडलेचा परिवार संघ सेवा में सक्रिय है।

इन्दौर-संघसेवी युवारत्न श्री सिद्धार्थजी सुपुत्र श्री सुमेरचन्दजी सुपौत्र श्री मोहनलालजी चौरड़िया (निवासी लवेराकला, जोधपुर) का 15 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप हँसमुख एवं मिलनसार प्रवृत्ति के थे तथा इन्दौर पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपके पिताश्री श्री सुमेरचन्दजी चौरड़िया संघ के क्षेत्रीय प्रधान सहित अनेक पदों पर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल में कार्यकारिणी सदस्य हैं। श्री चोरडियाजी पूरे मध्यप्रदेश में कहीं भी सेवा हेतु संघ द्वारा याद करने पर उपस्थित होते हैं, जिसका हमें गौरव है।

चेन्नई-धर्मनिष्ठ, अनन्य गुरुभक्त युवारत्न श्री राजेशकुमारजी सुपुत्र श्री कान्तिलालजी कर्नावट का 08 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। संघ-समाज के साथ धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रहे। धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहने वाले आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सदगुणों से ओतप्रोत था। केवल वे ही नहीं सम्पूर्ण कर्नावट परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में कर्नावट परिवार सदैव तत्पर रहा है। रत्नसंघीया शान्त स्वभावी महासती श्री शान्तिकँवरजी म.सा. के सांसारिक वीरभ्राता श्री उगमचन्दजी कर्नावट के आप सुपौत्र तथा महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा. के सांसारिक जीजाजी थे।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रेणुजी धर्मसहायिका श्री गौतमराजजी, पुत्रवधू स्व. श्रीमती उमरावकँवरजी-पारसराजजी भंसाली एवं दत्तक पुत्रवधू स्व. श्रीमती पुष्पकँवर-श्री जबरराजजी भंसाली का 22 सितम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। स्वभाव से सरल सभी के प्रति आदर एवं सेवा का भाव होने से आप घर-परिवार एवं समाज में सबकी प्रियपात्र थी। बचपन में प्राप्त माता-पिता के संस्कारों को आगे बढ़ाते हुए ससुराल पक्ष में आचार्य श्री हस्ती की पावन प्रेरणा से आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ी रही। श्राविका संघ की गतिविधियों में भी आप सक्रिय थी। तपश्चर्या में भी आपने 31 उपवास, 15 उपवास, दो बार अठाई तथा अनेक छोटी-मोटी तपस्याएँ की थी। कुछ वर्षों से असाध्य रोग से ग्रसित होने के बावजूद भी आपने वर्ष 2018 में अष्ट प्रहर पौषध की आराधना की। आपके धर्मसहायक श्री गौतमराजजी सुपुत्र श्री राहुलजी भंसाली संघ-समाज की गतिविधियों में सक्रिय हैं।

अजमेर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री किस्तूरमलजी साण्ड का 18 नवम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहते थे। विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. एवं श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के अजमेर चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। साण्ड परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में, स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी सदैव समर्पित रहा है।

बिजयनगर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री अमरचन्दजी साण्ड का 18 नवम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहे तथा आपका जीवन संघ एवं समाजसेवा में समर्पित रहा। व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा. आदि ठाणा, विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के बिजयनगर पधारने पर आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। श्री अमरचन्दजी साण्ड प्रत्येक पूर्णिमा को गुरुदर्शन के लिए पधारते थे। बिजयनगर में सन्त-सतीवृन्द के चातुर्मास हो या शेखेकाल विराजने पर आप सहित समस्त साण्ड परिवार सेवा-भक्ति में सन्नद्ध रहता है। संघ-सेवा, समाज-सेवा में, स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में साण्ड परिवार सदैव समर्पित रहा है।

मुम्बई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पाजी धर्म सहायिका स्व. श्री विजयराजजी एवं पुत्रवधू स्व. श्री कुन्दनमलजी

भंसाली का 14 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। आप नियमित 5-6 सामायिक करतीं थी एवं स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष रुचि थी। आप रात्रिभोजन त्याग के साथ-साथ पर्व-तिथियों पर हरी का त्याग रखती थीं। सन्त-सतीवृन्द की विहार सेवा में आप सदैव तत्पर रहती थीं। इचलकरंजी, बैंगलोर, पाली, जोधपुर आदि कई स्थानों पर आप चातुर्मास में चौका लगाकर धर्मध्यान का लाभ लेते थे। आपके सुपुत्र श्री धनपतजी भंसाली ने अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ में मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की है तथा वर्तमान में भी रत्नसंघ की समस्त गतिविधियों में आप तथा आपके परिवार का पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है।

अहमदाबाद-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कन्हैयालालजी हिरण का 13 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। गुरु

हस्ती-हीरा-मान के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति वाले सुश्रावक का जीवन शान्त, सौम्य एवं सरल था। व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण आपका जीवन प्रेरणादायी था। आप बिलाड़ा एवं अहमदाबाद दोनों स्थानों पर चातुर्मास अथवा शेखेकाल में सन्त-सतीवृन्द की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। मणिनगर ढोर बाजार संघ-अहमदाबाद के अध्यक्षीय-पद का दायित्व भी आपने निर्वहन किया तथा यहाँ के स्थानक भवन के निर्माण में अर्थ सहयोग के साथ व्यवस्था में भी सहयोग दिया। बिलाड़ा में कबूतरों के चुगे-दाने के लिए आप द्वारा विशेष प्रयास किये गये। जीवदया में आपकी विशेष रुचि थी। वैरागी भाई-बहिनों की सेवा हेतु भी आप सदैव तत्पर रहते थे। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म .सा. का जहाँ भी चातुर्मास होता, आप कई दिनों सेवा में रहकर गुरुभक्ति में संलग्न रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

हैदराबाद-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री हस्तीमलजी गुन्देचा (मूल निवासी सोजतरोड़) का 30 नवम्बर, 2020 को 71 वर्ष

की वय में देहावसान हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक, पौषध, पर्युषण-सेवा, व्रतनियम-तिविहार त्याग आदि का पालन करते थे। आप रत्न संघ के समर्पित श्रावक रत्न थे। आपका जीवन सरल एवं सहज था। आप नियमित रूप से स्थानक पधारकर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लेते थे। आपने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हैदराबाद के अध्यक्ष पद का तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के आन्ध्रप्रदेश सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान का दायित्व बखूबी निर्वहन किया था। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ग्रेटर हैदराबाद, श्री जैन स्वाध्याय संघ, हैदराबाद, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन ट्रस्ट, आचार्य हस्ती फाउण्डेशन, जैन सेवा संघ, कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के संरक्षक, अध्यक्ष, मन्त्री, कोषाध्यक्ष आदि रहे। आपके अनुज भ्राता श्री शान्तिलालजी गुन्देचा श्री जैन स्वाध्याय संघ, हैदराबाद की गतिविधियों में सक्रियता से जुड़े हुए हैं। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती रतनदेवीजी, आपके सुपुत्र

सज्जनजी एवं उत्तमजी गुन्देचा एवं सुपुत्र श्रीमती इन्दिरादेवीजी सहित आपका परिवार रत्न संघ की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पुखराजजी मोहनोत का 05 नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन

प्रारम्भ से ही संघ-सेवा के लिए समर्पित रहा। आचार्यप्रवर के रेनबो हाउस चातुर्मास में तथा घोड़ों का चौक चातुर्मास में प्राचीन ग्रन्थ एवं साहित्य को सुव्यवस्थित करने में आपकी सक्रिय सेवाएँ रहीं। संघ ने जो भी दायित्व आपको प्रदान किया, तत्परता के साथ उसे आपने निभाने का प्रयास किया। आप रत्नसंघीय श्रद्धेय श्री मगनमुनिजी म.सा. के सांसारिक वीर पुत्र थे। आपने साहित्य सर्जन, साहित्य लेखन एवं महापुरुषों के प्रवचनों का वर्षों तक सम्पादन किया। जिनवाणी पत्रिका में भी आप कुछ वर्ष सम्पादक मण्डल में सदस्य रहे। संघ-समाज के प्रति आपकी सराहनीय सेवाएँ रही।

अहमदाबाद-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री छोगालालजी बाघमार का 07 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आप

सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में सदैव तत्पर रहते थे। आपने वर्षों तक श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ अहमदाबाद के अध्यक्षीय पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया। आप राजस्थान उपाश्रय के ट्रस्टी, महावीर एज्युकेशन सोसायटी के अध्यक्ष, सोशल कॉपरेटिव बैंक के डायरेक्टर सहित अनेक सामाजिक संस्थाओं के मानद् पदाधिकारी रहे। आपने तन-मन-धन से सभी संस्थाओं को सहयोग प्रदान किया। आपके दोनों सुपुत्र श्री मुकेशजी एवं भरतजी संघ में सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री केवलचन्दजी जैन का 11 नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सरल, सहज, करुणाशील, उदारमना आदि गुणों से ओतप्रोत था। आपके सुपुत्र श्री हेमन्तकुमारजी जैन, राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा अधिकारी एवं श्री महेन्द्र कुमारजी पारख भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। आपका परिवार धर्मनिष्ठ एवं संघ की गतिविधियों में अग्रणी है।

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री आनन्दमलजी सुपुत्र स्व. श्री सायरमलजी चोरडिया का 31 अक्टूबर, 2020 को 73

वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति पूर्णतः समर्पित आप शान्त, सरल एवं हँसमुख व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. तथा महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के चेन्नई चातुर्मासों में उन्होंने अपूर्व लाभ प्राप्त किया। आप चेन्नई की अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं में सक्रिय थे। आपकी धर्म सहायिका श्रीमती विमलाजी चोरडिया स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करती हैं। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री पी.एम. चोरडिया एवं डॉ. चंचलमलजी चोरडिया के आप भतीजे थे।

-शेखर चोरडिया

कोटा-धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री नरोत्तमजी सुपुत्र स्व. श्री देवीलालजी जैन का 5 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो

गया। आप प्रसिद्ध समाजसेवी थे और सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप पोरवाल संघ-कोटा के लगभग 7 वर्षों तक उपाध्यक्ष तथा श्री जैन पद्मावती पोरवाल समिति विज्ञाननगर-कोटा के लगभग 20 वर्षों तक अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे। वर्तमान में आप श्री वर्द्धमान स्थानकवासी दिवाकर श्रमण संघ-कोटा के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे थे।

-अनिल कुमार जैन, कोटा

इन्दौर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री ललितजी सुपुत्र स्व. श्री सूरजमलजी बोथरा का 7 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आपने जीवन पर्यन्त साधु-साध्वीवृन्द की भक्ति-भाव से सेवा का लाभ लिया, साथ ही नियमित सामायिक-स्वाध्याय भी करते थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शशिजी बोथरा भी धर्मनिष्ठ श्राविकारत्न हैं।

-अशोक माण्डलिक

कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नवनीतलाल माधवजी पतीरा का 20 नवम्बर, 2020 को 86 वर्ष की उम्र में देवलोकगमन हो गया। वाणी की मधुरता और व्यवहार की सरलता के कारण आप सभी के प्रियपात्र थे। आपने कई त्याग प्रत्याख्यान ले रखे थे। संघ और समाज हित में आप सदैव तत्पर रहते थे। कोटा दादाबाड़ी शास्त्री नगर में 'श्री सुधर्म जैन पौषध शाला का स्थान नि:शुल्क दिला, उसे सुविकसित करने में आप अग्रणी रहे। उम्र के इस पड़ाव में आप अपनी धर्म करणी करने में पूर्णत: सजग थे। आप अपने पीछे भरापूरा और संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं। बारां जैन श्री संघ को जागृत और मजबूत बनाने में आपकी महती भूमिका रही है।

-रमेशचन्द्र कनेरिया, कोटा

हिण्डौनसिटी-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती अंगूरी देवीजी धर्मसहायिका स्वर्गीय श्री कस्तूरचन्दजी जैन (लहचोरा वाले) का 29 नवम्बर, 2020 को 76 की वय में देहावसान हो गया। आप रत्नसंघ की सुज्ञ, समर्पित एवं धर्मनिष्ठ श्राविकारत्न होने के साथ सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थी। हिण्डौन में हुए हर चातुर्मास में आपने 4 माह का संवर किया। आपने 19, 11, 9, 8, 5 एवं 3-3 की तपस्याएँ की तथा अष्टमी, चतुर्दशी को एकाशन, उपवास आदि तपस्याएँ करती रही। नित्य प्रति चौदह नियम, पौरसी एवं आजीवन नवकारसी एवं चौविहार आदि नियमों का पालन करती थी। इस वर्ष साढ़े तीन माह का एकाशन, नींवी, आयम्बिल आदि की तपस्या की। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री ताराचन्दजी, पुत्रवधू श्रीमती निशाजी एवं सुपौत्र-सुपौत्री गगन, पूर्वा एवं यशराज जैन सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।

-अनिल कुमार जैन, जयपुर

कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री गजेन्द्रजी सुपुत्र स्व. बंसीलालजी लुंकड का 2 दिसम्बर 2020 को 58 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप धर्मनिष्ठ श्रावक थे तथा जिनशासन के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आप उदारमना, शान्त स्वभावी एवं दृढ़ श्रावकरत्न थे। आप धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे पत्नी एवं दो पुत्र छोड़कर गये हैं।

-मंजु लुंकड़

बीकानेर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती निर्मला देवीजी धर्मसहायिका श्री हमीरमलजी सुराणा का 24 नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपने संस्कारों से अपने समूचे परिवार को समृद्ध किया। आप महान् तपस्विनी थी। आपने 2 वर्षीतप, 5 सावन तप एवं 2, 3, 4, 5, 8, 11, 15 की तपस्याएँ भी बड़े उत्साह से की। आपका सामायिक के प्रति विशेष लगाव था, प्रतिदिन 9 से 15 सामायिक कर लेती थी। धार्मिक प्रतियोगिताओं में विशेष रुचि रखती थी। आप सरल, मिलनसार एवं स्नेह की प्रतिमूर्ति थी।

-नवीन डागा, बीकानेर

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री लखपतराजजी चौपड़ा का 11 दिसम्बर, 2020 को स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था तथा नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावकरत्न थे। सन्त-सतीवृन्द के चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। आप पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारकर धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त करते

थे। आप सन्त-सतीवृन्द की गोचरी-पानी की सेवा में अग्रणी रहते थे। आप परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सांसारिक भानजे थे। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी चौपड़ा परिवार सदैव समर्पित रहा है।

-प्रकाश सालेचा, जोधपुर

खोह (अलवर)-सुश्राविका श्रीमती किरणजी धर्मपत्नी श्री सुमतिचन्दजी जैन का 6 नवम्बर, 2020 को जयपुर में

निधन हो गया। आप सरल एवं शान्त स्वभाव की धर्मनिष्ठ सुश्राविका थी। आप प्रतिदिन 2 सामायिक करती थी। जब आप स्वस्थ थी तब चातुर्मास में बेले, तेले एवं अठाई तप की तपस्या कई बार कर चुकी। आपके देहावसान से श्री श्राविका मण्डल खोह (अलवर) को अपूरणीय क्षति हुई है।

जलगाँव-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मिश्रीलालजी ताराचन्दजी चौपड़ा का 30 अगस्त, 2020 को 83 वर्ष की आयु में

स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी, धर्मनिष्ठ, सरलहृदय, धीर, वीर, गम्भीर श्रावकरत्न थे। संघ के लिए एक अनुभवी और अच्छे सलाहकार थे। आप कई वर्षों से जलगाँव जिला व्यापारी महामण्डल के अध्यक्ष थे। इसके साथ ही अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी रहे। चारित्रनिष्ठ, पूज्य सन्त-सतियों पर आपकी दृढ़ श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

हैदराबाद-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री डुंगरचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री वंशराजजी भंसाली का 6 अक्टूबर, 2020 को 83 वर्ष

की उम्र में देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, मिलनसार, जैनधर्म आस्थावान, चारित्रवान आदि गुणों से युक्त थे। आपने श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, फीलखाना के अध्यक्ष के रूप में भी अपनी सेवाएँ दी। आपके चार आज्ञाकारी सुपुत्रों स्व. जुगराजजी, प्रवीणजी, सुरेशजी और आनन्दजी तथा धर्मपत्नी श्रीमती जमुनादेवी ने सदैव आपके सुकृत के कार्यों में सहयोग किया। आप सदैव रात्रि चौविहार-त्याग रखते थे।

-जैन जसराज देवड़ा धोका

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नरेन्द्रजी भण्डारी का 5 नवम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त आपका जीवन संघ एवं समाज सेवा में समर्पित रहा था। चतुर्विध संघ की सेवा-भक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे। भण्डारी परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। आपकी पुत्रवधू श्रीमती श्वेताजी भण्डारी अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र में कार्यालय प्रभारी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही है।

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री

अलवर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती प्रेमलताजी धर्मपत्नी स्व. श्री श्यामबिहारीलालजी का देवलोक गमन हो गया।

आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता और सदभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आपका जीवदया से विशेष लगाव था। आपका परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा, गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन करने में सदैव तत्पर रहता है। श्रद्धेय तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के अलवर चातुर्मास में सभी परिजनों ने धर्म-ध्यान एवं प्रवचन-श्रवण का अपूर्व लाभ प्राप्त किया था। आप अपने पीछे दो सुपुत्र श्री राजकुमारजी एवं प्रदीपजी एवं पाँच सुपुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।

-राजकुमार प्रदीप कुमार जैन

अलवर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रमेशचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री उम्मेदीलालजी जैन का देवलोकगमन हो गया। आप सन्त-सतियों के प्रति श्रद्धाभाव पूर्वक सेवा, सार-सम्भाल करने वाले श्रावक थे। आप मौजपुर ग्राम में उपसरपंच भी रहे। भाई श्री लक्ष्मणजी समाज के दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी सभी सन्त-सतियों की सेवा, सार-सम्भाल एवं धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता करते चले आ रहे हैं। आपके सुपुत्र श्री धीरजजी वर्तमान में अलवर में

पार्षद हैं। अजमेर के आपके ही पारिवारिकजनों ने संघ को हवेली प्रदान की। स्थानक निर्माण हेतु हवेली को उतारते समय आपसे सहमति चाही तब भी आपने सहर्ष सहमति प्रदान की एवं अब भी श्री लक्ष्मणजी ने निर्माण कार्य होने के वक्त पर भी अपने आवासीय मकान में रहने तथा सामान रखने की सहर्ष सहमति प्रदान कर, संघ-सेवा में सद्भाविक सहकार सहयोग किया है। आप सभी परिवारजनों की धार्मिक भावना सराहनीय है।

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री महेन्द्रजी जैन का 81 वर्ष की आयु में एवं सुश्राविका श्रीमती चौसरदेवीजी जैन का 74

वर्ष की आयु में 6 दिसम्बर, 2020 को रात्रि को तीन घण्टे के अन्तराल में देहावसान हो गया। आप दोनों उदारमना, सरल और कर्त्तव्यपरायण जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत थे। श्री महेन्द्रजी जैन पब्लिक रिलेशन सोसायटी ऑफ इण्डिया जयपुर चेप्टर के अध्यक्ष रहे। साहित्य एवं समाजसेवी संस्थाओं के साथ ही राजस्थान पत्रिका, वैदिक पीठ, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा, जैन विश्व भारती आदि संस्थाओं से जुड़े हुए थे। संघ-सेवा एवं अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित थे। बतौर लेखक आपका नाटक 'अहोदानम्' (चन्दनबाला) देश-विदेश में सैंकड़ों बार मञ्चित हुआ है तथा अन्य नाटक 'अग्निपथ' को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की ओर से स्वीकृत कक्षा-11 (हिन्दी साहित्य) की पाठ्यपुस्तक (1998-2000) में शामिल किया गया था। आप अपने पीछे दो पुत्र एवं एक पुत्री सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

इन्दौर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री तिलोकचन्दजी लुणावत (आचीणा वाले) का 7 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो

गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी, सरल व्यक्तित्व के धनी थे। आप श्री गजेन्द्र निधि ट्रस्ट के ट्रस्टी भी रहे। समय-समय पर आप सभी सन्त-सतीवृन्द के दर्शन हेतु परिवार सहित पधारते थे। प्रतिदिन सामायिक के साथ आपने वृद्धावस्था में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया। पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय भगवन्त श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द का विचरण-विहार में समय-समय पर आचीणा गाँव में पदार्पण हुआ है। गाँव में जैन परिवार का एक ही घर होते हुए भी सेवा में सदैव अग्रणी एवं तत्पर रहे। महापुरुषों के पधारने पर आपने आजीवन शील व्रत ग्रहण किया। आपके भाई राजेशजी लुणावत एवं तीन सुपुत्र संघ-सेवा में सदैव अग्रणी रहते हैं।

-गजेन्द्र चौपड़ा, जोधपुर

सेलम्बूर-सुश्राविका श्रीमती तुलसीबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्रीबालचन्दजी गाँधी का 28 अक्टूबर, 2020 को 84 वर्ष

की आयु में देहावसान हो गया। आपने अपने जीवन का अधिकांश समय धर्म-ध्यान, तप-त्याग, दया-संवर, सन्त-सती प्रवचन-श्रवण आदि में बिताया। उभयकाल प्रतिक्रमण, नवकारसी, जमींकन्द एवं रात्रि भोजन-त्याग, प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय आदि के साथ-साथ ज्ञान-ध्यान में विशेष रुचि थी। आपने अपने जीवन काल में दो वर्षीतप, अठाई, उपवास, आयम्बिल ओली, पञ्चमी, चौदस, एकादशी आदि पर अनेक तपस्याएँ की तथा तीन मनोरथ का भावपूर्ण चिन्तन किया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।

-पृथ्वीराज गाँधी

जोधपुर-धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री राजेन्द्रजी सुपुत्र स्व. श्री शीतलसिंहजी कोठारी का 13 सितम्बर, 2020 को

देहावसान हो गया। चारित्र सम्पन्न सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अटूट आस्था थी। आपका जीवन सरल, सहज एवं विनयशीलता से युक्त था। आप संघ- समाज की सभी गतिविधियों में सदैव सक्रिय रहते थे। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती प्रसन्नजी कोठारी श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की गतिविधियों में सक्रिय हैं।

नागौर-युवारत्न श्री विवेकजी सुपुत्र श्री अजीतराजजी भण्डारी का 30 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप

संघ-सेवा में समर्पित होने के साथ विनयशील एवं सेवाभावी युवारत्न थे। श्री जैन रत्न युवक परिषद् नागौर में आपकी सक्रिय रूप से सेवाएँ प्राप्त हो रही थी। आपके पिताश्री सहित आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा सञ्चालित सभी गतिविधियों से जुड़ा हुआ है।

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पुखराजजी सुपुत्र श्री भँवरलालजी बोथरा (निवासी-हीरादेसर) का 03 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर सहित समस्त सन्त-सतियों के प्रति आगाध श्रद्धाभक्ति रखते थे। आप निरन्तर सामायिक-स्वाध्याय करते थे। वर्ष 2005 के आचार्यप्रवर के चेन्नई चातुर्मास में गुरुदेव के मुखारविन्द से आपने शीलव्रत ग्रहण किया था। आप तन, मन, धन से संघ को अपना सहयोग प्रदान करते थे। आपके सुपुत्र श्री नितेशजी एवं सुनीलजी बोथरा भी युवक संघ की गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। *-माँगीलाल चोरड़िया*

जोधपुर-संघ-सेवी युवारत्न श्री अनुजजी सुपुत्र श्री जेठमलजी बुरड़ का 05 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया।

आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। संघ-समाज के साथ धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रहे। आपके श्वसुर श्री दिनेशजी खिंवसरा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र में सह-सचिव का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री शान्तिलालजी रांका का 07 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। आपकी

सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। जोधपुर एवं पालासनी पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा में आप सदैव तत्पर रहते थे। शक्तिनगर स्थित सामायिक- स्वाध्याय भवन में व्यवस्था-सम्बन्धी कार्यों में आपका अपूर्व सहयोग प्राप्त होता था। आप रत्नसंघीया महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा. के सांसारिक नानाजी थे। आपके तीनों सुपुत्र श्री नरेन्द्रकुमारजी, सुरेन्द्रकुमारजी और पदमकुमारजी का संघ एवं युवक परिषद् की गतिविधियों में सहयोग प्राप्त होता है। संघ-सेवा, समाज-सेवा तथा स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य सत्कार में भी रांका परिवार सदैव अग्रणी रहा है।

अलीगढ़-रामपुरा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री दिनेशकुमारजी सुपुत्र स्व. श्री धन्नालालजी जैन (पाटोली वाले) का 8

नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण किये थे। आपने आजीवन रात्रिभोजन एवं जमींकन्द के त्याग के साथ अष्टमी तथा चतुर्दशी को हरी वनस्पति का भी त्याग किया। आप संघ-समाज की सेवा के साथ संघ की सभी गतिविधियों में हमेशा सक्रिय रहते थे।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी चौपड़ा का 07 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ,

कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त आपका जीवन संघ एवं समाज सेवा में समर्पित रहा। आपने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्यायप्रप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के घोड़ों के चौक चातुर्मास में समस्त परिवारजनों सहित धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ लिया। आप घोड़ों के चौक स्थानक में आकर नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। घोड़ों का चौक विराजित सन्त-सतीवृन्द की गोचरी-पानी की सेवा में सदैव अग्रणी रहे। आप उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सांसारिक भानजे थे।

सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मोतियाबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री नाथूलालजी जैन चौधरी का 08 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपने 4 वर्ष तक निरन्तर वर्षीतप करने के साथ समय-समय पर पचोले, तेले, उपवास, आयम्बिल, एकाशन, पौरसी तप की आराधना की। आपने 50 वर्ष पूर्व 4 खन्द के नियम लिये थे। आप प्रात: नियमित स्थानक पधारकर सामायिक स्वाध्याय की आराधना करती थी। धार्मिक कार्यो में उत्साहपूर्वक भाग लेती थीं। आपके सुपुत्र श्री त्रिलोकजी, सुरेन्द्रजी संघ-सेवा में अग्रणी हैं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई है। *-धनसुरेश जैन, सवाईमाधोपुर*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पाजी धर्मपत्नी स्व. श्री अन्नराजजी गाँधी का 11 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। विविधगुणों से युक्त आपका जीवन संघ एवं समाज सेवा में समर्पित रहा। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आपने अपने जीवन में अनेकानेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। संत- सतीवृन्द के आहार-विहार तथा सेवा-भक्ति में भी आप सदैव तत्पर रहती थी। आप श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की कोषाध्यक्ष रही। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी गाँधी परिवार सदैव अग्रणी रहता है।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सुमेरचन्द जी सुपुत्र स्व. श्री उम्मेदचन्द जी सिंघवी का 13 अक्टूबर, 2020 को 75 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका जीवन कर्तव्यपरायणता, कर्मठ सेवाभावना, वात्सल्य, विनम्रता, उदारता, दया आदि गुणों से ओतप्रोत था। आप श्रद्धानिष्ठ, सक्रिय एवं सरल प्रवृत्ति के श्रावकरत्न थे। आप धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहने के साथ-साथ सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहते थे। आप नियमित रूप से सामायिक, स्वाध्याय एवं धार्मिक पुस्तकों का वाचन करते थे। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। *-मनीष सिंघवी*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सरदारकँवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री धनराजजी टाटिया का 13 अक्टूबर, 2020 को 93 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। सरल स्वभावी एवं धार्मिक गुणों से ओत-प्रोत आपका जीवन सदैव सामायिक-स्वाध्याय की साधना, रात्रिभोजन-त्याग तथा पाँचों तिथियों को लीलोती के त्याग के साथ गुज़रा। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। आपके सुपुत्र श्री वर्धमानजी टाटिया सहित सम्पूर्ण परिवार सन्त-सतियों की सेवा तथा धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहता है। *-गणपत सुराणा, एडवोकेट*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विद्याजी धर्मसहायिका श्री सुमेरचन्दजी गुलेच्छा का 15 नवम्बर, 2020 को 51 वर्ष की अल्प आयु में देहावसान हो गया। आप वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल-जोधपुर की भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी गुलेच्छा की पुत्रवधू एवं रत्नसंघीया विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. की सांसारिक बहिन थी। आप स्वभाव से सरलमना, शान्त स्वभावी, मिलनसार श्राविकारत्न थी। सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप अपने पीछे संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं। *-धीरज डोसी*

जयपुर-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर में कार्यरत कार्यालय व्यवस्थापक श्री प्रदीपजी बंसल का 17 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। आप सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल में लगभग 15 वर्षों से समर्पित भाव से अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे थे। आप स्वभाव से सरल, शान्त प्रकृति के समर्पित व्यक्ति थे। आपकी सुमधुर वाणी से सभी प्रभावित थे।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रसन्नचन्दजी सिंघवी का 23 नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरल, सहज एवं सादगीपूर्ण था। प्रताप नगर क्षेत्र में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की सेवा भक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे। सिंघवी परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है।

बजरिया सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री चन्द्रप्रकाशजी जैन (करेला वाले) का 57 वर्ष की आयु में 8 सितम्बर, 2020 को देवलोकगमन हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक आराधना एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाले श्रावक थे। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नित्यप्रति गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन का लाभ लेते थे। आपके सुपुत्र श्री मयंकजी एवं रोहितजी जैन भी संघ की गतिविधियों से जुड़ हुए हैं।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक वीरभ्राता श्री राजकुमारजी सिंघवी का 30 नवम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आप रत्न संघ के समर्पित एवं सेवाभावी श्रावक रत्न थे। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आप जोधपुर में नियमित रूप से दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया करते थे। आप रत्न संघीय सन्त रत्न श्रद्धेय श्री कैलाश मुनिजी म.सा. के सांसारिक भ्राता थे। बारनी एवं जोधपुर दोनों स्थानों पर सिंघवी परिवार सन्त-सतीवृन्द की सेवा भक्ति एवं दर्शन हेतु पधारने वाले दर्शनार्थियों के आतिथ्य सत्कार में सदैव तत्पर रहता है। आपके भ्राता श्री महेन्द्रकुमारजी सिंघवी, श्री प्रवीणकुमारजी सिंघवी तथा सुपुत्र श्री राहुलजी, रोहितजी सिंघवी, संघ-सेवा में सक्रिय हैं। आपके भतीजे श्री लोकेशजी बकराशाला बारनी का काम एवं स्थानीय संघ का काम बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। आपका सम्पूर्ण परिवार रत्न संघ की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री सोहनराजजी रांका का 08 दिसम्बर, 2020 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। पावटा, शक्तिनगर चातुर्मास में तथा शेखेकाल में संत-सतीवृन्द की सेवा में पधारकर साधना-आराधना करने में आप अग्रणी थी। आपके सुपुत्र श्री लाड़ेशजी रांका संघ की जोधपुर शाखा के उपाध्यक्ष पद का दायित्व निर्वहन कर रहे हैं तथा श्री सिद्धकुमारजी एवं श्रेणिकुमारजी भी संघ-सेवा में सक्रिय हैं।

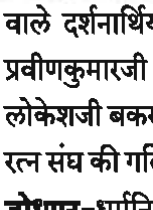

विजयनगर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कैलाशचन्दजी बुरड़ का 21 नवम्बर, 2020 को 67 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आप गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति रखते थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में सदैव तत्पर रहते थे एवं समय-समय पर सपरिवार गुरु दर्शन-वन्दन का लाभ लेते रहते थे। आप अपने पीछे धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती सुशीलादेवीजी बुरड़, दो सुपुत्र एवं एक सुपुत्री सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नन्दलालजी हीरावत सुपुत्र स्व. श्री नवरतनमलजी हीरावत का 08 नवम्बर, 2020 को 63 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपकी गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आप धर्मपरायण, सरल, करुणाशील व्यक्तित्व के धनी थे। आप अपने पीछे श्रद्धानिष्ठ धर्मसहायिका श्रीमती मंजुजी हीरावत सहित धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गये हैं।

भण्डारा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती चन्द्रमालाजी गाँधी का 06 दिसम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति समर्पित आपने अपने जीवन में विविध त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप स्व-कल्याण हेतु प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय की आराधना में सजग थी।

जयपुर-धर्मनिष्ठ वरिष्ठ सुश्रावक श्री सौभाग्यमलजी जैन (समिधि वाले) का 14 नवम्बर, 2020 को 84 वर्ष की उम्र में स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन अत्यन्त सरल, उदारमय था। आपश्री के सामायिक, उपवास, एकाशन, रात्रि भोजन, जमींकन्द आदि के त्याग थे। आपने शीलव्रत भी ग्रहण कर रखा था।

धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री महावीर प्रसादजी सुपुत्र स्व. श्री सौभाग्यमलजी जैन (समिधि वाले) का 30 नवम्बर, 2020 को 57 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपने अपना पूरा जीवन सरलता के साथ जिया। आपकी आचार्यश्री पर अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। आप प्रतिदिन सामायिक, नवकार जाप, शीलव्रत आदि कई नियमों का पालन करते थे। आप अपने पीछे भरापूरा धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गये हैं। *-त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर*

फत्तेपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री माँगीलालजी रांका का 75 वर्ष की आयु में स्वर्गगमन हो गया। आप सरल, सहज एवं उदारहृदय श्रावक थे। आपकी गुरु हस्ती-हीरा-मान प्रभृति सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं। आपके सुपुत्र श्री विजयकुमार जी रांका स्वाध्यायी के रूप में अपनी महती सेवाएँ दे रहे हैं।

चौथ का बरवाड़ा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री गिर्राजप्रसादजी सुपुत्र श्री चौथमलजी जैन (चौधरी) का 31 अगस्त, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप सहज, सरलस्वभावी एवं समर्पित श्रावक थे। आप प्रतिदिन स्थानक में पधार कर सामायिक-स्वाध्याय की साधना करते थे। आपके सुपुत्र श्री महेन्द्रजी, कुशलजी एवं नवरत्नजी जैन भी संघ की गतिविधियों से जुड़े हुए हैं।

देई (बूंदी)-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पदमचन्दजी जैन का 29 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर सहित समस्त सन्त-सतियों के प्रति श्रद्धाभाव रखते थे। आप नियमित स्थानक पधारकर सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। देई पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे।

कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती चमेलीजी जैन धर्मसहायिका श्री प्रहलाद जी जैन (गलवानिया वाले) का 11 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गगमन हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करती थी। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा में भी आप सदैव तत्पर रहती थीं।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रमेशचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री सुमेरसिंहजी मेहता का 03 नवम्बर, 2020 को 62 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आपका प्रामाणिक जीवन सहजता, सरलता, उदारता, मधुरता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप अपने पीछे धर्मसहायिका श्रीमती मधुजी, सुपुत्र श्री नीरजजी, सुपुत्री श्रीमती रुचिजी भण्डारी सहित भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं। आप महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. के सांसारिक भतीजे थे। *-चन्द्रप्रकाश मेहता, जोधपुर*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती प्रसन्नकँवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री सरदारसिंहजी पुत्रवधू स्व. गणपतसिंहजी

मेहता का 9 नवम्बर, 2020 को 75 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप कर्त्तव्य परायणता, उदारता, आत्मीयता, विनम्रता, सेवा-भावना आदि सद्गुणों से सम्पन्न कुशल गृहिणी थी। आप अपने पीछे दो सुपुत्र, सुपुत्री, सुपौत्र, सुपौत्रियों सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गईं। आप महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. की सांसारिक भाभीजी थीं। *-चन्द्रप्रकाश मेहता, जोधपुर*

बारां-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मुकेशजी जैन सुपुत्र श्री हेमचन्दजी जैन एवं सुपौत्र श्री हीरालालजी जैन (मोटर वाले),

सवाईमाधोपुर का 16 अगस्त, 2020 को 40 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप संस्कारी जीवन के धनी होने के साथ विनम्र, क्षमा, मिलनसारिता, उत्साह आदि अनेक गुणों से सम्पन्न थे। आपका परिवार सन्त-सतियों एवं धर्माराधना में तत्पर रहता है। *-डॉ. धर्मचन्द जैन*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सोहनराजजी सुपुत्र स्व. श्री मोहनलालजी खिंवसरा का 19 अक्टूबर, 2020 को

पच्चक्खान एवं संथारे सहित देवलोकगमन हो गया। आपके जीवन में जिनवाणी का पूर्ण प्रभाव देखने को मिलता था। विगत तीन-चार वर्षों से आपके एकान्तर की तपस्या निरन्तर गतिमान थी एवं पर्व तिथि में विशेष बेला-तेले की तपस्या चलती रहती थी। नियमित पाँच से सात सामायिक, दोनों काल प्रतिक्रमण, रात्रि संवर विगत काफी वर्षों से निर्बाध गतिमान था। आपके कच्चा पानी, कच्ची लिलोती, जमींकन्द, बड़ी स्नान आदि का सम्पूर्ण त्याग था, साथ ही साधु-साध्वीवृन्द के प्रति अटूट श्रद्धा-भाव देखने को मिला था। आपका जीवन सरलता एवं सादगी से ओतप्रोत था। परिवार के प्रत्येक सदस्य को धर्म-आराधना करने की प्रेरणा करते थे। *-विजयराज खिंवसरा, जोधपुर*

जयपुर-धर्म परायणा, सन्तसेवी एवं तपस्विनी श्रीमती ऋषभाजी कर्णावट का 09 सितम्बर, 2020 को 90 वर्ष की

आयु में स्वर्गगमन हो गया। आपने देह दान के पूर्व संकल्प के साथ देह त्याग दिया। आपकी भावना के अनुरूप उन की नश्वर देह जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी को मानव कल्याणार्थ शोध कार्य हेतु सुपुर्द कर दिया गया। आपके सुपुत्र श्री दिलीपजी कर्णावट, दामाद द्वय श्री कैलाश भंसाली पूर्व विधायक एवं श्री आर. के. जैन, पूर्व संभागीय आयुक्त, जोधपुर तथा परिजन ने उन्हें अन्तिम विदाई दी। आप अन्तिम समय तक जिनवाणी का उत्सुकता से इंतज़ार कर नियमित अध्ययन करती रहीं। अपने जीवन काल में अठाई, मासखमण, वर्षीतप जैसी अनेक तपस्याओं का लाभ लिया। श्री वर्धमान स्थानक वासी जैन श्रावक स्थानक, ज्योति नगर, जयपुर के निर्माण में भूमि, भवन आदि के लिए सतत सहयोग किया एवं उनके सहयोग से वहाँ वर्तमान में उनके नाम से एक फिजियोथैरेपी केन्द्र का सञ्चालन किया जा रहा है। समाज ने उन्हें समाज गौरव सम्मान से सुशोभित किया। **उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को जिनवाणी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि**

आगामी विशेष तिथियाँ

पौष शुक्ला 7, बुधवार	20.01.2021	उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का प्रथम स्मृति दिवस
पौष शुक्ला 14, बधुवार	27.01.2021	आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 111वाँ जन्मदिवस, चतुर्दशी, पक्खी
माघ कृष्णा 4, सोमवार	01.02.2021	उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 87वाँ जन्मदिवस
माघ शुक्ला 2, शनिवार	13.02.2021	आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 101वाँ दीक्षा दिवस

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 87
ISSN 2249-2011

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल सत्साहित्य सदस्यता (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

811 श्री योगेश कुमार जी जैन, दिल्ली
812 श्री ए. एस. मेहता सा, दिल्ली
813 श्री धीरज जी चौरडिया, चेन्नई
814 श्री सुनिलजी बडेर, अहमदाबाद

21000/- जिनवाणी स्तम्भ सदस्यता (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

211 श्री एस. ज्ञानचन्दजी जैन, श्री कालाहस्ती

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 16167 से 16186 तक कुल 20 सदस्य बने

'जैन जीवनशैली' विशेषाङ्क हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री कैलाशमलजी हेमन्तजी दुगड़, चेन्नई
5100/- श्री किशनजी राठी, मुम्बई
5100/- श्री महावीरप्रसादजी, गौतमचन्दजी, संदीपकुमारजी, श्रेयांसजी, आरवजी जैन (श्यामपुरा वाले), कोटा
5100/- श्री नरेन्द्रजी लूणावत, मुम्बई
5000/- श्री भागचन्दजी कोचेटा, मदनगंज-किशनगढ़
5000/- श्री राजेन्द्र कुमार जी डांगी, मदनगंज-किशनगढ़

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका प्रकाशन योजना हेतु साभार प्राप्त

100000/- श्री स्वरूपचन्दजी बाफणा, सूरत
100000/- श्री सुमतिचन्दजी कोठारी, जयपुर
100000/- श्री अंजयजी जैन, शिवाकाशी
100000/- श्री पवनलालजी, मोतीलालजी सेठिया, होलनांथा
100000/- श्रीमती अलकाजी, विजयजी नाहर, इन्दौर
100000/- श्री चंचलराजजी मेहता, अहमदाबाद
100000/- श्री जिनेशकुमारजी, रोहितराजजी जैन (ढहरा वाले), हिण्डौनसिटी-जयपुर
100000/- श्री अरुणजी, सुनीताजी मेहता छत्तरछाया फाउण्डेशन, जोधपुर
100000/- श्री सागरजी हुकमचन्दजी नागसेठिया, शिरपुर
100000/- मैं. नयनतारा एण्ड संस, जलगाँव
100000/- श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर
100000/- श्री उम्मेदराजजी, एवन्तकुमारजी, राजेशकुमारजी डूंगरवाल (थाँवला वाले), जयपुर
100000/- श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-रामपुरा, सवाईमाधोपुर, कोटा एवं जयपुर

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11111/- श्री रविन्द्रकुमारजी आनन्दकुमारजी जैन (चकेरी वाले) सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी श्री जगदीशजी जैन का 23 अक्टूबर को देवलोकगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
11000/- श्रीमती विमलप्रभाजी, राजेशकुमारजी, संजय कुमारजी कोठारी, जयपुर, श्री लक्ष्मीचन्दजी पुत्र स्व. श्री मानमलजी कोठारी का 11 नवम्बर को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
11000/- श्रीमती अकलकँवरजी मुणोत, जयपुर, धर्मसहायक श्री हंसराजजी मुणोत (सांसारिक सुपुत्र श्री मगनमुनिजी म.सा.) की पुण्य स्मृति में।
11000/- श्रीमती पुष्पाजी लोढा, जोधपुर, सुपौत्री सलोनी के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।
11000/- श्री महेन्द्र कुमारजी, शुभमजी जैन (श्यामपुरा-सवाईमाधोपुर वाले), मीरा रोड़-मुम्बई, सुश्राविका श्रीमती शीलादेवी जी जैन धर्मसहायिका श्री महेन्द्र कुमार जी जैन का 21 नवम्बर, 2020 को देवलोकगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
11000/- श्री मनमोहनचन्दजी, प्रमोदजी बाफना, कानपुर, श्रीमती कंचनदेवीजी धर्मसहायिका श्री मनमोहनचन्दजी बाफना का 26 दिसम्बर को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।
5100/- श्रीमती मनोहरदेवीजी, श्री हेमन्तकुमारजी जैन, महेन्द्र कुमारजी पारख, पूज्य पिताजी श्री

केवलचन्दजी जैन का 11 नवम्बर को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

5000/- श्री निर्मलकुमारजी विल्लौर की ओर से सप्रेम।

3100/- श्री राजेशचन्दजी, विजय कुमारजी, महेन्द्र कुमारजी, देवराजजी, सुनीलजी, प्रवीणजी, मनीषजी लुणावत एवं परिवारजन, आचीणा-इन्दौर, श्री तिलोकचन्दजी लुणावत का 7 दिसम्बर को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री जसराजजी, नरेन्द्रजी, महेन्द्रजी, राजेन्द्रजी सुराणा, जोधपुर, श्रावकरत्न श्री गोपालराजजी सुपुत्र श्रीमती केशरकँवरजी-स्व. श्री माणकराजजी सुराणा के स्वर्गगमन पर उनकी पावन स्मृति में।

2100/- श्रीमती मदनकँवरजी हुक्मीचन्दजी डोसी, बैंगलौर, युवापुत्र रत्न स्व. श्री विनोद कुमारजी डोसी की 16 नवम्बर, 2020 को 9वीं पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री अरुणकुमारजी, आदित्यजी, भिवानजी सुराणा, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री मक्तुरमलजी सुराणा की 10 अक्टूबर, 2020 को जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में उनकी पावन स्मृति में।

2100/- श्री गौतमराजजी, श्री राहुलजी भंसाली, जोधपुर, श्रीमती रेणुजी भंसाली का 22 सितम्बर को स्वर्गारोहण हो जाने पर भावाञ्जलि स्वरूप।

2100/- श्री गणपतराजजी, लखपतराजजी, सुरेशजी, अमितजी चौपड़ा, जोधपुर, श्रावकरत्न श्री प्रकाशचन्दजी सुपुत्र श्री सोनराजजी चौपड़ा का 08 अक्टूबर को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री सुरेन्द्रजी लूंकड, कोटा, श्री गजेन्द्रजी पुत्र स्व. श्री बंशीलालजी लूंकड का 02 दिसम्बर को स्वर्गगमन करने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री अरविन्दकुमारजी, अजीत कुमारजी मोदी, मदनगंज-किशनगढ़, श्रीमती जतनदेवीजी पत्नी स्व. श्री रूपचन्दजी मोदी की पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री जितेन्द्रकुमारजी, ज्ञानेन्द्रकुमारजी बाघमार (कोसाणा वाले), चेन्नई, सुश्री जयश्री सुपुत्री श्री ज्ञानेन्द्रजी, सुपौत्री श्री उत्तमचन्दजी बाघमार के 9 उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती सुनयनाजी मेहता एवं मेहता परिवार, जोधपुर, स्व. श्री महावीरचन्दजी मेहता की पुण्यतिथि पर स्मरणाञ्जलि स्वरूप।

2100/- श्री दिनेश कुमार जी जैन, जयपुर, सुपुत्र चि. पुलकित सुपौत्र श्री हरकचन्दजी जैन (बीलोता वाले) का शुभविवाह 07 दिसम्बर, 2020 को सौं कां. शिवांगी सुपुत्री श्री अशोक कुमारजी, सुपौत्री श्री रामकल्याणजी जैन (कुण्डेरा वाले) जयपुर के संग सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2100/- सुरेन्द्र कुमारजी, भारतीजी जैन, महारानी फार्म-जयपुर, सुपुत्र श्री तन्मयजी जैन का आई.आई.टी. करने के पश्चात् Korn Ferry Gruop USA द्वारा मुम्बई में Business Analist के पद पर नियुक्त होने की खुशी में।

2100/- श्री राजुलालजी, अनोखचन्दजी जैन (श्यामपुरा वाले), जलगाँव, चि. सौरभ का शुभविवाह सौ.कां. स्वातिजी जैन के संग 7 दिसम्बर, 2020 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2100/- श्री सोहनलालजी जैन, झालावाड़, चि. हिमांशुजी जैन सुपौत्र श्रीमती दाखाबाईजी सुपुत्र श्रीमती उर्मिला-सोहनलालजी जैन (अलीगढ़-रामपुरा वाले) संग पूजाजी सुपुत्री श्रीमती गीतादेवीजी-राजनीरजी जैन सवाईमाधोपुर का शुभविवाह 30 नवम्बर को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2001/- श्री महेन्द्रजी गांग, सूरत, श्री अनुपमजी एवं श्रीमती प्रियदर्शिनीजी पत्नी श्री अभिषेकजी गांग के जन्म दिवस पर एवं श्री महेन्द्रजी एवं श्रीमती ललिताजी गांग (जोधपुर) सूरत के विवाह की सालगिरह पर।

2000/- श्रीमती आयचुकीदेवी धर्मपत्नी श्री माणकचन्दजी, श्री प्रकाशचन्दजी लोढ़ा, नाडसर, सपरिवार गुरु चरण के सान्निध्य में साधना-आराधना का सौभाग्य मिलने की खुशी में।

2000/- श्रीमती सुशीलाजी धर्मपत्नी श्री प्रेमकुमारजी, श्री लोकेशजी सिंघवी, बाारणीखुर्द, सपरिवार गुरु चरण के सान्निध्य में साधना-आराधना का सौभाग्य मिलने की खुशी में।

2000/- श्री कमलेशकुमारजी जैन, मुम्बई, अपनी पूज्या माताजी श्रीमती कान्तिदेवीजी जैन का 10 सितम्बर को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में।

2000/- श्री आशीष कुमार जी जैन, मुम्बई, सुश्राविका श्रीमती कान्तिदेवीजी जैन का 10 सितम्बर को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में।

1121/- श्री गणपतमलजी, प्रकाशमलजी, प्रतीकजी सुराणा, जोधपुर, पिताश्री स्व. श्री उम्मेदमलजी

सुपुत्र स्व. श्रीमती सुकनकँवरजी-स्व. श्री सुजानमलजी सुराणा की पुण्य स्मृति में।

1121/- श्रीमती मंजुश्रीजी, आशाजी, शिखाजी एवं डॉ. निकिताजी, आस्थाजी, अल्फाजी, आकांक्षाजी सुराणा, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर, स्व. श्रीमती लाडकँवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री उम्मेदमलजी सुराणा की पुण्य स्मृति में।

1111/- श्री महेन्द्रजी गांग, सूरत की ओर से सप्रेम।

1111/- श्री जगदीशजी, हनुमानजी, रविन्द्रजी, आनन्दजी जैन (चकेरी वाले), सवाईमाधोपुर, संस्कार प्रदाता कृपालु स्व. श्री गोपीलालजी मोदी (मुनीमजी) की 40वीं एवं स्व. श्रीमती दाखाबाईजी जैन की 25वीं पुण्यस्मृति पर।

1101/- श्री रामकरणजी, मनीष कुमारजी जैन (बाबई वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. विपिनजी (निक्की) संग सौ.कां. किरणजी का शुभविवाह 25 नवम्बर को सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती नीतिकाजी जैन, मुम्बई, सुश्राविका श्रीमती कान्तिदेवीजी जैन का 10 सितम्बर को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री विनोदकुमारजी, नवकारजी जैन, अलीगढ-रामपुरा, श्री दिनेशकुमारजी सुपुत्र स्व. श्री धन्नालालजी जैन (पाटोली वाले) का 7 नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री प्रहलादजी जैन (गलवानिया वाले) कोटा, धर्मपत्नी श्रीमती चमेली देवीजी जैन का 11 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री महेन्द्रकुमारजी, कुशलचन्दजी, नवरतनकुमार जी जैन, चौथ का बरवाडा, पूज्य पिताश्री गिर्राज जी पुत्र श्री चौथमलजी जैन (चौधरी) 31 अगस्त को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती सुनीताजी धर्मसहायिका स्व. श्री उपेन्द्रजी, श्री राकेशजी गाँधी, जोधपुर, श्रीमती पुष्पा जी धर्मसहायिका स्व. श्री अन्नराजजी गाँधी का 11 अक्टूबर को स्वर्गवास होने पर उनकी स्मृति में।

1100/- श्री जौहरीमलजी, जसवन्तराजजी, गजराजजी छाजेड़, जोधपुर, कँवरसाहब श्री प्रकाशचन्दजी सुपुत्र श्री सोनराजजी चौपड़ा का 08 अक्टूबर को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री त्रिलोकचन्दजी, सुरेन्द्रकुमारजी जैन, सवाई-माधोपुर, पूज्य माताजी श्रीमती मोतियाबाईजी जैन का 8 अक्टूबर को देवलोक गमन होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री बाबूलालजी, पीयूषजी जैन, जयपुर, सुपौत्ररत्न की प्राप्ति के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री बाबूलालजी, बुद्धिप्रकाशजी जैन (मोहम्मदपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री धनरूपचन्दजी, अमितजी मेहता पीपाड-बैंगलौर, बैंगलौर चातुर्मास प्राप्त होने की खुशी में।

1100/- श्री गणपतजी जैन (पोरवाल) सवाईमाधोपुर की ओर से सप्रेम।

1100/- श्री बाबूलालजी, पंकजजी, अतुलजी जैन (धनौली वाले) सवाईमाधोपुर, सुश्रावक श्री बाबूलालजी, श्री पंकजजी, श्रीमती निर्मलाजी, तीनों के तेले की तपाराधना सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती हेमलताजी, माणकजी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, सुश्रावक श्री चन्द्रप्रकाशजी जैन (करेला वाले) का 57 वर्ष की आयु में निधन होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री विजय चौपड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर, ट्रस्टी श्री विजयजी चौपड़ा के कोरोना पॉजिटिव होने के उपरान्त स्वस्थ होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री घनश्यामजी, राकेशजी, मुकेशजी, अंकित जैन पोरवाल, जयपुर, पूज्य पिताजी श्री रामप्रहलादजी जैन की 13वीं पुण्य स्मृति और माताजी श्रीमती रामप्यारीबाई जी जैन की 10वीं पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री सतीशकुमारजी, श्रीमती उर्मिलाजी जैन (पहरसर वाले), गाजियाबाद, अपने सुपुत्र मयंक जैन का 27 अक्टूबर को निधन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती मधुजी हीरावत, जयपुर, धर्मसहायक श्री नन्दलालजी हीरावत का 8 नवम्बर को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री देवनारायणजी, राकेशजी, मनोजजी, सतीशजी एवं श्री अनिलजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्री रतनलालजी जैन (कुण्डेरा वाले) का 11 नवम्बर को देवलोक गमन होन पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री शैलेन्द्रजी जैन, कोटा, सुपुत्री सौ. कां. ईशिता

संग सौरभ जैन का विवाह 25 नवम्बर को सानन्द सम्पन्न होने पर सप्रेम।

1100/- श्री ओमप्रकाशजी जैन, कोटा, श्री नरोत्तमजी पुत्र स्व. श्री देवीलालजी जैन का 5 दिसम्बर, 2020 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री हम्मीरमलजी सुराणा, बीकानेर, धर्मसहायिका श्रीमती निर्मलाजी सुराणा का 24 नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती हर्षिताजी डोसी, ब्यावर की ओर से सप्रेम।

1100/- श्री प्रेमचन्दजी, प्रकाशचन्दजी भण्डारी, पीपाड़सिटी की ओर से सप्रेम।

1100/- श्री मोहनलालजी, सोहनलाल जी जैन, रामगंजमण्डी-कोटा, चि. निखिल सुपुत्र श्री मोहनलालजी जैन का शुभविवाह सौ.का. सोनाली सुपुत्री श्री गोविन्द सहायजी जैन (चकेरी वाले), सवाई माधोपुर के साथ 25 नवम्बर, 2020 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री श्यामसुन्दरजी, राजेन्द्रप्रसादजी, प्रेमचन्दजी, गोविन्दसहायजी, एडवर्डजी जैन (चकेरी वाले), सवाईमाधोपुर, सौ.का. सोनालीजी का शुभविवाह 25 नवम्बर, 2020 को चि. निखिल सुपुत्र श्री मोहनलाल जी जैन रामगंजमण्डी-कोटा के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री धनसुरेशजी, आशीषजी, अमितजी, सुमितजी जैन (श्यामपुरा वाले), महावीर नगर-सवाई माधोपुर, नवनिर्मित आवास पर नवकार मन्त्र जाप गृह प्रवेश 10 दिसम्बर, 2020 की खुशी में।

1100/- श्रीमती मालाजी, श्री प्रशान्तजी-श्रीमती प्रियाजी, सुश्री प्रिशाजी, प्रितीशाजी मेहता, जोधपुर, स्मृतिशेष श्रद्धेय डॉ. प्रमोदजी मेहता की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री चंचलमलजी, राजेशजी, राहुलजी गांग, जोधपुर, श्रीमती केशरजी धर्मसहायिका श्री चंचलमलजी गांग की 24 जनवरी, 2021 को पंचम पुण्यतिथि पर स्मरणाञ्जलि स्वरूप।

1100/- श्री महावीर प्रसादजी, दिनेशजी, पारसजी, पंकजजी, मुकेशजी जैन (कुण्डेरा वाले), इन्दौर, पूज्य मातुश्री स्व. श्रीमती शान्तिदेवीजी जैन की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री हरकचन्दजी, पारसचन्दजी जैन (श्यामपुरा वाले), आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर, चि. सुमितजी सुपुत्र श्री पारसचन्दजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. वैशाली (रुचि) जी सुपुत्री श्री बाबूलालजी जैन पांवडेरा के संग 25 नवम्बर, 2020 को सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री राजेन्द्र प्रसादजी, आकाश कुमारजी जैन (मुई वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. हेमन्तकुमार जी जैन का शुभविवाह सौ.कां. ज्योतिकाजी के संग 7 दिसम्बर को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री नरेश कुमारजी जैन (कुण्डेरा वाले), त्रिवेणी नगर-जयपुर, अपने सुपुत्र चि. सौरभ के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री ताराचन्दजी, गगन कुमारजी जैन, हिण्डौनीसिटी, पूज्य मातुश्री श्रीमती अंगूरीदेवीजी जैन का 29 नवम्बर को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

11000/- श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, जोधपुर, सुपौत्री सलोनी जी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

3100/- श्रीमती सोहनीदेवीजी समदडिया एवं श्री महावीरचन्दजी, प्रियदर्शनजी खाबिया, चेन्नई, साहित्य प्रकाशन हेतु।

गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु ट्रस्टी

1. श्री प्रकाश कुमारजी, श्रेयांस कुमारजी, निखिल कुमारजी मेहता (भोपालगढ़ वाले), उमरगाँव रोड़
2. डॉ. वागीशजी, चन्दूलालजी कटारिया, नागपुर
3. उर्वशीजी मेहता सालेचा, मुम्बई-हाँगकाँग
4. श्रीमती देवबालाजी राजेन्द्रजी भण्डारी (पीपाड़सिटी वाले), मुम्बई
5. श्री सुमेरचन्दजी वैभवजी सोनी जैन, आगरा
6. श्री विनयचन्दजी, विनीतजी डागा, जयपुर
7. डॉ. सुषमाजी सिंघवी, जयपुर
8. श्री सिद्धार्थजी बाफना, जलगाँव
9. श्रीमती विभूतिजी बाफना, जलगाँव
10. सौ. शशिकलालजी बाफना, जलगाँव
11. श्री राहुल कुमारजी बाफना, जलगाँव
12. सौ. निष्ठाजी बाफना, जलगाँव
13. श्री दिनेशमलजी, क्षेमेन्द्रजी खिंवसरा, जोधपुर

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 91
ISSN 2249-2011

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

अहंकारी हाथी

डॉ. मंजुला बम्ब

एक दिन एक हाथी जलाशय में पानी पीने गया। वहाँ एक मगरमच्छ ने उसका पैर पकड़ लिया। उसने अपना पैर छुड़ाने के लिए शरीर का पूरा बल लगा दिया, मगर वह पैर नहीं छुड़ा सका। मगरमच्छ हाथी को गहरे पानी तक खींचकर ले गया। दोनों में बहुत खींचातनी हुई। लेकिन हाथी के पूरी ताकत लगाने के बाद भी वह पैर नहीं छुड़ा सका। निराश हाथी भगवान को पुकारने लगा। परेशानी और दुःख के समय सभी भगवान को ही याद करते हैं। 'भगवन्! मुझे बचाओ! मगरमच्छ मुझे ले जा रहा है मुझे मार देगा।'' लेकिन भगवान को बार-बार पुकारने के बाद भी भगवान ने उसकी पुकार नहीं सुनी। अपना धैर्य खोकर हाथी सोचने लगा कि 'मालूम होता है कि भगवान पर भरोसा करके मैं धोखे में रहा। क्योंकि मैं बराबर पुकारता चला जा रहा हूँ, कि यह मगरमच्छ मुझे खींचे जा रहा है मुझे मार देगा। मगर भगवान मेरी पुकार सुन ही नहीं रहे।'

हाथी की भक्ति दिखावटी थी। उसकी नींव मज़बूत नहीं थी। आखिर हारकर हाथी ने सोचा कि अरे! मैं तो केवल जिह्वा से भगवान को रट रहा हूँ, पर मेरे हृदय में कहाँ स्थान है भगवान का? मेरे अन्तःकरण में भगवान होते तो मैं अपने शरीर बल का अहंकार करके मगरमच्छ के साथ द्वन्द्व युद्ध क्यों करता? मुझे परमात्मबल पर इतना भरोसा नहीं है जितना अपने शरीर बल पर है। अगर मैं अपनी समस्त शक्तियों को भगवान के चरणों में समर्पित कर देता तो अवश्य ही मुझे परमात्मबल प्राप्त होता और मैं इस संकट से बच जाता।

वह मन ही मन भगवान को लक्ष्य करके विनयपूर्वक कहने लगा-प्रभो! अब तक मैं भ्रम में था। मैं आपकी दिखावटी भक्ति करता था। मुझे अपने शरीर बल का अहंकार था। मैं आपके बल को भूला बैठा था। भगवन्! मेरे में कुछ भी बल नहीं है, यह शरीर भी मेरा नहीं है। शरीर चाहे चला जाए, परन्तु आप न जाने पाएँ, आप मेरे हृदय में रहे, मैं शरीर देकर भी आपको पाना चाहता हूँ।

इस प्रकार विचार करके हाथी ने भगवान के नाम का उच्चारण किया ही था कि हाथी में एक विशेष प्रकार का बल प्रकट हुआ और उस बल के प्रभाव से हाथी अनायास ही मगरमच्छ से छूट गया। इस विपत्ति से छूटकर वह आनन्दमग्न हो गया। हाथी ने जब अपने शरीर बल का मोह और अहंकार छोड़कर भगवद् बल का सहारा लिया तभी वह बन्धन मुक्त हो गया।

इसी प्रकार व्यक्ति जब शरीर बल का मोह-ममत्व और अहंकार छोड़कर एकमात्र श्रद्धा से, भक्ति से आत्मभाव में रमण करेगा तभी आत्मबल या परमात्मबल आयेगा। थोड़ा-सा भी परमात्मबल आ जाता है तो कितना चमत्कार हो जाता है। पूर्ण

परमात्मबल प्राप्त हो जाए तब तो कहना ही क्या? परमात्मबल का मूल स्रोत धर्मबल ही है। धर्मबल के बिना परमात्मबल या शुद्ध आत्मबल तक पहुँचा ही नहीं जा सकता।

धर्म की शक्ति ही जीवनशक्ति है। धर्म उस आध्यात्मिक अग्नि की ज्वाला को जो प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर जलती है, प्रज्वलित करने में सहायता करता है। अहिंसा, सत्य आदि शुद्धधर्म आत्मा से ही प्रकट होता है। यही कारण है कि मुनि गजसुकुमाल, स्कन्दक आदि को जब यातनाएँ दी गई तो उनकी आत्मा में अपूर्व शक्ति आ गई, जिसके कारण वे समभाव से परीषहों और उपसर्गों को सहन कर सके।

शक्ति सदैव अन्तर से पैदा होती है। शक्ति अपने अन्दर ही सोई हुई है, ज़रूरत है उसे जागृत करने की। दियासलाई में आग की सत्ता पड़ी हुई है, जरूरत होने पर व्यक्ति को रगड़कर आग प्रकट करनी पड़ती है, वैसे ही सभी प्राणियों की अन्तरात्मा में असीम बल है, पर वह सुषुप्त है, सोया हुआ है, उसे कठोर क्रिया के द्वारा प्रकट करना होता है।

जिस व्यक्ति में धर्मबल होता है, उसका शारीरिक बल अधिक न होते हुए भी आत्मबल बढ़ जाता है। उस आत्मबल के आगे शरीरबल या दानवबल के धनी सभी प्राणी पराजित हो जाते हैं, झुक जाते हैं। हाथी ने अटूट श्रद्धा और विश्वास के साथ समर्पित भाव से भगवान की भक्ति की, उनका स्मरण किया तो एक अपूर्व शक्ति उसकी आत्मा में प्रकट हुई तब वह मगरमच्छ के बन्धन से मुक्त हो सका, अपनी जान बचा पाया। धर्मबल की महिमा सर्वोपरि है। सभी बलों में धर्मबल श्रेष्ठ है।

-567, गली नं. 6, वाल्मीकि मार्ग, तिलक नगर, जयपुर-302004 (राजस्थान)

व्यवहार सम्यक्त्व के 67 बोल

ग्यारहवें बोले भावना छह

विविध विचारों से समकित में दृढ़ होना 'भावना' है।

1. समकित, धर्म रूपी वृक्ष का मूल है।
2. समकित, धर्म रूपी नगर का दरवाजा है।
3. समकित, धर्म रूपी प्रासाद की नींव है।
4. समकित, धर्म रूपी आभूषणों की पेटी है।
5. समकित, धर्म रूपी वस्तुओं की दुकान है।
6. समकित, धर्म रूपी भोजन का थाल है।

बारहवें बोले स्थानक छह

धर्म की उत्पत्ति एवं धर्म में स्थिर होने में सहायक होने वाले स्थान को 'स्थानक' कहते हैं।

1. जीव चेतना लक्षण युक्त है।
2. जीव शाश्वत अर्थात् उत्पत्ति और विनाश रहित है।
3. जीव शुभाशुभ कर्मों का कर्त्ता है।
4. जीव किये हुये कर्मों (सुख-दुःख) का स्वयं भोक्ता है।
5. भव्य जीव कर्मों को क्षय करके मोक्ष में जाता है।
6. सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप मोक्ष के उपाय हैं।

The Power of Subconscious Mind

Sh. Shrikant Gupta

There was a man who worked for the railroad. One day as he went into the freezer compartment to do his routine work, the door accidentally closed and he found himself trapped in the compartment.

He shouted for help but no one heard him since it was past midnight. he tried to break down the door but he could not. As he lay in the freezer compartment, he began to feel colder, and colder. Then he began to feel weaker, and weaker, and he wrote on the wall of the compartment, "I am feeling colder, and colder; and I am getting weaker, and weaker. I am dying and these may be my last words."

In the morning when the other workers opened up the compartment they found him dead. The sad twist to the above story is that the freezing apparatus in the compartment had broken down a few days ago.

The poor worker did not know about the damaged freezing apparatus and in his mind the freezing apparatus was working perfectly. He felt cold, got weaker and literally willed himself to die.

Message :-Our sub-conscious mind can be cheated. The sub-conscious mind can only accept and act on information passed to it by the conscious mind. It has no capacity to reject or decline any instructions or information passed to it by the conscious mind. In the case of the poor worker, he consciously thought that he was getting colder, weaker and dying and the sub-conscious mind accepted the above instructions and affected his physical body. That was how he willed himself to die.

वह अच्छा बच्चा कहलाता

संकलन : मौलिक जैन

जो न किसी का हृदय दुःखाता, वह अच्छा बच्चा कहलाता।
जो झगड़ों में नहीं उलझता, झूठ बोलना पाप समझता।
अपने मन में प्रभु से डरता, नहीं काम मनमाना करता।
सुख से विद्या पढ़ने जाता, वह अच्छा बच्चा कहलाता।।
दया दिखाने में सुख माने, माता-पिता की आज्ञा माने।
नहीं करेगा पाप कभी वह, क्या देगा सन्ताप कभी वह।
वीर प्रभु के जो गुण गाता, वह अच्छा बच्चा कहलाता।।
जो अपना काम हाथ से करता, तन-मन को साफ है रखता।
जैसा कहता वैसा करता, छल-कपट मन में नहीं रखता।
गुरुजनों का आदर करता, वह अच्छा बच्चा कहलाता।।

-बी 174, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

हर किताब कुछ कहती है

कविता जैन

हर किताब कुछ कहती है।
कभी अच्छाई तो कभी बुराई बताती है।
हर किताब कुछ कहती है।
जब भी देखते हैं, किताबों की ओर,
वे कह उठती हैं मुझे उठालो,
मैं तुम्हारे हृदय की किताब खोलकर
तुम्हें अन्तर में झाँकने का मौका दूँगी।
किताबें खुद प्रतिबिम्ब हैं।
मानो वे पढ़ने वाले की कहानी कहती हैं।
हर किताब कुछ कहती है।
मोबाइल और इण्टरनेट की दुनिया में,
किताबें एक कोने में चली गईं।
उन्हें कोई हाथ नहीं लगाता,
अकेले में उनकी आत्मा रोती है।
लेकिन जब कोई कभी उन्हें उठाता है तो
वे पूछती हैं-हे निर्जन स्थान पर आने वाले पथिक!
मैं धन्य हो गई या तुम धन्य हो गये?
हर किताब कुछ कहती है।
किताबें हमारी सच्ची दोस्त हैं, क्योंकि
वे जीवन का आनन्द लेना सिखाती हैं।
उनमें जो ज्ञान छिपा है उसका रस पियो, क्योंकि
वे संस्कृति का सर्वोत्तम उपहार हैं जो मानव बुद्धि
की ऊँचाई को बताती हैं। हर किताब कुछ कहती है।
किताबें महान प्रतिभाओं द्वारा छोड़ी गई सम्पत्ति हैं।
अजन्मों के लिए उपहार हैं,
मानव धर्म की मौन अभिव्यक्ति हैं।
समय के महासागर में प्रकाशदीप हैं
जो तट पर जाने का रास्ता बताती हैं।
हर किताब कुछ कहती है। किताबों में भगवान मौन
रूप में हैं, दर्शन अदृश्य रूप में हैं।
शब्द गूँगे हैं, उन्हें खोलते ही सब जीवन्त हो जाते हैं।
किताबें हमें अतीत के महापुरुषों से साक्षात्कार
कराती हैं।
जिनसे आप प्रत्यक्ष कभी नहीं मिल सकते।
हर किताब कुछ कहती है।
जैसे दुनिया में अच्छे-बुरे सभी तरह के लोग होते हैं।
ऐसे ही किताबें भी होती हैं।
उन्हें खोलकर स्व-विवेक से चयन कीजिये।
कौन चखने के लिए है, कौन निगलने के लिए है
और कौन पचाने के लिए है, क्योंकि
हर किताब सरस्वती नहीं होती है।
हर किताब कुछ कहती है।

-सुपुत्री श्री राधेश्याम जैन, बगीचा कॉलोनी, आदर्श नगर, सवाईमाधोपुर (राज)

10 जनवरी 2021
जिनवाणी 94
ISSN 2249-2011

बाल-स्तम्भ

तृष्णा का जाल

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 फरवरी, 2021 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

नगर में धूमधाम थी। चाँदी की पालकी में बैठकर नए राजपुरोहित सोमिल बड़े सम्मान एवं गाजे-बाजे के साथ राजसभा में जा रहे थे। बाजों की आवाज सुनकर कपिल दौड़कर माँ के पास आया और बोला-''माँ, माँ! देखो न कैसी सुन्दर यात्रा निकल रही है।'' पुराने पुरोहित काश्यप की पत्नी इस शोभायात्रा को देखकर उदास हो गई और उसकी आँखों से आँसू टप-टप कर गिरने लगे। वह सोच रही थी, 'पति गए, सब कुछ चला गया।'

कपिल ने माता के आँसू देखे और पूछा-''माँ! क्या हुआ? तू रोती क्यों है? क्या तुम्हें कोई दुःख है?''

माँ ने उत्तर दिया-''बेटा! दुःख के सिवा अब शेष रहा ही क्या है? एक दिन तुम्हारे पिता भी राजपुरोहित थे। राजा जितशत्रु उनका बड़ा आदर-सत्कार करते थे। वे भी इसी प्रकार चाँदी की पालकी में बैठकर राजसभा में जाते थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् सब कुछ बदल गया। लगता है, जैसे सब कुछ उन्हीं के साथ चला गया।''

बालक से अपनी माता का दुःख देखा नहीं गया। उसने पूछा-''माँ! क्या मैं अपने पिता के समान नहीं बन सकता? क्या मैं राजपुरोहित के पद पर नियुक्त नहीं हो सकता?''

माता का हृदय अपने पुत्र की इस शुभाकांक्षा से प्रफुल्लित हो उठा। वह बोली-''क्यों नहीं हो सकते? अवश्य हो सकते हो, किन्तु पहले तुम पढ़-लिख लो, तब न! राजपुरोहित को तो वेद, पुराण, ज्योतिष, गणित आदि सभी विषयों का ज्ञान होना चाहिए। मुझे अफसोस है बेटा! तेरे विद्याध्ययन में मैं ही बाधक बनी थी। जब तू सात वर्ष का था, तेरे पिता तो तुझे तभी गुरुकुल में भेजना चाहते थे, परन्तु मैंने ही स्नेहवश भेजने नहीं दिया। बेटा! मैंने ही कहा था, 'आप इसे घर पर ही पढ़ाएँ।' लेकिन तेरे पिता को समय नहीं मिलता था। अतः तू ठीक प्रकार से विद्याध्ययन कर ही नहीं पाया।''

कपिल-''बस! इतनी-सी बात, माँ! तू आँसू मत बहा, मैं जरूर पढ़ूँगा और एक दिन अपने पिता के पद पर अवश्य बैठूँगा।''

बालक कपिल को पढ़ने की धुन लग गई। किन्तु उसकी माता जानती थी कि कौशाम्बी में रहकर कपिल कभी-भी विद्या-प्राप्ति नहीं कर सकेगा, क्योंकि कौशाम्बी के पण्डित ईर्ष्यालु तथा स्वार्थी थे। राजपुरोहित काश्यप का पुत्र यदि पढ़-लिखकर विद्वान् हो गया तो अपने पिता के पद पर आसीन हो जाएगा, इसी भय से वे कपिल को कभी पूरी शिक्षा नहीं देंगे, अतः माता ने अपने बेटे को अपने पति के मित्र इन्द्रदत्त के पास श्रावस्ती नगरी भेज दिया।

उपाध्याय इन्द्रदत्त बड़े विद्वान् और सरल व्यक्ति

थे। श्रावस्ती का बच्चा-बच्चा उन्हें जानता था। कपिल जब उनके पास पहुँचा तो उन्होंने अपने दिवंगत मित्र के पुत्र को आलिङ्गन में भर लिया और कहा-''अरे! तू तो मेरा ही पुत्र है, अन्य नहीं। वत्स! तू मुझे अपने पिता के समान ही समझ तथा कोई चिन्ता मत कर।''

श्रावस्ती नगरी के धनपति शालिभद्र के यहाँ कपिल के भोजन एवं आवास की व्यवस्था हो गई और उसका विद्याध्ययन भी आरम्भ हो गया। धीरे-धीरे कपिल युवक हो गया, किन्तु जीवन के उसी काल में कपिल से एक भूल हो गई। सेठ शालिभद्र की सुन्दर दासी, जो कि कपिल की सेवा किया करती थी, कपिल को उससे प्रेम हो गया। प्रेम अन्धा होता ही है। कपिल भी उस आँधी में ऐसा उड़ा कि वह अब विद्याध्ययन करना भी भूल गया और उपाध्याय के पास गुरुकुल में जाना भी उसने बहुत कम कर दिया।

उपाध्याय ने उसे समझाया, डाँटा-फटकारा, बुरा-भला कहा, अपनी माता को दिए हुए वचनों की याद दिलाई, दिवंगत पिता के गौरव का स्मरण कराया, किन्तु प्रेमान्ध के गले कुछ न उतरा। वह तो पागल होकर प्रेमिका की छाया मात्र बनकर रह गया था।

एक बार नगर में वन-महोत्सव की तैयारियाँ हो रही थीं। युवक-युवतियाँ सज रहे थे। कपिल की प्रेमिका ने उस अवसर पर अपने प्रेमी से कहा-''नगर की सारी सुन्दरियाँ सजधज रही हैं। तुम यदि मेरे लिए मूल्यवान् वस्त्र नहीं ला सकते तो साधारण नए वस्त्र ही लाकर दो। कुछ आभूषण नहीं ला सकते तो इतने पैसे तो लाकर दो कि मैं पुष्पमालाएँ ही खरीद सकूँ। तुम्हें छोड़ मैं और किससे याचना करूँ? अपनी सखी-सहेलियों के बीच में ये पुराने वस्त्र पहनकर कैसे जाऊँ?''

कपिल चिन्ता में पड़ गया। वह तो दूर देश में एक विद्यार्थी के रूप में आया था, उसके पास धन कहाँ था? वह अपनी प्रेमिका की माँगों की पूर्ति कैसे कर सकता था?

प्रेमी को मौन देखकर प्रेमिका ने उकसाया-''ऐसे चुप क्यों बैठे हो? संसार बसाना है तो कुछ पुरुषार्थ तो करना ही पड़ेगा। तुम ब्राह्मण-पुत्र हो। मैं तुम्हें उपाय बताती हूँ। भिक्षा माँगने में तुम्हें कोई संकोच नहीं होना चाहिए। सेठ धनदत्त का नियम है कि नगर का जो कोई भी व्यक्ति प्रात:काल सबसे पहले उन्हें आशीर्वाद देने आता है, उसे वे दो माशा स्वर्ण दान में देते हैं। तुम वह स्वर्ण ले आओ। उसी स्वर्ण से कुछ दिन काम निकल जाएगा।''

कपिल रात में सोचता रहा, 'सबसे पहले धनदत्त को आशीर्वाद देने मैं ही जाऊँगा और स्वर्ण लाकर प्रेमिका को प्रसन्न कर दूँगा।' सहसा उसे चिन्ता भी हुई 'कहीं मुझसे पहले ही कोई अन्य याचक धनदत्त के पास न पहुँच जाए, अन्यथा मेरी आशा पर पानी फिर जाएगा और प्रेमिका रूठ जाएगी।'

कपिल को इसी चिन्ता के कारण तनिक भी नींद नहीं आई। करवटें बदलते-बदलते जब थक गया तो आतुरता का मारा वह मध्यरात्रि में ही घर से निकल पड़ा। उसे भान ही नहीं रहा कि प्रात:काल होने में अभी बहुत विलम्ब है। उस पागल प्रेमी को तो एक ही धुन थी-'कोई मुझसे पहले ही न जा पहुँचे। प्रेमिका रूठ न जाए।'

अन्धेरी रात में एक व्यक्ति को चुपचाप जाता देख, पहरेदारों ने उसे टोका-''कौन हो? इस अन्धेरी रात में कहाँ जा रहे हो? चोरी करने का इरादा है क्या?''

कपिल ने घबराकर कहा-''नहीं भाई! चोरी करने क्यों जाऊँगा? ब्राह्मण का पुत्र हूँ। मैं तो सेठ धनदत्त के घर जा रहा हूँ। उसे आशीर्वाद दूँगा और स्वर्ण प्राप्त करूँगा।''

''हाँ, हाँ! तुम्हारा आशीर्वाद लेने नगर सेठ आधी रात में प्रतीक्षा कर रहे होंगे न? क्या बहाना बनाया है? इसे ही कहते हैं चोरी और सीनाजोरी।'' पहरेदार ने कपिल की पीठ पर दो-चार डण्डे बरसाए और उसे लाकर कैदखाने में बन्द कर दिया।

कपिल सोचने लगा-'क्या-से-क्या हो गया? कहाँ से चले थे, कहाँ जा पहुँचे? उद्देश्य क्या था और प्राप्ति क्या हुई? महापण्डित काश्यप का पुत्र कैद में? साधारण चोर-उचक्कों, शराबी-लम्पटों और खूनी-हत्यारों के बीच कपिल ब्राह्मण? हे भगवन्! तूने यह क्या दिन दिखाया? मेरी बुद्धि को क्या हो गया? प्रेमिका की मुस्कान में, मैं माता के आँसू क्यों भूल गया? हाय, मेरा कैसे अध:पतन हो गया?'

सोचता-सोचता भोला कपिल बड़ा दु:खी हुआ। उसकी मूर्च्छित आत्मा सहसा जाग पड़ी और उसे धिक्कारने लगी,..... धिक्कारती ही चली गई।

राजा प्रसेनजित अपराधियों का न्याय स्वयं ही किया करते थे। प्रात:काल सभी अपराधियों को जब राजा के समक्ष उपस्थित किया गया तो कपिल ब्राह्मण की स्थिति विचित्र थी। लज्जा के मारे उसकी आँखें ऊपर ही न उठ रही थीं। पश्चात्ताप से उसका हृदय जला जा रहा था।

सत्य और असत्य का, न्याय और अन्याय का जो विवेक न कर सके, वह राजा ही क्या? प्रसेनजित की दृष्टि तीव्र थी। उसने एक ही नज़र में भाँप लिया कि कपिल अपराधी नहीं हो सकता। यह बेचारा किसी भ्रमवश यूँ ही फँस गया है। संस्कारवान युवक दिखाई देता है। उन्होंने पूछा-''कौन हो तुम? किसलिए रात में निकले थे?''

''महाराज! ब्राह्मण हूँ। भिक्षा हेतु निकला था। पहरेदारों ने चोर समझ मुझे पकड़ लिया। मैं निरपराध हूँ।''

''सच-सच कहो। सत्य कहोगे तो क्षमा मिलेगी। झूठ कहोगे तो कठोर दण्ड।''

''महाराज! मैं विद्याध्ययन के लिए आया था, परन्तु एक दास-कन्या के प्रेम में फँस गया। यही मेरी दुर्गति का कारण है। मैं कौशाम्बी के महापण्डित एवं राजपुरोहित काश्यप का पुत्र हूँ, असत्य नहीं बोलता।''

राजा पहले से ही उस युवक के चेहरे से फूट रही संस्कारशीलता को देख रहा था। अब उसे विश्वास हो गया। कोमल स्वर में बोला-''तुम्हें क्या चाहिए, ब्राह्मण पुत्र! जो चाहे, वह माँग लो। तुम्हारी करुण-कथा सुनकर दया आ रही है। मैं वचन देता हूँ, जो माँगोगे, वह मिलेगा।''

विधि का विधान भी कितना विचित्र है। कहाँ तो चोरी के अपराध में दण्डित होने की स्थिति थी और कहाँ जब मनचाहा पुरस्कार मिल रहा है। कपिल ने सोचा-''कितना अच्छा अवसर है। एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ माँग लूँ? नहीं, थोड़ी होगी, एक लाख माँगूँ? लेकिन राजा के पास क्या कमी है, एक करोड़ ही क्यों न माँगू लूँ? या उसका पूरा राज्य ही क्यों न माँग लूँ? जीवन भर सुख से रहूँगा।''

कपिल की विचारधारा जो चली, सो चलती रही रही। सोचता ही रहा..... सोचता ही चला गया।

राजा ने अधीर होकर कहा-''कब तक सोचोगे? जो चाहे, वह माँग लो। मैं वचनबद्ध हूँ।''

कपिल के मुख पर धीरे-धीरे एक अद्भुत परिवर्तन दिखाई देने लगा। एक दिव्य प्रकाश उसके नेत्रों से फूटने लगा। अब वह मन-ही-मन विचार कर रहा था-क्या माँगूँ?

उसके भटकते हुए मन ने एक नया मोड़ लिया। वह अनुभव करने लगा-'तृष्णा (लालच) की कोई सीमा नहीं है। यदि समूचे संसार का धन-वैभव भी मिल जाए तो भी मेरा मन सन्तुष्ट नहीं होगा। मैं कौशाम्बी के राजपुरोहित का पुत्र हूँ। मुझे ज्ञानार्जन एवं ज्ञान के प्रसार का कार्य करना चाहिए।' उसने कहा-''राजन्! अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं अब संयम एवं सन्तोष के मार्ग की ओर बढ़ूँगा। अब मेरी कोई इच्छा शेष नहीं रही। मैं अब अध्ययन में अपना चित्त लगाऊँगा तथा सारे विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैलाऊँगा।''

-'रोचक बोध कथाएँ' से साभार

प्र. 1. पुराने पुरोहित काश्यप की पत्नी शोभायात्रा को देखकर उदास क्यों हो गई?

प्र. 2. कपिल की माता को ऐसा क्यों लगता था कि वह

कौशाम्बी में रहकर शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकेगा?

प्र. 3. कपिल के भटकते मन ने अन्त में क्या मोड़ लिया?

प्र. 4. कपिल के पहरेदारों ने किस कारण जेल में बन्द कर दिया?

प्र. 5. प्रस्तुत कहानी में निहित सन्देश को चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए।

प्र. 6. दिए गए शब्दों से एक-एक वाक्य बनाइये- अधीर, ज्ञानार्जन, विधान, ईर्ष्यालु।

बाल-स्तम्भ [सितम्बर-2020] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर 2020 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'संशय से क्षमा तक' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	सचिन जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अंशुल कचोलिया, बेंगलूरू (कर्नाटक)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	नमन जैन, जरखोदा-बून्दी (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	साक्षी जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	22
	काजल जैन, जयपुर (राजस्थान)	22
	प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	मुस्कान जैन, आगरा (उत्तरप्रदेश)	22
	मुदित जैन, जयपुर (राजस्थान)	22

बाल-जिनवाणी [अगस्त-2020] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2020 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	सुदर्शन जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	प्रियंका चौपड़ा, अजमेर (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	नैतिक भण्डारी, बिलाड़ा-जोधपुर (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	भावित सुराणा, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)	36
	दीपशिखा जैन, बिलाड़ा-जोधपुर (राजस्थान)	36
	नमिता जैन, मसूदा-अजमेर (राजस्थान)	36

छोटी-छोटी बातें

दीजिए – दान
लीजिए – यश
कीजिए – परोपकार
खाइये – गम
पीजिये – प्रेम रस
पालिए – शील
टालिए – कुसङ्ग
छोड़िए – पाप
आदरजे – धर्म
ध्यायिये – अरिहन्त देव
सेविये – निर्ग्रन्थ गुरु
रमिये – स्वाध्याय-ध्यान

-'संस्कारम्' पुस्तक से साभार

बाल-स्तम्भ [अक्टूबर-2020] का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर 2020 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'सुख की लक्ष्मी' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	कु. ईशा विशाल जैन, भुसावल (महाराष्ट्र)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	कुमारी निकिता जैन, पीपाड़शहर (राजस्थान)	22
	वंश जैन, जयपुर (राजस्थान)	22
	कुमारी सिद्धि जारोली, बड़ी सादड़ी (राजस्थान)	22
	कुमारी आरोही एस. छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	22
	नमन श्रेणिक छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	22

बाल-जिनवाणी अक्टूबर, 2020 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 फरवरी, 2021)

प्र. 1. 'उपकारी को नहीं भूलें' कहानी में निहित सन्देश लिखिए।
प्र. 2. क्रोध हमारे लिए किस प्रकार अहितकर है?
प्र. 3. यतना किसे कहते हैं? यतनापूर्वक कार्य करने से क्या लाभ है?
प्र. 4. Who is a true ascetic?
प्र. 5. 'कोरोना महामारी का हमारे जीवन पर प्रभाव' विषय पर आठ-दस पंक्तियों में एक अनुच्छेद लिखिए।
प्र. 6. हम अपने जन्मदिन को अहिंसक रूप में कैसे मना सकते हैं?
प्र. 7. 'त्रिशला नन्दन वीर की' कविता में भगवान महावीर की किन विशेषताओं को दर्शाया गया है?
प्र. 8. आगार किसे कहते हैं? वृत्तिकान्तार आगार को समझाइये।
प्र. 9. Why Samyak Darsana, Samyak Jnana and Samyak Caritra are called jewels of Jainism?
प्र. 10. तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए-आवेश, ज़हर, ढाढ़स, कृतज्ञ।

बाल-जिनवाणी [सितम्बर-2020] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2020 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	कविश जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	निकिता जैन, मसूदा (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	36
	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	36
	कुशल सुशील जैन, भुसावल (महाराष्ट्र)	35

संस्कार केन्द्र एवं पाठशाला अध्यापकों से निवेदन

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि वे जिनवाणी पत्रिका में प्रकाशित 'बाल-जिनवाणी' का वाचन कक्षा में करावें एवं उसमें पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भेजने हेतु व्यवस्था करावें। आचार्य हस्ती दीक्षा शती वर्ष में बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : **022 2628 7187**

ई-मेल : **oswalmatrimony@gmail.com**

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्जवल भविष्य की ओर एक कदम......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. **We Have Launched Membership Plans For Donors.**

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)

SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address – AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund **IFSC Code** – UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 **PAN No.** - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची –

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)

श्रीमान् मोफतराज सा मुणोत, मुम्बई।
श्रीमान् राजीव सा नीता जी डागा, ह्यूस्टन।
युवारत्न श्री हरीश सा कवाड़, चैन्नई।

SILVER MEMBER (RS.50000)

श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमती गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़)
श्रीमान् सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटूर।
कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद।
श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, अहमदाबाद।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, मुम्बई।
श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर

PLATINUM MEMBER (RS.100000)

श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
श्रीमान् दलीचन्द सा सुरेश सा कवाड़, पून्नामल्लई।
श्रीमान् राजेश सा विमल सा पवन सा बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् प्रेम सा कवाड़, चैन्नई।
श्रीमान् अम्बालाल सा बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
श्रीमान् सम्पतराज सा राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई।
कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद।
प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)
श्रीमान् विजय जतिन जी नाहर, इन्दौर
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - **M.Harish Kavad** - No. 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-56**

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रेल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अतः इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नांकित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

(1) श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता, अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(2) श्रीमती मंजूजी मण्डारी, बेंगलोर, अध्यक्ष-अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
(3) श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई, पूर्व संघाध्यक्ष एवं पूर्व मण्डल अध्यक्ष
(4) श्री विनयचन्दजी डागा, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(5) डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(6) श्री अशोक कुमारजी सेठ, जयपुर, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(7) श्री राजेन्द्र कुमारजी रितुलजी पटवा, जयपुर, कोषाध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(8) श्री हिमांशुजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, जिला-टोंक
(9) श्री गौत्तमचन्दजी जैन, पूर्व जिला रसद अधिकारी (अलीगढ़-रामपुरा वाले), जयपुर
(10) न्यायमूर्ति श्री जसराजजी श्री आनन्दजी चौपड़ा, जयपुर
(11) श्री सुशीलजी सोलंकी, मुम्बई
(12) श्री रतनराजजी नेमीचन्दजी मण्डारी, मुम्बई (पीपाड़ सिटी वाले)
(13) नकतारा रतनलाल सी. बाफणा एण्ड सन्स, जलगाँव
(14) श्री राजरूपमलजी, संजयजी, अंजयजी, दिवेशजी मेहता, शिवाकाशी
(15) डॉ. एस. एल. नागौरीजी, बून्दी
(16) श्री अरुणजी मेहता, सुनीताजी मेहता छत्तरछाया फाउण्डेशन, जोधपुर
(17) श्री उम्मेदराजजी, एवन्तकुमारजी, राजेशकुमारजी डूंगरवाल (धाँवला वाले), पाँच्याबाला-जयपुर
(18) श्री दुलीचन्दजी-श्रीमती कमलाजी बाघमार, चेन्नई
(19) श्री चंचलमलजी, अशोक कुमारजी चोरड़िया, जोधपुर
(20) श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर
(21) श्री चंचलराजजी मेहता, अहमदाबाद
(22) श्री जिनेश कुमारजी, रोहितराजजी जैन (ढहरा वाले), हिण्डौनसिटी-जयपुर
(23) श्री सागरमलजी, हुकमचन्दजी नागसेठिया, शिरपुर

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु अग्रिम रूप से लाभार्थी

(24) श्री भागचन्दजी हेमेशजी सेठ, जयपुर
(25) श्री स्वरूपचन्दजी बाफना, सूरत
(26) श्री सुमतिचन्दजी कोठारी, जबपुर
(27) श्री पवनलालजी मोतीलालजी सेठिया, होलनांथा
(28) श्रीमती अलकाजी, विजयजी नाहर, इन्दौर
(29) श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, जयपुर
(30) श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर
(31) श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-रामपुरा, सवाईमाधोपुर, कोटा एवं जयपुर

JVS
PURITY

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :
NUTRITION FOODS
BREAKFAST CEREALS
FORTIFIED RICE KERNELS
WHOLE & BLENDED SPICES
VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

CERTIFIED ISO 22000 CERTIFIED

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

Food Safety System Certification 22000

KALPA-TARU®

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन